एक फरवरी से तापमान बढ़ने के आसार

दो दिनों तक सुबह में रहेगा मध्यम कुहासा

प्रतिनिधि, समस्तीपुर

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय,पूसा के ग्रामीण कृषि मौसम सेवा केन्द्र व भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से 01से 05 फरवरी तक के लिये मौसम पूर्वानुमान जारी किया गया है. पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्रायः साफ एवं मौसम के शुष्क रहने की संभावना है. अगले दो दिनों तक सुबह के समय मध्यम कुहासा छा सकता है.पूर्वानुमानित अवधि में तापमान में वृद्धि हो सकती है. अधिकतम तापमान 25 से 26 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है. न्यूनतम तापमान 10 से 12 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है. पूर्वानुमानित अवधि में धीमी गति से पछिया हवा चलने की संभावना है. सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 70 प्रतिशत रहने की संभावना है. आज का अधिकतम तापमान 25.0 डिग्री सेल्सियस रहा,जो सामान्य से 2.5 डिग्री सेल्सियस अधिक रहा.वहीं न्यूनतम तापमान 7.5 डिग्री सेल्सियस रहा,जो सामान्य से 2.8 डिग्री सेल्सियस कम रहा.

प्रभात खबर
Saturday, February 1, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/679d1e4f17636371e6faleb0

सिटी बाइट्स

अस्पताल में इलाजरत घायल कर्मी.

केंद्रीय कृषि विवि से सेवानिवृत्त कर्मी को हाइवा ने कुचला

पूसा. वैनी थाना क्षेत्र स्थित खुदीराम बोस पूसा रेलवे स्टेशन के गुमटी संख्या 66 पर शुक्रवार को बाइक सवार को हाइवा ट्रक ने कुचल दिया. जख्मी बाइक सवार को आननफानन में निजी नर्सिंग होम में भर्ती कराया गया. जहां से बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल समस्तीपुर रेफर कर दिया गया. जख्मी की पहचान ताजपुर थाना क्षेत्र के सोंगर निवासी स्व. याशिम अंसारी के पुत्र रफीक आलम अंसारी के रूप में की गई है. वह डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा से बीते वर्ष सेवानिवृति हुए हैं. वैनी थानाध्यक्ष आनंद शंकर गौरव ने बताया कि दुर्घटना के बाद हाइवा ट्रक को जब्त कर लिया गया है. चालक को भी पुलिस हिरासत में रखा गया है.

Saturday, February 1, 2025
Samstipur
प्रभात खबर
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/679d1e4f17636371e6falea

आज का मौसम

डा . राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा अगले 5 फरवरी तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि इस अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में अगले दो दिन तक सुबह में मध्यम कुहासा छाए रहने की संभावना है। इस बीच तापमान में बढ़ोतरी होगी। इस अवधि में अधिकतम तापमान 25 से 26 डिग्री सेल्सियस व न्यूनतम 10 से 12 डिग्री के बीच रहने का अनुमान है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
01 फरवरी	24.0	09
02 फरवरी	24.0	10.0
दरभंगा		
01 फरवरी	24.0	10.0
02 फरवरी	24.5	10.0
पटना		
01 फरवरी	25	12
01 फरवरी	25	12

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 01-02-2025

दो दिनों तक सुबह में मध्यम कुहासा, तापमान में होगी वृद्धि

संस, जागरण • पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय मौसम पूर्वानुमान के अनुसार अगले पांच फरवरी तक उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्रायः साफ एवं मौसम शुष्क रहेगा। अगले दो दिनों तक सुबह के समय मध्यम कुहासा छाया रहेगा। इस अवधि में तापमान में वृद्धि होगी। अधिकतम तापमान 25 से 26 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। न्यूनतम तापमान 10 से 12 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा। शुक्रवार का अधिकतम तापमान 25.0 एवं न्यूनतम तापमान 7.5 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया।

पांच फरवरी तक उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ रहेगा इस दौरान शुष्क रहेगा मौसम, धीमी गति से चलेगी पछिया हवा

मौसम विभाग ने बताया कि अभी धीमी गति से पछिया हवा चलने की संभावना है।

पिछात गेहूं का भी करें उपचार

विज्ञानियों ने पिछात बोयी गेहूं की फसल में जिंक की कमी की लक्षण पर 2.5 किलोग्राम जिंक सल्फेट, 1.25 किलोग्राम बुझा हुआ चूना एवं 12.5 किलोग्राम यूरिया को 500 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से 15 दिन के अंतराल पर दो बार छिड़काव करने की सलाह दी है।

नहीं करें आम व लीची के बगान में जुताई : इस समय आम एवं लीची में मंजर आने की संभावना अधिक रहती है। इस कारण किसानों को आम एवं लीची के बागानों में किसी भी प्रकार की जुताई नहीं करने की अपील विज्ञानियों ने की है। इन बगानों में जहां दीमक की समस्या हो, क्लोरपाईरिफॉस 20 ई०सी०/2.5 मी०ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर मुख्य तने एवं उसके आस-पास की मिट्टी में छिड़काव करने से दीमक की उग्रता में कमी आती है। मधुआ एवं दहिया कीटों का प्रकोप कम करने के लिए वृक्षों में इमिडाक्लोप्रीड 17.8 एसएल अथवा साइपरमेथ्रीन 10 ईसी/1.0 मिली/ली पानी की दर से घोल बनाकर समान रूप से छिड़काव करने को कहा है।

आलू की अगात प्रभेदों की करें खोदाई : विज्ञानियों ने आलू की अगात प्रभेद की तैयार फसलों की खुदाई करने और बीज वाली फसल की ऊपरी लत्ती की कटाई करने को कहा है। खुदाई के 15 दिनों पूर्व सिंचाई बंद करने एवं पिछात आलू की फसल में कटवर्म या कजरा पिल्लू की निगरानी करने की ताकीद की है। उपचार के लिए क्लोरपायरीफास 20 ईसी दवा का 2.5 से 3 मिली प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करने को कहा है।

Dainik Jagran 01-02-2025

पूसा में हाईवा ने बुजुर्ग को कुचला, पटना किया रेफर

हिन्दुस्तान-11/04/25-P-3

रफ्तार का कहर

- पुलिस ने वाहन को किया जब्त, चालक हिरासत में
- पूसा रोड पर गुमटी के निकट की घटना

पूसा, निज संवाददाता। समस्तीपुर-मुजफ्फरपुर रेलखंड के पूसा रोड (वैनी) गुमती के निकट शुक्रवार को हाईवा ने बाइक सवार बुजुर्ग को कुचल दिया। जिससे वह गंभीर रूप से जख्मी हो गया। आनन-फानन में उसे स्थानीय स्तर पर इलाज के बाद समस्तीपुर रेफर कर दिया गया।

पुलिस के अनुसार जख्मी व्यक्ति ताजपुर थाने के सोंगर गांव निवासी स्वर्गीय याशिम अंसारी का पुत्र रफीक आलम अंसारी बताया गया है। मिली जानकारी के अनुसार जख्मी व्यक्ति घर से पूसा की ओर आ रहे थे। इस दौरान अनियंत्रित हाईवा की चपेट में आ गये। वे डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि से सेवानिवृत कर्मी हैं। हालांकि इसकी आधिकारिक पुष्टि नहीं हो सकी है।

थानाध्यक्ष आनंद शंकर गौरव ने बताया कि हाईवा व उसके चालक को अपने कब्जे में ले लिया है। उन्होंने बताया कि गहन चिकित्सा के लिए पटना रेफर कर दिया गया है। उनके पैर में गंभीर जख्म बताया गया है।

पछुआ चलेगी, तापमान में सुधार की संभावना

पूसा। उत्तर बिहार के जिलों में अगले चार दिनों तक आसमान प्रायः साफ एवं मौसम शुष्क रहेगा। इस दौरान अगले दो दिनों तक सुबह में मध्यम कुहासा रह सकता है। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के मौसम विभाग ने शुक्रवार को 5 फरवरी तक का मौसम पूर्वानुमान जारी किया है। जिसके अनुसार इस अवधि में धीमी गति से पछुआ हवा चल सकती है। इस दौरान सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 एवं दोपहर में 55 से 70 प्रतिशत रह सकता है। पूर्वानुमान की अवधि में अधिकतम तापमान 25 से 26 डिग्री एवं न्यूनतम 10 से 12 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है।

कुहासे में लिपटी होगी सुबह, ठंड से मिलेगी मामूली राहत

समस्तीपुर । जिले के डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा स्थित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से मौसम परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र द्वारा जारी 01-05 फरवरी तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्रायः साफ एवं मौसम के शुष्क रहने की संभावना है। अगले दो दिनों तक सुबह के समय मध्यम कुहासा छा सकता है। पूर्वानुमानित की अवधि में तापमान में वृद्धि हो सकती है। अधिकतम तापमान 25 से 26 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। न्यूनतम तापमान 10 से 12 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकती है। ' पूर्वानुमानित अवधि में धीमी गति से पछिया हवा चलने की संभावना है। सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 70 प्रतिशत रहने की संभावना है।

Rashtriya Sahara 01-02-2025

कैंपस अलर्ट

जलवायु परिवर्तन देश व दुनिया की बहुत बड़ी समस्या

निर्माणाधीन पंडाल.

पूसा. डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में 15 से 17 फरवरी तक किसान मेला का आयोजन किया जायेगा. इस बार किसान मेला का मुख्य विषय जलवायु अनुकूल कृषि मुख्य आकर्षण का केंद्र रहेगा. किसानों का महामेला किसान मेला की तैयारियों को लेकर निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ मयंक राय और शस्य विज्ञान विभाग के प्राध्यापक सह जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केंद्र के निदेशक डॉ रत्नेश कुमार झा के नेतृत्व में पच्चीस से ज्यादा कमेटी बनी है. कुलपति डॉ पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने कहा कि जलवायु परिवर्तन देश और दुनिया की बहुत बड़ी समस्या है. इससे निपटने के लिए किसानों और वैज्ञानिकों को एकजुट होना होगा. उन्होंने बताया कि किसान मेला में विभिन्न राज्यों के डेढ़ सौ से ज्यादा स्टाल और प्रदर्शों के आने की संभावना है. निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ मयंक राय ने कहा कि विश्वविद्यालय में किसान मेला को सफल बनाने को लेकर दिन-रात युद्ध स्तर पर कार्य चल रहा है. निदेशक डॉ झा ने कहा कि मेला में स्टालों की बुकिंग शुरू हो गई है.

प्रभात खबर
Sunday, February 2, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/679e6b3eb3ab71a4ecf654c8

कृषि विवि में 15 से 17 तक किसान मेला

पूसा | डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में 15 फरवरी से 17 फरवरी तक किसान मेला का आयोजन किया जाएगा। इस बार किसान मेला का मुख्य विषय जलवायु अनुकूल कृषि पर रहेगा। विवि परिसर स्थित किसान मेला के ग्राउंड में टेंट, पंडाल, लाईट आदि लगाने के साथ-साथ तमाम तरह की तैयारियों को जोर शोर से किया जा रहा हैं। किसान मेला की तैयारियों एवं इसके सफल संचालन को लेकर विवि प्रशासन ने विवि के निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ. मयंक राय और जलवायु अनुकूल कृषि के प्राध्यापक डॉ. रत्नेश झा के नेतृत्व में पच्चीस से ज्यादा कमिटी बनाकर सभी को अलग अलग कार्य क्षेत्र सौंप दिया हैं।

भास्कर 2/1/25
पेज 19

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा दो फरवरी तक के लिए ज़ारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया कि इस अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में मौसम शुष्क व आसमान साफ रहने का अनुमान है। सुबह के समय धुंध छा सकता है। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि पूर्वानुमान अवधि में अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान में दो से तीन डिग्री वृद्धि होगी।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
	समस्तीपुर	
02 फरवरी	25.2	10.0
03 फरवरी	25.2	10.5
	दरभंगा	
02 फरवरी	25.2	11.0
03 फरवरी	26.0	11.0
	पटना	
02 फरवरी	27	12
03 फरवरी	27	12

डिग्री सेल्सियस में

किसान मेला की तैयारियां शुरू

जलवायु अनुकूल कृषि पर आधारित होगा किसान मेला 2025

पूसा (एसएनबी)। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय .षि विश्वविद्यालय पूसा परिसर में आगामी 15 फरवरी से 17 फरवरी आयोजित तक आयोजित तीन दिवसीय किसान मेला 2025 जलवायू अनुकूल कृषि थीम पर आधारित होगा। उक्त जानकारी देते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ पी एस पांडेय ने बताया कि जलवायु परिवर्तन देश और दुनिया की बड़ी समस्या है। जिससे निपटने के लिए किसानों और वैज्ञानिकों को एकजुट होने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि किसान मेला की तैयारियों को लेकर निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ मयंक राय एवं जलवायु अनुकूल .षि के प्राध्यापक डॉ रत्नेश झा के नेतृत्व में पच्चीस से ज्यादा कमिटियां बनाई गई है और सभी को अलग अलग जिम्मेदारियां सौपी गई है। निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ मयंक राय ने कहा कि विश्वविद्यालय में किसान मेला को सफल बनाने को लेकर दिन रात युद्ध स्तर पर कार्य किया जा रहा है। उम्मीद है कि इस वर्ष पचास हजार से अधिक लोग इसमें भाग लेंगे। किसान मेला में विभिन्न राज्यों के डेढ़ सौ से ज्यादा स्टाल आने की संभावना है। किसान मेला में भारतीय .षि अनुसंधान परिषद के विभिन्न संस्थानों के भी स्टाल लगाए जायेंगे। इस किसान मेला में किसानों के लिये हर प्रकार के बीज, पेड़ पौधे, .षि यंत्र आदि भी उपलब्ध होगा । डॉ रत्नेश झा ने कहा कि किसान मेला में स्टालों की बुकिंग शुरू हो गई है और यदि कोई संस्थान अपना स्टाल लगाना चाहता है तो विश्वविद्यालय के वेबसाइट के माध्यम से आवेदन दे सकते है। किसान मेला में दूर-दराज से आने वाले किसानों के लिए सशुल्क भोजन और आवास की भी सुविधा विश्वविद्यालय की ओर से उपलब्ध है।

मेला की तैयारी में जुटे मजदूर।

Hindustan 03-02-2025

पूसा, निज संवाददाता। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के सेवानिवृत डीन डॉ.अशोक कुमार सिंह ने कहा कि यह बजट बिहार समेत देश भर के किसानों के लिए संजीवनी का कार्य करेगा। बजट के तहत कृषि उत्पादकता बढ़ाने, विविधीकरण, भंडारण एवं सिंचाई क्षमता बढ़ाने के लिए प्रधानमंत्री घन्य धान्य कृषि योजना विकसित करने का लक्ष्य रखा है। वहीं बजट प्रतिक्रिया देते हुए युवाओं ने निराशा वयक्त की है। वहीं टैक्स का स्लैब बढ़ने से नौकरीपेशा वालों में उत्साह देखा गया।

Hindstan 02-02-2025

किसान मेला की तैयारियां शुरू

जलवायु अनुकूल कृषि पर आधारित होगा किसान मेला 2025

पूसा (एसएनबी)। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय .षि विश्वविद्यालय पूसा परिसर में आगामी 15 फरवरी से 17 फरवरी आयोजित तक आयोजित तीन दिवसीय किसान मेला 2025 जलवायू अनुकूल कृषि थीम पर आधारित होगा। उक्त जानकारी देते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ पी एस पांडेय ने बताया कि जलवायु परिवर्तन देश और दुनिया की बड़ी समस्या है। जिससे निपटने के लिए किसानों और वैज्ञानिकों को एकजुट होने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि किसान मेला की तैयारियों को लेकर निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ मयंक राय एवं जलवायु अनुकूल .षि के प्राध्यापक डॉ रत्नेश झा के नेतृत्व में पच्चीस से ज्यादा कमिटियां बनाई गई है और सभी को अलग अलग जिम्मेदारियां सौपी गई है। निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ मयंक राय ने कहा कि विश्वविद्यालय में किसान मेला को सफल बनाने को लेकर दिन रात युद्ध स्तर पर कार्य किया जा रहा है। उम्मीद है कि इस वर्ष पचास हजार से अधिक लोग इसमें भाग लेंगे। किसान मेला में विभिन्न राज्यों के डेढ़ सौ से ज्यादा स्टाल आने की संभावना है। किसान मेला में भारतीय .षि अनुसंधान परिषद के विभिन्न संस्थानों के भी स्टाल लगाए जायेंगे। इस किसान मेला में किसानों के लिये हर प्रकार के बीज, पेड़ पौधे, .षि यंत्र आदि भी उपलब्ध होगा । डॉ रत्नेश झा ने कहा कि किसान मेला में स्टालों की बुकिंग शुरू हो गई है और यदि कोई संस्थान अपना स्टाल लगाना चाहता है तो विश्वविद्यालय के वेबसाइट के माध्यम से आवेदन दे सकते है। किसान मेला में दूर-दराज से आने वाले किसानों के लिए सशुल्क भोजन और आवास की भी सुविधा विश्वविद्यालय की ओर से उपलब्ध है।

मेला की तैयारी में जुटे मजदूर।

समेकित कृषि प्रणाली से सालों भर आमदनी संभव : डॉ सतपथी

मशरूम इकाई का भ्रमण करते प्रतिभागी.

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित संचार केंद्र के पंचतंत्र सभागार में समेकित कृषि प्रणाली एवं श्री अन्न प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन विषय प्रशिक्षण सम्पन्न हुआ. अध्यक्षता करते हुए प्रसार शिक्षा के वैज्ञानिक सह प्रशिक्षण समन्वयक डॉ विनिता सतपथी ने कहा कि समेकित कृषि प्रणाली खेती की एक ऐसी विधि है जिसमें किसान अपने खेत में उपलब्ध संसाधनों का सही इस्तेमाल करते हैं. इस प्रणाली में किसान खेती के साथ-साथ पशुपालन, मछलीपालन और मधुमक्खी पालन भी करते हैं. इससे किसानों को साल भर आमदनी होती रहती है. झारखंड के पाकुड़ के 30 किसानों के लिए प्रशिक्षण सह एक्सपोजर विजिट का आयोजन किया गया. नेतृत्व निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ मयंक राय ने किया. वैज्ञानिक डा सतपथी ने प्रशिक्षण के उद्देश्य पर विस्तार से प्रकाश डाला. कहा कि कृषि मशीनरी के व्यावहारिक अनुप्रयोग, पीयर टू पीयर लर्निंग, किसानों की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप और हमारे विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों के माध्यम सभी कार्यक्रमों को देखकर सीख रहे हैं. किसानों को एकीकृत कृषि प्रणालियों, बाजरा उत्पादन, प्रसंस्करण, कटाई के बाद प्रबंधन, रोग प्रबंधन, जलवायु लचीला कृषि पद्धतियों, किसान उत्पादक संगठनों, बागवानी के रास्ते और मछली तालाब प्रबंधन के विभिन्न कार्यशील मॉडलों के बारे में सिखाया गया. प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक डॉ सतपथी ने केवीके बिरौली, टीसीए, ढोली, पूसा की प्रसंस्करण इकाइयों, मशरूम यूनिट, पोषण सहायता इकाई, जैव विविधता पार्क, विभिन्न बागों आदि के लिए एक्सपोजर यात्रा की सावधानीपूर्वक योजना बनाई गई थी. सुरेश, सूरज, शुभम, अमित, रितेश, मणि, भोल, धर्मेश आदि का सकारात्मक सहयोग रहा है.

प्रभात खबर
Monday, February 3, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/679fc12f04b306a242d7e830

नवीनतम तकनीक व बीजों के उन्नत प्रभेद उपलब्ध कराये जा रहे हैं

किसानों के लिए उपयोगी साबित हो रहा कृषि ज्ञान वाहन: अनुराधा

कृषि ज्ञान वाहन से तकनीक प्राप्त करते किसान .

प्रतिनिधि, पूसा

डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित प्रसार शिक्षा निदेशालय के तत्वावधान में कृषि ज्ञान वाहन किसानों के बीच आकर्षण का केन्द्र रहा है. कृषि ज्ञान वाहन बिहार सरकार की चतुर्थ कृषि रोड मैप अन्तर्गत किसानों को खेती के नवीनतम तकनीक से रु-ब-रु कराने के लिए राज्य के तमाम जिलों में ऑडियो वीडियो के माध्यम से नवीनतम तकनीक एवं बीजों के उन्नत प्रभेद उपलब्ध कराये जा रहे हैं. इसी कड़ी में कृषि विज्ञान केन्द्र शिवहर से केंद्र के वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान डा अनुराधा कुमारी रंजन एवं बीडीओ मो. राहिल ने वाहन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया. कृषि ज्ञान वाहन का परिचालन पिपराही, पूरनहिया, शिवहर सदर, डुमरी कटसारी, तरियानी के विभिन्न पंचायत में किसानों को जागरूक किया गया. इस अवसर पर वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान ने बताया कि कृषि से संबंधित विभिन्न तकनीकी फिल्म को किसानों के द्वार पर दिखाया गया. खेती की नवीनतम जानकारी से कृषक जागरूक किया गया. इस अवसर पर केंद्र में तीन दिवसीय अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना से प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे शिवहर जिले के 50 कृषक को कृषि ज्ञान वाहन के द्वारा चलाये कृषि से संबंधित तकनीकी फिल्म द्वारा नवीनतम जानकारी प्राप्त की. तरियानी प्रखंड के राजा डी गांव के किसानों के बीच भी कृषि ज्ञान वाहन के माध्यम से तकनीकी प्रसार सह प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इस कार्यक्रम में लगभग 150 कृषकों ने पशुपालन व आधुनिक कृषि के बारे में तकनीकी ज्ञान प्राप्त किया. किसानों को कृषि और पशुपालन से संबंधित समस्याओं का निदान कैसे होगा इसे लाइव दिखाया गया. इस वाहन के भ्रमण का मुख्य उद्देश्य किसान-वैज्ञानिक वार्ता से फसल की बुवाई व पशु स्वास्थ्य निदान को समक्ष करने के साथ ही किसानों के द्वार पर कृषि सूचना एवं प्रौद्योगिकी प्रदान करना है. इस वाहन से किसान पाठशाला किसान चौपाल, न्यूट्रिशन स्मार्ट विलेज (एनएसवी), पोषण वाटिका अनुसूचित जाति उपयोजना (एससीएसपी) जैसे विभिन्न कार्यक्रम करा कर किसानों को लाभान्वित किया.

प्रभात खबर
Monday, February 3, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/679fc12f04b306a242d7e82a

भास्कर 3/2/25 पेज 13

मंडे पॉजिटिव विदेश से आने वाले वैज्ञानिक, शोधकर्ता, शिक्षक व छात्रों को मिलेगी सुविधा

कृषि विश्वविद्यालय पूसा में बन रहा अंतरराष्ट्रीय स्तर का अतिथि गृह, इस साल हो जाएगा उद्घाटन

भास्कर न्यूज|पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में अंतरराष्ट्रीय स्तर के अतिथि गृह का निर्माण कार्य जोरों पर है। संभावना व्यक्त की जा रही है कि इस साल के अंत तक इस अतिथि गृह का उद्घाटन हो जाएगा। विवि में अंतरराष्ट्रीय स्तर के इस अतिथि गृह के बन जाने से खासकर विदेश से आने वाले कृषि वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओ, शिक्षकों और छात्रों को यहां उनके अनुरूप सुविधा मिलेगी। संभावना है कि विवि में अगले सत्र से विदेशी छात्र-छात्राओं का नामांकन होगा। बताया जाता है कि भारत की प्रतिष्ठा दूसरे देशों में अच्छी हो तथा विवि में अंतरराष्ट्रीय स्तर के कृषि वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं एवं छात्रों को विशेष सुविधा मिले। इसी बात को ध्यान में रखकर यह

अंतरराष्ट्रीय अतिथि गृह बनाया बनाया जा रहा है। अंतरराष्ट्रीय स्तर का यह अतिथि गृह विदेश से आने वाले लोगों को अत्याधुनिक सुविधाएं प्रदान करेगा। इस अतिथि गृह में करीब 52 से ज्यादा बड़े बड़े वातानुकूलित कमरे, कांफ्रेंस हॉल आदि बनाए गए हैं। यहां एक साथ सैकंड़ों गाड़ियों की पार्किंग की जा सकती है। अतिथि गृह का पूरा परिसर सीसीटीवी और वाईफाई से लैस होगा। अच्छा वातावरण बनाएं रखने के लिए यहां तरह तरह के सैकड़ों पेड़ पौधे भी लगाए जाएंगे। इस अतिथि गृह में कर्मचारी चौबीसों घंटे अपनी ड्यूटी में तैनात रहेंगे।

विश्वविद्यालय भविष्य में अच्छी रैंकिंग भी हासिल कर पाएगा

विवि ने हाल ही में कृषि वैज्ञानिकों के विदेश जाने की प्रक्रिया भी शुरू की है। पिछले दो वर्षों में विवि के 40 से अधिक कृषि सह शोध वैज्ञानिक दुनिया के 12 देशों में पहुंचकर वहां के कृषि अनुसंधान कार्य को देखा व समझा है। संभावना है कि अलग-अलग देशों के कृषि वैज्ञानिक, शोध करने वाले प्रोफेसर व छात्र अब पूसा विश्वविद्यालय पहुंचकर इसी अतिथि गृह में रुकेंगे तथा यहां के वैज्ञानिकों के साथ शोध कार्यों को कर विश्वविद्यालय के शोध शिक्षा को एक नई गति देंगे। विभिन्न देशों के कृषि वैज्ञानिक व शोधकर्ताओं के पूसा आने से विवि की प्रतिष्ठा बढ़ेगी। वहीं विवि भविष्य में अच्छी रैंकिंग को भी हासिल कर पाएगा। विवि के कृषि वैज्ञानिक व शोधकर्ता अभी तक अमेरिका, इंग्लैंड, इथोपिया, मेक्सिको, श्रीलंका, कनाडा सहित दुनिया कई देशों में जाकर वहां चल रहे कृषि शोध कार्यों को देखने के साथ तकनीक को समझने में सफलता हासिल की है।

कृषि विवि में तीन दिवसीय किसान मेले की तैयारी शुरू

पूसा,निज संवाददाता। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि, पूसा में 15 से 17 फरवरी तक प्रस्तावित किसान मेला को लेकर तैयारी जोरो पर है। मेला का मुख्य विषय है जलवायु अनुकूल कृषि।

किसान मेला की तैयारियों को लेकर कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय के मार्गदर्शन में निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ मयंक राय और जलवायु अनुकूल कृषि के प्राध्यापक डॉ.रत्नेश झा के नेतृत्व में 25 से ज्यादा कमिटी मेले की शत-प्रतिशत सफलता को लेकर कार्य में जुटी है। इस संदर्भ में विवि के कुलपति डॉ.पीएस पांडेय ने कहा कि जलवायु परिवर्तन देश-दुनिया की बड़ी समस्याओं में शामिल है। इससे निपटने के लिए किसानों और वैज्ञानिकों को एकजुट होना होगा। उन्होंने कहा कि किसान मेला में विभिन्न राज्यों के डेढ़ सौ से ज्यादा स्टॉल और प्रदेशों के आने की संभावना है।

Hindustan 03-02-2025

जलवायु अनुकूल कृषि थीम पर मेला 15 से

संस. जागरण • पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में 15 से 17 फरवरी तक किसान मेले का आयोजन होगा। इस बार मेले की थीम जलवायु अनुकूल कृषि है। मेले की तैयारियों को लेकर निदेशक प्रसार शिक्षा डा. मयंक राय और जलवायु अनुकूल कृषि के प्राध्यापक डा. रत्नेश झा के नेतृत्व में 25 से ज्यादा कमेटी बनाई गई है। सब को अलग-अलग जिम्मेवारी सौंपी गई है। कुलपति डा. पीएस पांडेय ने कहा कि जलवायु परिवर्तन देश और दुनिया की बड़ी समस्या है। इससे निपटने के लिए किसानों और विज्ञानियों को एकजुट होना होगा। किसान मेले में विभिन्न राज्यों के डेढ़ सौ से ज्यादा स्टाल लगने की संभावना है। निदेशक प्रसार शिक्षा डा. मयंक राय ने कहा कि किसान मेला को सफल बनाने के लिए दिन रात कार्य चल रहा है। उम्मीद है कि इस बार भी 50 हजार से अधिक लोग इसमें भाग लेंगे। किसान मेला में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के विभिन्न संस्थानों के भी स्टाल लगाए जाएंगे। डा. रत्नेश झा ने कहा कि किसान मेले में स्टालों की बुकिंग शुरू हो गई है यदि कोई संस्थान अपना स्टाल लगाना चाहता है तो विश्वविद्यालय की वेबसाइट के माध्यम से आवेदन दे सकता है। किसान मेले में स्टालों की बुकिंग को लेकर लोग काफी उत्साहित हैं।

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में चल रही किसान मेला की तैयारी। • जागरण

Dainik Jagran 03-02-2025

दैनिक भास्कर- 4/02/25 P- 13

कृषि पर चर्चा • किसानों के लिए समेकित मत्स्य पालन के विषय पर छह दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

समेकित कृषि प्रणाली तकनीक से मत्स्य पालन करें, होगी अच्छी आमदनी : रमण

भास्कर न्यूज | पूसा

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा स्थित संचार केंद्र भवन सभागार में किसानों के लिए समेकित मत्स्य पालन के विषय पर छह दिवसीय प्रशिक्षण सह परिभ्रमण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन विवि के निदेशक छात्र कल्याण डॉ. रमण त्रिवेदी सहित अन्य अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर मौजूद प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए डॉ. रमण त्रिवेदी ने कहा कि बेहतर उत्पादन प्राप्त के लिए किसानों को समेकित कृषि प्रणाली तकनीक से मत्स्य पालन करने की जरूरत है। बिहार राज्य में वर्ष 2010-11 के बाद से मत्स्य पालन के क्षेत्र से जुड़ी पॉलिसियों में बहुत बड़ा बदलाव किया गया है। बिहार के मत्स्य पालन में करीब करीब 80 प्रतिशत का बढ़ोतरी दर्ज हुआ है। उन्होंने कहा कि कुछ दशक पहले तक मछली का उत्पादन एक तालाब से लगभग एक टन हुआ करता था जबकि आज के आधुनिक युग में वैज्ञानिक विधि से मछलीपालन कर किसान उसी तालाब से 5 टन से ज्यादा मछलियों का उत्पादन प्राप्त कर रहे है। उन्होंने कहा कि तालाब का समुचित प्रबंधन करने के क्षेत्र में भी मत्स्यपालकों को जानकारी देने की आवश्यकता हैं। तालाब में गुणवत्तापूर्ण मछलियों के सीड्स डालने पर उत्पादकता दर में वृद्धि संभव है। उन्होंने कहा कि मत्स्यपालन के दौरान तालाबों एवं मछलियों में रोग फैलने से पहले ही उसका निदान कर लेना ही मत्स्यपालकों के लिए मुनासिब होता है। उन्होंने कहा कि मतस्यपालक रंगीन मछली के व्यवसाय से जुड़कर भी राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय बाजारों का लाभ ले सकते है।

सलाह : केंद्रीय कृषि विवि पूसा में किसानों को दिया गया प्रशिक्षण

पूसा में प्रशिक्षण कार्यक्रम को संबोधित करते डॉ. रमण त्रिवेदी व प्रशिक्षण में मौजूद किसान।

तालाब में गुणवत्तापूर्ण मछलियों के सीड्स डालने से उत्पादकता दर में वृद्धि होगी

स्वागत भाषण एवं प्रशिक्षण का विषय प्रवेश कराते हुए अधिष्ठाता पीजीसीए सह निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ. मयंक राय ने कहा कि बीते 10 वर्षों से मत्स्य पालन के क्षेत्र में ज्यादा ध्यान दिया जा रहा है। अब भी अक्सर लोग मत्स्यपालन बिल्कुल तकनीक विहीन तरीके से ही करते है। ज्यादातर मतस्यपालक कोई तालाब या घर के अगल-बगल के छोटे-छोटे तालाबों में मछलियों का जीरा छोड़कर निश्चिन्त होकर बैठ जाते हैं तथा बाद में अल्प मछलियों के उत्पादन को ही बेचकर संतोष कर लेते है। उन्होंने कहा कि इस व्यवसाय में वैज्ञानिकी तकनीकों को समाहित करने की जरूरत है। एकीकृत कृषि में मत्स्य पालन को जोड़कर सफल व्यवसायी बना जा सकता है। बता दें कि इस प्रशिक्षण को बिहार सरकार के मत्स्य निदेशालय पशु एवं मत्स्य संस्थान विभाग के माध्यम से आयोजित किया हैं। मंच संचालन प्रसार शिक्षा उप निदेशक प्रशिक्षण डा. बिनीता सतपथी एवं धन्यवाद ज्ञापन वैज्ञानिक डा. फूलचंद ने किया।

कृषि • केंद्रीय कृषि विवि पूसा के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के कृषि वैज्ञानिक ने दी जानकारी

करेले की खेती के लिए तापमान व समय उपयुक्त

भास्कर न्यूज़ | पूसा

बिहार के किसान मौजूदा समय में करेले की वैज्ञानिक खेती कर करेले से बेहतर उत्पादन और मुनाफा दोनों प्राप्त कर सकते है। इसकी खेती के लिए अच्छी जल निकास वाली तथा 6.5 से 7.5 पीएच मान के साथ-साथ कार्बनिक पदार्थों से भरपूर बलुई दोमट मिट्टी या फिर नदी किनारे की जलोढ़ मिट्टी काफी उपयुक्त मानी जाती है। ये जानकारी कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के कृषि वैज्ञानिक डॉ. रविंद्र कुमार तिवारी ने दी है। उन्होंने कहा कि करेले की फसल को मध्यम गर्म तापमान की आवश्यकता होती है। किसान करेले की रोपनी बीज और पौधे दोनों विधि से कर सकते है। उन्होंने कहा कि करेले से अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए गर्म और आद्र जलवायु काफी उपयुक्त माना जाता है। फसल की बेहतर बढ़वार के लिए न्यूनतम तापमान 20 डिग्री सेन्टीग्रेड और अधिकतम तापमान 35 से 40 डिग्री सेन्टीग्रेड के बीच होना चाहिए। उन्होंने कहा कि गर्मी के मौसम में करेले को जनवरी से मार्च महीने तक लगाया जा सकता है। उन्होंने बताया कि करेले में विटामिन ओर खनिज पदार्थ के साथ-साथ ढ़ेर सारे औषधीय गुण भी पाएं जाते है जिससे इसकी मांग हमेशा मार्केट में हरे सब्जियों के रूप में बनी रहती हैं। कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि करेले की प्रमुख भारतीय किस्मों में ग्रीन लांग, फैजाबाद स्माल, जोनपुरी, झलारी, सुपर कटाई, सफेद लांग, ऑल सीजन, हितकारी आदि प्रमुख किस्में है जिन्हें लगाकर किसान बेहतर से बेहतर उत्पादन प्राप्त कर सकते है।

पूसा में प्लास्टिक ट्रे में जमाया गया करेला का पौधा।

किसान वैज्ञानिक सलाह से उर्वरक का इस्तेमाल करें

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि करेला लगाने से पूर्व किसान खेतों की जुताई अच्छे से करें। खेत से खरपतवार अच्छे से निकाल दें। इसके बाद खेत में वर्मी कंपोस्ट खाद 15 से 20 टन प्रति हेक्टेयर के हिसाब से डालकर अच्छे से मिला दें। इसके अलावे किसान प्रति हेक्टेयर के हिसाब से उर्वरक की अनुशंसित मात्रा 50 से 100 किग्रा नाइट्रोजन, 40 से 60 किग्रा फास्फोरस पेंटोक्साइड और 30 से 60 किग्रा 25 पोटेशियम ऑक्साइड जैसे उर्वरक डालकर खेत को तैयार कर लें। फूल आने के समय नाइट्रोजन देना बेहतर होता है। करेले के बीज को बोने के लिए 2 से 3 बीज 2.5 से 5 मीटर की दूरी पर बोना अच्छा रहता है।

बुवाई के 55 से 60 दिनों के बाद कर सकते हैं तुड़ाई

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि किसान फसल को खरपतवारों से मुक्त रखने के लिए कम से कम 2 से 3 बार निराई और गुड़ाई का काम जरूर करें। सामान्यत: पहली निराई बुवाई के 30 दिन बाद की जाती है। इसके बाद की निराई खरपतवार को देखने के अनुसार करनी चाहिये। करेले में फल आने में बुआई से लगभग 55 से 60 दिनों का समय लगता हैं। इतने दिनों के बाद फल की तुड़ाई लगभग शुरू हो जाती है। इसके बाद किसान 2 से 3 दिनों के अंतराल पर तुड़ाई करते रहते हैं।

Dainik Bhaskar 04-02-2025

दै० भास्कर- 5/2/2024

विवि परिसर में मां सरस्वती की पूजा 1980 से हो रही है

पूसा। डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा स्थित न्यू डी टाइप एवं ई टाइप आवासीय परिसर में सरस्वती पूजनोत्सव का आयोजन किया गया। पूजा समिति के सदस्य मनीष कुमार ने बताया विवि परिसर में मां सरस्वती की पूजा साल 1980 से होती चली आ रही है। हर्ष वर्ष की भांति इस वर्ष भी मुख्य रूप से पूजा में पंडाल की सजावट, अधिक से अधिक प्रसाद का वितरण एवं आस पास के क्षेत्रों की साफ-सफाई करने पर विशेष रूप से ध्यान दिया गया हैं। माता सरस्वती के इस पूजन में समिति के सदस्य मनीष कुमार के अलावे धीरज, घनश्याम, नवीन, नितेश, दीपक, सनी, अभिषेक, सचिन, छोटू, राजेश, राजीव, हिमांशु आदि तन मन से जुटे थे। सरायरंजन प्रखंड क्षेत्र के विभिन्न गांवों में जगह जगह धूमधाम से सरस्वती पूजा का आयोजन किया गया। वहीं जगह सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। इसमें विभिन्न कलाकारों ने भक्ति गीतों से लोगों को सराबोर किया। मौके पर मनोज कुमार शर्मा, दिनेश कुमार शर्मा थे।

प्रभात खबर- 4/02/25 P-6

मत्स्यपालन विषय पर छह दिवसीय प्रशिक्षण एवं परिभ्रमण शुरू

बेहतर उत्पादन को समेकित मत्स्य पालन जरूरी : डा रमण त्रिवेदी

कार्यक्रम

प्रतिनिधि, पूसा

डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय सभागार में समेकित प्रणाली से मत्स्यपालन विषय पर छह दिवसीय प्रशिक्षण एवं परिभ्रमण शुरू हुआ. अध्यक्षता करते हुए निदेशक छात्र कल्याण डॉ रमण त्रिवेदी ने कहा कि बेहतर उत्पादन लेने के लिए समेकित कृषि प्रणाली तकनीक से मत्स्यपालन करने की जरूरत है. परंपरागत मछली उत्पादन निर्धारित तालाब में लगभग एक टन हुआ करता था जबकि वैज्ञानिक विधि से 5 से टन का उत्पादन संभव हो सका है. उन्होंने कहा कि तालाब का समुचित प्रबंधन के क्षेत्र में मत्स्यपालकों को तकनीकी ज्ञानवर्धन करने का सुनिश्चित करना होगा. तालाब में गुणवत्तापूर्ण सीड्स डालने पर उत्पादकता दर में वृद्धि संभव है. मत्स्यपालन के दौरान पोखरा में रोग फैलने से पहले ही निदान कर लेना ही मुनासिब होता है. हेचरी उत्पादन भी मत्स्यपालन के दौरान बेहतर विकल्प होता है. रंगीन मछली का व्यवसाय से जुड़कर राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय बाजारों का लाभ लिया जा सकता है. प्रशिक्षण का विषय प्रवेश कराते हुए अधिष्ठाता पीजीसीए सह निदेशक प्रसार शिक्षा डा मयंक राय ने कहा कि बीते 10 वर्षों में मत्स्यपालन के क्षेत्र में ज्यादा ध्यान दिया जा रहा है. इस व्यवसाय में वैज्ञानिकी तकनीकों को समाहित करने की जरूरत है. एकीकृत कृषि में मत्स्यपालन को जोड़ कर सफल व्यवसायी बन सकते हैं. प्रशिक्षण बिहार सरकार के मत्स्य निदेशालय पशु एवं मत्स्य संस्थान विभाग के माध्यम से आयोजित किया गया है. संचालन प्रसार शिक्षा उप निदेशक प्रशिक्षण डा विनिता सतपथी ने किया. धन्यवाद ज्ञापन डा फूलचंद ने किया. प्रशिक्षण के सत्र में जहानाबाद जिला से 30 मत्स्यपालक एवं किसान शामिल हैं. मौके पर जहानाबाद के मत्स्य प्रसार पदाधिकारी चंदन कुमार, तकनीकी टीम के सुरेश एवं सूरज आदि मौजूद थे.

वैज्ञानिकों के साथ प्रतिभागी.

समेकित कृषि प्रणाली तकनीक से करें मत्स्य पालन

संस, जागरण • पूसा : डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित संचार के सभागार में सोमवार को समेकित प्रणाली से मत्स्य पालन विषय पर छह दिवसीय प्रशिक्षण एवं परिभ्रमण कार्यक्रम शुरू हुआ। अध्यक्षता करते हुए निदेशक छात्र कल्याण डा. रमण त्रिवेदी ने कहा कि बेहतर उत्पादन लेने के लिए समेकित कृषि प्रणाली तकनीक से मत्स्य पालन करने की जरूरत है। वर्ष 2010-11 के बाद से मत्स्य पालन के क्षेत्र में बहुत बदलाव किया गया है। बिहार के मत्स्य पालन में करीब करीब 80 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज हुई है। जिज्ञासा वाले लोग आजकल अक्सर इंटरनेट मीडिया प्लेटफॉर्म उपयोग कर बेहतर व्यवसाय करने में सफल हो

प्रशिक्षण सत्र को संबोधित करते मुख्य अतिथि व विज्ञानी • जागरण

रहे है। परंपरागत काल में मछली का उत्पादन निर्धारित तालाब में लगभग एक टन हुआ करता था जबकि आजकल के आधुनिक युग में वैज्ञानिकी विधि से 5 से टन का उत्पादन संभव हो सका है। तालाब का समुचित प्रबंधन के क्षेत्र में मत्स्यपालकों को तकनीकी ज्ञानवर्धन करने का सुनिश्चित करना होगा। पोखरा में रोग फैलने से पहले ही निदान कर लेना ही मुनासिब होता है। हेचरी उत्पादन भी मत्स्य पालन के दौरान बेहतर विकल्प होता है। रंगीन मछली के व्यवसाय से जुड़कर राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय बाजारों का लाभ लिया जा सकता है। स्वागत भाषण एवं प्रशिक्षण का विषय प्रवेश कराते हुए अधिष्ठाता पीजीसीए सह निदेशक प्रसार शिक्षा डा मयंक राय ने कहा कि बीते 10 वर्षों में मत्स्य पालन के क्षेत्र में ज्यादा ध्यान दिया जा रहा है। कोई तालाब या घर के अगल बगल के छोटे छोटे तालाबों में जीरा छोड़ देते और जो भी उसे बेच कर संतोष कर लेते हैं। इस व्यवसाय में वैज्ञानिकी तकनीक को समाहत करने की जरूरत है। एकीकृत कृषि में मत्स्य पालन को जोड़कर सफल व्यवसायी बन सकते हैं। संचालन प्रसार शिक्षा उप निदेशक प्रशिक्षण डा बिनीता सतपथी ने की। धन्यवाद ज्ञापन विज्ञानी डा. फूलचंद ने किया।

Dainik Jagran 04-02-2025

वैदिक मंत्रों के साथ विद्या की देवी मां सरस्वती पूजा संपन्न : संस, जागरण,

पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्र कृषि विश्वविद्यालय में न्यू डी टाइप एवं ई टाइप में सरस्वती पूजा का आयोजन धूमधाम के साथ किया गया। प्रखंड के विभिन्न शैक्षणिक संस्थान एवं गांव में भी सरस्वती पूजा का आयोजन हुआ। एक से बढ़कर एक पंडाल एवं मां सरस्वती की मूर्तियों को सजाया गया। पूजा समिति के सदस्य मनीष, धीरज , घनश्याम, नवीन, नितेश, दीपक सनी, अभिषेक, सचिन, छोट्टू, राजेश, राजीव, हिमांशु ने पूजा अर्चना की।

Dainik Jagran 04-2-25

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा अगले 5 फरवरी तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि इस अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में अगले दो दिन तक सुबह में मध्यम कुहासा छाए रहने की संभावना है। इस बीच तापमान में बढ़ोतरी होगी। इस अवधि में अधिकतम तापमान 25 से 26 डिग्री सेल्सियस व न्यूनतम 10 से 12 डिग्री के बीच रहने का अनुमान है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
04 फरवरी	20.2	10.5
05 फरवरी	21.0	11.0
दरभंगा		
04 फरवरी	21.0	11.0
05 फरवरी	22.0	11.5
पटना		
04 फरवरी	23	12
05 फरवरी	23	12

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 04-02-2025

आयोजन | कृषि विवि में समेकित प्रणाली से मत्स्य पालन विषय पर छह दिवसीय प्रशिक्षण शुरू, किसानों को दी गई विभिन्न तरह की जानकारी

समेकित तकनीक से मत्स्यपालन को बढ़ावा समय की मांग: डीएसडब्लू

कृषि विवि

- प्रशिक्षण से दर्जनों किसानों को होगा फायदा
- सरकार की नई योजनाओं के बारे में दी जानकारी

पूसा, निज संवाददाता। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के निदेशक छात्र कल्याण(डीएसडब्लू) डॉ.रमण त्रिवेदी ने कहा कि समेकित कृषि प्रणाली तकनीक से मत्स्य पालन समय की मांग है। सरकार की नई योजनाएं, वैज्ञानिक तकनीक एवं सोसल मिडिया प्लेटफार्म मत्स्य पालन के क्षेत्र को लगातार गति देने में अहम भूमिका निभा रहा है। इसका सीधा लाभ उत्पादकों को मिल रहा है। जरूरत है समूह बनाकर व वैज्ञानिक तकनीको के इस्तेमाल से इस क्षेत्र में कार्य करने की।

वे सोमवार को विवि के पंचतंत्र के सभागार में बोल रहे थे। मौका था समेकित प्रणाली से मत्स्य पालन विषय पर छह दिवसीय प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र का। उन्होंने कहा कि बदलते समय में रंगीन मछली का व्यवसाय लगातार बढ़ रहा है। इसकी मांग राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय बाजारो में लगातार बढ़ रही है। ऐसे में समूह बनाकर व एफपीओ के माध्यम से ऐसे कार्यो को बढ़ाना लाभकारी साबित होगा।

स्वागत करते हुए निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ.मयंक राय ने कहा बदलते समय में आधुनिक तकनीकों व बाजार की मांग के अनुरूप मत्स्य पालन व्यवसाय को बढ़ाने की जरूरत है। इसमें यह प्रशिक्षण किसानों के लिए संजीवनी का कार्य करेगा। संचालन करते हुए प्रसार शिक्षा निदेशालय की प्रशिक्षण प्रभारी डॉ.विनिता शतपथी ने प्रशिक्षण की रूपरेखा प्रस्तुत की। धन्यवाद वैज्ञानिक डॉ.फूलचंद ने दिया।

सोवार को विवि के वैज्ञानिकों के साथ मत्स्य पालन प्रशिक्षण लेने पहुंचे प्रशिक्षु और अन्य पदाधिकारी।

Hindustan 4-2-2025

किसानों की समृद्धि के लिए हेचरी बेहतर विकल्प : डॉ. रमण त्रिवेदी

समस्तीपुर/पूसा (एसएनबी)। डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविधालय स्थित संचार के सभागार में समेकित प्रणाली से मत्स्य पालन विषय पर छह दिवसीय प्रशिक्षण एवं परिभ्रमण कार्यक्रम मंगलवार को आरंभ हुआ। इस अवसर पर उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे निदेशक छात्र कल्याण डॉ रमण त्रिवेदी ने कहा कि बेहतर उत्पादन लेने के लिए समेकित कृषि प्रणाली तकनीक से मत्स्य पालन करने की जरूरत है। बिहार राज्य में वर्ष 2010-11 के बाद से मत्स्य पालन के क्षेत्र में पॉलिसियों में बहुत बड़ा बदलाव किया गया है। बिहार के मत्स्य पालन में करीब करीब 80 प्रतिशत का बढ़ोतरी दर्ज हुआ है। जिज्ञासा वाले लोग आजकल अक्सर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म उपयोग कर बेहतर व्यवसाय करने में सफल हो रहे है। परंपरागत काल में मछली का उत्पादन निर्धारित तालाब में लगभग एक टन हुआ करता था जबकि आजकल के आधुनिक युग में वैज्ञानिकी विधि से 5 से टन का उत्पादन संभव हो सका है। तालाब का समुचित प्रबंधन के क्षेत्र में मत्स्यपालकों को तकनीकी ज्ञानवर्धन करने का सुनिश्चित करना होगा। तालाब में गुणवत्तापूर्ण सीड्स डालने पर उत्पादकता दर में वृद्धि संभव है। मत्स्य पालन के दौरान पोखरा में रोग फैलने से पहले ही निदान कर लेना ही मुनासिब होता है। हेचरी उत्पादन भी मत्स्य पालन के दौरान बेहतर विकल्प होता है। रंगीन मछली का व्यवसाय से जुड़कर राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय बाजारों का लाभ लिया जा सकता है। स्वागत भाषण एवं प्रशिक्षण का विषय प्रवेश कराते हुए अधिष्ठाता पीजीसीए सह निदेशक प्रसार शिक्षा डा मयंक राय ने कहा कि बीते 10 वर्षों में मत्स्य पालन के क्षेत्र में ज्यादा ध्यान दिया जा रहा है। अक्सर लोग मत्स्य पालन बिल्कुल तकनीक विहीन ही किया करते है। कोई तालाब या घर के अगल बगल के छोटे छोटे तालाबों में जीरा छोड़ देते और जो भी उसे बेच कर संतोष कर लेते है। इस व्यवसाय में वैज्ञानिकी तकनीकों को समाहित करने की जरूरत है। एकीकृत कृषि में मत्स्य पालन को जोड़कर सफल व्यवसायी बन सकते है। यह प्रशिक्षण बिहार सरकार के मत्स्य निदेशालय पशु एवं मत्स्य संस्थान विभाग के माध्यम से आयोजित किया है। संचालन प्रसार शिक्षा उप निदेशक प्रशिक्षण डा बिनीता सतपथी ने की। धन्यवाद ज्ञापन वैज्ञानिक डॉ फूलचंद ने किया। प्रशिक्षण के इस सत्र में जहानाबाद जिला से 30 मत्स्य पालक एवं किसान शामिल हो रहे है। मौके पर जहानाबाद के मत्स्य प्रसार पदाधिकारी चंदन कुमार सहित तकनीकी टीम के सुरेश एवं सूरज आदि मौजूद थे।

संबोधित करते डीएसडब्लू व अन्य।

Rashtriya Sahara 04-02-2025

केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित मेला ग्राउंड में आयोजित तीन दिवसीय किसान मेला का दूसरा दिन

किसानों को सशक्त बनाने की जरूरत : शांभवी

कार्यक्रम

प्रतिनिधि, पूसा

कार्यक्रम का उद्घाटन करतीं सांसद व अन्य.

स्थानीय सांसद शांभवी चौधरी ने कहा देश के किसानों को केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के सहयोग से सशक्त बनाने की जरूरत है. महिला सशक्तिकरण पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि मुझे समस्तीपुर की बेटी होने पर बहुत गर्व है, जहां पर केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय वर्षों पूर्व से अवस्थित है. कृषि और किसान हमारी शुरू से ही प्राथमिकता रही है. किसान लोगों का अन्नदाता है. पीएम ने केसीसी का सीमा को तीन लाख से बढ़ाकर किसान हित में पांच लाख कर दिया है. बहुत जल्द आने वाले समय में ई प्लेटफार्म की शुरुआत किया जा रहा है. जो 24 घंटे किसानों के लिए उपलब्ध होंगे. पीएम नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार सतत विकास की राह पर अग्रेसर है. भारत सरकार ग्रामीण महिलाओं को सशक्त करने की दिशा में लगातार कार्य कर रही है. विकसित भारत 2047 बनाने में किसानों की महत्वपूर्ण भूमिका है. विवि कुलपति डॉ. पीएस पांडेय के नेतृत्व में बेहतर अनुसंधान कर रहा है, जो काबिले तारिफ है. किसान देश की रीढ़ हैं. सांसद ने आम जनता की मांग पर विवि परिसर में सभी टूटी-फूटी सड़कों का नये सड़कों में परिवर्तित करने का आश्वासन दिया. ये बातें उन्होंने डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित मेला ग्राउंड में आयोजित तीन दिवसीय किसान मेला के दूसरे दिन बतौर मुख्य अतिथि के रूप में अपने संबोधन में कही.

समारोह की अध्यक्षता कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने की. उन्होंने कहा कि केंद्रीय कृषि विवि पूसा सांसद शांभवी की निजी जिम्मेवारी के रूप में परिलक्षित है. पूसा के इतिहास को दोहराते हुए कुलपति डॉ. पांडेय ने कहा कि वर्ष 1784 में ही हॉर्स ब्रीडिंग प्लांट की शुरुआत हो चुकी थी. जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए राज्य के 13 जिले में 16 कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम किसानों के खेत में चलाए जा रहे हैं. मेला में नवीनतम तकनीकों को लाइव डेमोंस्ट्रेशन किया जा रहा है. मशरूम से विवि 52 प्रकार के उत्पादों का निर्माण कर स्वरोजगार की दिशा में कार्य किया जा रहा है. मशरूम पनीर का पेटेंट मिलने से किसानों को बेहतर लाभ मिलने की संभावना है. मरीचा धान की जीआई टैगिंग के अलावे शाही लीची का शहद पर भी बहुत जल्द जीआई टैग लग जाने से रोजगार के दर्जनों अवसर मिलेंगे.

स्वागत भाषण प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ. मयंक राय ने दिया. समारोह को निदेशक अनुसंधान डॉ. अनिल कुमार सिंह ने भी संबोधित किया. संचालन डॉ. मीनाक्षी द्विवेदी ने किया. धन्यवाद ज्ञापन मेला सचिव डॉ. आरके तिवारी ने किया. मौके पर वैज्ञानिक डॉ. विनिता सतपथी के अलावे अधिष्ठाता, निदेशक वैज्ञानिक मौजूद थे.

किसानों को दी गयी प्राथमिक प्रसंस्करण व मूल्य संवर्धन की जानकारी, मिलेगा फायदा

प्रतिनिधि, पूसा

प्रशिक्षण को संबोधित करते विशेषज्ञ.

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अंतर्गत परिकटन अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी परियोजना, प्रसंस्करण एवं खाद्य अभियांत्रिकी महाविद्यालय में एक दिवसीय प्रशिक्षण सह जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इसमें कल्याणपुर प्रखंड के लदौरा के किसानों ने भाग लिया. इस कार्यक्रम में डॉ. राम सुरेश, अधिष्ठाता कृषि अभियंत्रण एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय ने कटाई उपरांत प्राथमिकी प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन से संबंधित जानकारी किसानों को दी. विशेष रूप से कैसे कटाई उपरांत सभी अनाज, फल सब्जी खासकर आलू प्रसंस्करण, खासकर धान की कुटाई के लिए उपयोग की जाने वाली मशीन पर प्रत्यक्षण किया. डॉ. देवेंद्र कुमार विभागाध्यक्ष ने परियोजना के अंतर्गत भंडारण पर बल दिया. डॉ. विशाल कुमार परियोजना अन्वेषक द्वारा चल रहे मूल्यवर्धित प्रोडक्ट के बारे में किसानों को जानकारी दी गयी. डॉ. प्रतिभा देवी शर्मा प्राध्यापक ने मूल्यवर्धित उत्पाद तथा फलों एवं सब्जियों के बारे में भंडारण, आलू से चिप्स बनाने की तरीका के बारे में जानकारी दी. डॉ. दिनेश रजक वैज्ञानिक सह परियोजना अन्वेषक द्वारा मंच संचालन तथा शौर शुष्कक द्वारा अनाज, फल एवं सब्जी के भंडारण, अनाज लावा यंत्र और मक्के का भूटा पकाने के यंत्रों की विस्तृत जानकारी दी गयी. किसानों को तेल निष्कासित यंत्र तथा ग्रेन मिलिंग के बारे में तथा अनाज भण्डारण के लिए हेरमेटिक बैग (वायु रुद्ध) भंडारण तथा मकई निष्कासन यंत्र के बारे में विस्तृत जानकारी दी गयी. इस कार्यक्रम में विभाग से पीएचडी, एमटेक के छात्र तथा सभी कर्मचारियों ने भाग लिया.

प्रभात खबर
Monday, February 17, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67b22a9e84d6a8252b0ea872

कृषि मेला • डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा में चल रहे किसान मेले में दूसरे दिन भी किसानों की उमड़ी भीड़

दैनिक भास्कर-17/02/25 8-14

पूसा विवि महिला कृषकों को सशक्त बनाने की दिशा में कर रहा सराहनीय काम : शांभवी

कृषि और किसान दोनों का उत्थान किए बगैर देश का उत्थान संभव नहीं

भास्कर न्यूज़ | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा में चल रहे किसान मेले में दूसरे दिन बतौर मुख्य अतिथि समस्तीपुर की सांसद शांभवी पहुंची। मुख्य अतिथि के मेले में पहुंचने के उपरांत विवि के कुलपति डॉ. पीएस पांडे ने उन्हें शॉल, पाग, गुलदस्ता व मोमेंटो देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर मेले में मौजूद किसान व कृषि वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि सांसद शांभवी ने कहा कि किसान हमारे अन्नपूर्णा देवता हैं। कृषि और किसान दोनों का उत्थान किये बगैर देश का उत्थान संभव नही हैं। उन्होंने कहा कि पूसा विवि खासकर महिला कृषकों को सशक्त बनाने की दिशा में जोर शोर से काम कर रहा हैं। विवि का यह कदम काफी सराहनीय है। सांसद ने कहा कि मुझे इस बात का गर्व है कि मैं उस धरती से सांसद हूं जहां पूसा विवि जैसा एक महत्वपूर्ण कृषि संस्थान है। उन्होंने कहा कि इस साल लाए गए बजट में किसानों का काफी ख्याल रखा गया है। आज के दौर में किसानों को डिजिटल रूप से फायदा पहुंचाने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि विवि डिजिटल एग्रीकल्चर के क्षेत्र में काफी अच्छा कार्य कर रहा है। उन्होंने कहा कि वे पूसा विवि के अधीन सभी जर्जर सड़कों को जल्द जल्द सांसद निधि से बनवाने का काम करेंगी। सांसद ने कहा कि पीएम का मिशन हैं कि वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाया जाये। राष्ट्र को विकसित बनाने में किसानों की भूमिका भी काफी महत्वपूर्ण होगी। उन्होंने पूसा विवि के कार्यक्रम में पहली बार भाग लेने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि पुसा विवि और यहां के वैज्ञानिक कृषि शिक्षा, अनुसंधान और प्रसार के क्षेत्र में काफी बेहतर काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि किसान एवं कृषि क्षेत्र के विकास को लेकर केंद्र एवं राज्य सरकारें दोनों बेहतर से बेहतर योजनाएं चला रही हैं।

किसान मेले में कार्यक्रम को संबोधित करतीं सांसद सांभवी। किसान मेले में मौजूद किसान व वैज्ञानिक।

किसान मेले के माध्यम से किसानों तक कृषि की नई तकनीकों को पहुंचाने का किया जा रहा प्रयास, इससे किसान कर सकते हैं कम लागत में उन्नत खेती

किसान मेले के दूसरे दिन मेले में मौजूद किसान व कृषि वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए पूसा विवि के कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने कहा कि पूसा का नाम हेनरी फिप्स के नाम पर नहीं बल्कि भगवान पूषण के नाम पर हैं। उन्होंने कहा कि समस्तीपुर और पूसा के क्षेत्र में साल 1899 के दौरान भयंकर सूखा पड़ा था जिससे अकाल जैसी स्थिति हो गई थी। उस समय हेनरी फिप्स ने इस जगह के उत्थान के लिए सहयोग दिया। इस सहयोग के कारण ही ज्यादातर लोगों ने इस पुसा को हेनरी फिप्स के नाम से जोड़ दिया तथा इसे हेनरी फिप्स का पूसा समझने लगे। उन्होंने कहा कि इस किसान मेले के माध्यम से कृषि की नई नई तकनीकों को दूर दूर से आये किसानों तक पहुंचाने का काम किया जा रहा है। उन्होंने कहा की विवि के मशरूम विभाग ने भी काफी अच्छा काम किया है। मशरूम विभाग ने अब तक 52 मशरूम उत्पादों को बनाने में सफलता हासिल की है। आज मशरूम से बने उत्कृष्ट उत्पाद खासकर मशरूम बिस्किट, समोसा और पनीर को पेटेंट मिल चुका है। उन्होंने कहा कि दूसरे दिन के किसान मेले में शाम तक 8 हजार से ज्यादा किसानों ने अपना अपना रजिस्ट्रेशन कराया है। मेले में काफी भीड़ उमड़ रही है। मंच संचालन डॉ. मीनाक्षी द्विवेदी एवं अतिथियों का स्वागत निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ.मयंक राय ने किया। मौके पर डॉ. एके सिंह, डॉ. राकेश मणि शर्मा, डॉ. महेश कुमार, डॉ. आरके तिवारी, डॉ. एसके सिंह, डॉ. कुमार राज्यवर्धन भी थे।

दैनिक भास्कर-17/02/25 8-14

किसान मेले में एक से बढ़कर एक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन

भास्कर न्यूज़ | पूसा

विवि में चल रहे किसान मेला के पहले दिन रात्रि में एक से बढ़कर एक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन सांस्कृतिक कार्यक्रमों में कला और संस्कृति का अद्भुत संगम देखने को मिला। कला श्री ग्रुप पटना से पहुंचे कलाकारों ने अपने उत्कृष्ट प्रस्तुति से पंडाल में मौजूद सभी दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। इन कलाकारों ने पारंपरिक लोकगीतों, शास्त्रीय नृत्य, और संगीतमय प्रस्तुतियों का ऐसा समावेश किया कि हर कोई झूमने और तालियां बजाने पर विवश हो गया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते कलाकार।

सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान कलाकारों ने एक विशेष नृत्य नाटिका के तहत आधुनिक कृषि तकनीकों और जैविक खेती के महत्व को बेहद प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का शुभारंभ विश्वविद्यालय के कुलपति ने दीप प्रज्वलन के साथ किया।

कृषि से जुड़ी नई तकनीक से किसानों को मिलेगा लाभ

भास्कर न्यूज़ | पूसा

कृषि विवि पूसा के किसान मेले में दूसरे दिन पहुंचे हरपुर पुसा के किसान सुखारी महतो ने बताया की मेले में पिछले साल की अपेक्षा ज्यादा स्टॉल मौजूद हैं। मेले में जलवायु अनुकल कृषि, मशरूम, उद्यानिकी आदि के बारे में विशेषज्ञों के द्वारा जानकारी दी जा रही है। पातेपुर वैशाली के किसान उमेश राय ने बताया कि उन्होंने मेले में खासकर ओल के स्टॉल पर विजिट कर विशेषज्ञों से ओल उत्पादन की जानकारी ली है। लाट बसेपुरा के किसान अमरेंद्र मिश्रा ने कहा कि इस साल के किसान मेले में काफी कुछ देखने को मिला। यहां के स्टॉलों पर बताई जा रही कृषि तकनीकें किसानों के लिए उत्तम है। समस्तीपुर निवासी एवं उत्तराखंड में अध्ययनरत युवा किसान व छात्र वर्तुल शर्मा ने बताया की मेले में बेहतर किस्मों के पेड़-पौधे भी उपलब्ध हैं।

दैनिक भास्कर - 15, 02, 25 पे. 16

जलवायु अनुकूल कृषि व मशरूम हब के स्टॉलों पर नए उत्पादों का प्रदर्शन

भास्कर न्यूज | पूसा

कृषि विवि पूसा में चल रहे तीन दिवसीयकिसानमेले में दूसरे दिन भी खासकर जलवायु अनुकूल कृषि, उद्यानिकी और मशरूम हब के स्टॉलकिसानों की अच्छी खासी भीड़ जुटी रही। यह तीनों स्टॉल किसानों के लिए आकर्षण का केंद्र बना रहा। जलवायु अनुकूल कृषि के स्टॉल पर किसानों को विशेषज्ञ जलवायु के बदलते परिवेश में खेती में अपनाएं जाने वाले कृषि पद्धतियों के बारे में जानकारी दे रहे थे। मशरूम के स्टॉल पर जहाँ मशरूम से बनाएं गए बिस्किट, लड्डू, अचार, भुजिया, नमकीन, पकोड़े आदि की बिक्री जोर शोर से हो रही थी। वहीं मशरूम वैज्ञानिक डॉ. दयाराम किसानों को मशरूम के नए नए प्रभेदों से

उद्यानिकी के स्टॉल पर जुटी किसानों की भीड़।

अवगत करा रहे थे। इसके अलावे उद्यान प्रदर्शनी के स्टॉल पर पपीता, बेर, अमरूद, केला, गाजर के अलावे विभिन्न फलों और सब्जियों से जुड़े प्रभेदों को प्रदर्शनी के लिए रखा गया था। मेले में इसके अलावे मुजफ्फरपुर जिले के आनंदपुर गांव निवासी एवं महिलाकिसानराज कुमारी देवी उर्फकिसानचाची के अचार स्टॉल पर भी लोगों की काफी भीड़ देखने को मिली।किसानव अन्य लोगों नें यहां से काफी मात्रा में विभिन्न तरीके के अचारों की खरीदारी की। किसान मेले में आकर्षण वाले स्टॉलों के अलावे ड्रोन तकनीक भी शामिल है।

विकसित भारत बनाने में किसानों की भूमिका काफी महत्वपूर्ण : सांसद

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में किसान मेले के दूसरे दिन कार्यक्रम को किया संबोधित

संस, जागरण, पूसा : प्रधानमंत्री के मिशन 2047 के तहत विकसित भारत बनाने में किसानों की भूमिका महत्वपूर्ण होगी। विश्वविद्यालय कृषि शिक्षा अनुसंधान एवं प्रसार में बेहतर कार्य कर रही है जो आगे आने वाले समय के लिए बेहतर है। ये बातें शनिवार को सांसद शांभवी चौधरी ने कही। वे डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में किसान मेले के दूसरे दिन किसानों एवं विज्ञानियों को संबोधित कर रही थीं।

उन्होंने कहा कि किसान एवं कृषि के क्षेत्र में विकास को लेकर केंद्र एवं राज्य सरकार दोनों चिंतित है। इस बार बजट में कृषि पर अधिक ध्यान दिया गया है। किसानों को साक्षात अन्नपूर्णा देवता बताते हुए सांसद ने कहा कि किसानों की बदौलत ही देश की आर्थिक स्थिति मजबूत होती है। आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिए कृषि में कई योजनाएं हैं। जैसे किसान क्रेडिट कार्ड में तीन लाख से बढ़ाकर अब पांच लाख रुपए क्रेडिट कर दिया गया है। वहीं कृषि धन-धान्य योजना कृषि की उत्पादकता को बढ़ाने में काम करेगा। हवाई पीएम कृषि सिंचाई योजना सहित कई ऐसी योजनाएं हैं जिससे किसान लाभान्वित हो सकते हैं। संसद में विश्वविद्यालय की सड़क का निर्माण करने पर भी बोल दिया। जहां तक हो सकेगा, सड़क निर्माण में योगदान रहेगा। कुलपति डा. पीएस पांडेय ने कहा कि प्रत्येक वर्ष की भांति विश्वविद्यालय में इस बार भी किसान मेला लगाया गया है। इसमें अभी तक 6000 से अधिक किसानों ने जिस्ट्रेशन कराया है। विश्वविद्यालय हमेशा नवीनतम तकनीक की खोज में अपना अनुसंधान जारी रखे हुए है जो आगे आत्मनिर्भर बनाने में कार्य करेगा। कुलपति ने कहा कि अब जल्द ही मधु का भी जीआई टैग मिलने वाला है। उसकी प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। टैग मिलते ही मधु के दाम भी किसानों को अच्छे मिलने लगेंगे। मौके पर डा. एस गौर, डा. गोविंद सिंह भंडारी, डा. एके सिंह मौजूद रहे। धन्यवाद ज्ञापन डा. आरके तिवारी के किया।

संबोधन करते स्थानीय सांसद एवं वैज्ञानिक किसान • जागरण

- सांसद ने कार्यक्रम का किया उद्घाटन, किसानों एवं विज्ञानियों को किया संबोधित
- किसान व कृषि के विकास के लिए शुरू की गई सरकारी योजनाओं की दी जानकारी

बैंकों का स्टाल मेले में लोगों की भीड़ • जागरण

नर्सरी सहित कृषि यंत्रों के स्टाल पर लगी भीड़

संस, जागरण, पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित किसान मेला के दूसरे दिन भी उद्यान प्रदर्शनी आकर्षण का केंद्र बना रहा। किसानों ने विभिन्न नर्सरी से पौधों की खरीदारी की। उद्यान प्रदर्शनी में जहां एक से बढ़कर एक फल-फूल थे। नवीनतम कृषि यंत्र का भी ज्ञान प्राप्त किया। मेला में आए संजीव यादव ने मुर्गी फार्म पर विस्तारपूर्वक जानकारी ली। दिल्ली से पहुंचे अशोक कुमार ने इस मेले को किसान उपयोगी बताते हुए कहा कि यहां आने के बाद से लगता है कृषि आमदनी का अच्छा स्रोत बन सकता है। वैशाली के रामविलास महतो ने तंबाकू की खेती के संबंध में जानकारी ली। वहीं अवधेश कुमार ने मक्के के रूप को लेकर जानकारी प्राप्त की। वैशाली के ही उमेश राय ने सब्जी की खेती पर विस्तृत जानकारी ली। कहा कि मेले में ज्ञान की सुविधा मिल जाने से सभी असुविधा कम लगती है।

किसान उमेश राय

रामविलास महतो

अशोक कुमार

किसान अवधेश कुमार

संजीव यादव

बैंक की योजनाओं से किसान हुए अवगत

संस, जागरण, पूसा : किसान मेला में किसानों को किन-किन योजनाओं में अनुदान मिल सकती है इसके संबंध में जानकारी दी गई। शाखा प्रबंधक सुमित कुमार ने किसानों को सोलर प्लेट के फायदे एवं इससे होने वाले बिजली बचाव के संबंध में बताया।

उन्होंने कहा कि इसके ब्याज दर में 7 प्रतिशत की छूट भी दी जा रही है। बैंकरों ने किसान क्रेडिट कार्ड एवं योजनाओं की भी जानकारी दी। मौके पर सुमन गौतम कुमार मौजूद थे। पंजाब नेशनल बैंक के शाखा प्रबंधक तरुण चंद्रा ने बताया कि विभिन्न योजनाओं में चार करोड़ 80 लाख रुपए का वितरण किया गया है। इसमें एसएचजी, पीएम सोलर रूफटाप शामिल हैं।

किसानों ने सुनाई समस्या विज्ञानियों ने किया समाधान

किसानों को सम्मानित करते वैज्ञानिक एवं मौजूद किसान • जागरण

संस, जागरण•पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित किसान मेला के दूसरे दिन किसान संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें जलवायु परिवर्तन एवं मौसम पर चर्चा की गई। विश्वविद्यालय के विज्ञानियों ने ओल की खेती, बीज उत्पादन, शंकर धान के बीज उत्पादन एवं मक्के में लगने वाले कीड़े-मकोड़े के संबंध में जानकारी ली। विज्ञानियों ने कहा कि जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न चुनौतियों का सामना करने के लिए कृषि को जलवायु स्मार्ट बनना होगा। इसके लिए सहनशीलता विकसित करना और जहां संभव हो ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करना या हटाना होगा। जलवायु स्मार्ट कृषि की महत्ता को स्वीकार करने के लिए जलवायु स्मार्ट तकनीक को उपकरणों और प्रथाओं का प्रसार और अपनाना अभी एक चुनौतीपूर्ण प्रक्रिया है। बिहार का पर्यावरण अति संवेदनशील है तथा मुख्य रूप से जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग से और सुरक्षित है। यहां लगभग 80 से 90 प्रतिशत लोग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है। यही कारण है कि किसी को जलवायु सहनशील बनाना होगा। जलवायु परिवर्तन पर कृषि का बहुत प्रभाव पड़ रहा है। किसान मेले में ड्रोन और के संबंध में बताया गया। वर्षा जल संचयन और इसके प्रबंधन जलवायु अनुकूल खेती में फसल प्रणालियों का प्रबंध विषयों पर किसानों को जानकारी दी गई। किसान एवं वैज्ञानिकों के बीच प्रश्नोत्तरी में सही जवाब देने वाले किसानों को सम्मानित किया गया। मौके पर डा. रवि दत्त, डा. मयंक राय, डा. आरके तिवारी, दिव्यांशु शेखर, डा. अनिल सिंह व कई वैज्ञानिक एवं कुलपति थे।

Dainik Jagran 17-2-2025

किसान गोष्ठी का हुआ आयोजन

पूसा। डॉ .राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि में आयोजित तीन दिवसीय किसान मेला के दूसरे दिन रविवार को गन्ना के उत्पादन, प्रसंस्करण एवं विपणन समेत कई विषयों पर किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस दौरान किसानो को विषय वस्तु पर विस्तार से जानकारी देते हुए उसे अपनाने पर बल दिया गया। मौके पर किसानो की समस्याओं का निदान भी वैज्ञानिकों ने की।

Hindustan 17-02-2025

किसान मेला | **कला व संस्कृति के समावेश से शाम को बनाया यादगार, पारंपरिक लोकगीत, शास्त्रीय नृत्य व संगीत, हास्य-व्यंग्य पर जमकर बजीं तालियां**

‘किसानों के विकास के बिना विकसित भारत की कल्पना बेमानी’

पूसा,निज संवाददाता। सांसद शांभवी चौधरी ने कहा कि किसान देश के विकास की रीढ़ है। किसानों के विकास के बगैर विकसित भारत की परिकल्पना संभव नहीं है। उन्हें गर्व है कि वे ऐसी सरकार के साथ कार्य कर रहे हैं। जो कृषि व किसानों के विकास के लिए प्राथमिकता के साथ कार्य करती है। इसमें कृषि विवि किसानों को तकनीकी तौर पर सशक्त कर रहा है।

जरूरत है किसानो की समस्या की जानकारी उपलब्ध कराने की। जिससे उसे संसद तक उठाकर निदान की दिशा में पहल की जा सके। वे रविवार को डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि में आयोजित तीन दिवसीय किसान मेला के दूसरे दिन किसानो व वैज्ञानिको को संबोधित कर रही थी। उन्होंने कहा कि उन्हें गर्व है कि वे कपूरी जी की धरती व देशरत्न राजेन्द्र बाबू के नाम से चर्चित कृषि विवि के क्षेत्र समस्तीपुर का प्रतिनिधित्व कर रही है। उन्होंने कहा कि किसानो को समृद्ध करने के लिए सरकार ने केसीसी योजना की राशि को 5 लाख तक किया है। इसके अलावा कृषि धन-धान्य योजना, ई-नाम योजना समेत दर्जनो योजनाएं चला रही है। कहा कि डिजिटल तरीके से किसानो को फायदा पहुंचाने में ई-नाम काफी लाभदायक होगा। उन्होंने कहा कि कृषि विवि व समस्तीपुर को सशक्त करने में वे हरसंभव प्रयास करेंगे। विवि के कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय ने कहा कि जलवायु अनुकूल खेती को बढ़ावा समय की मांग है। विवि इसका लाईव डेमोस्ट्रेशन दिखा रहा है। उन्होंने कहा कि वर्तमान में विवि मछली, मशरूम, मखाना, मशाला, मिलेट्स एवं मिडिया के क्षेत्र को गति देने में जुटा है। मिलेट्स के क्षेत्र में उत्पादन से लेकर मार्केट तक उपलब्ध करा रहा हैं उन्होंने कहा कि उत्पादो का वैल्यू चेन बनाकर कृषि क्षेत्र को गति देने में विवि तेजी से कार्य कर रहा हैं। निदेशक अनुसंधान डॉ.अनिल कुमार सिंह ने कहा कि विवि में 200 से अधिक परियोजनाओं पर कार्य हो रहा है। फसलो की पैदावार लगातार बढ़ रही हैं। स्वागत डीन सह निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ.मयंक राय, संचालन डॉ.मिनाक्षी द्विवेदी एवं धन्यवाद डॉ.आरके तिवारी ने किया। मौके पर समाजसेवी सायन कुणाल, सीबी रमण विवि के कुलपति डॉ.एमएल गौड, एमजीएफआरआई, मोतीहारी के निदेशक डॉ.एसके पूर्वे,कमांडेंट डॉ.गोविन्द सिंह भंडारी, कुलसचिव डॉ.मृत्युंजय कुमार, पूसा प्रखंड प्रमुख रविता तिवारी आदि मौजूद थे।

कृषि विवि में आयोजित किसान मेला में संबोधित करती सांसद शांभवी चौधरी।

किसान मेला में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में नृत्य प्रस्तुत करते कलाकार।

Hindustan 17-02-2025

किसान मेंले में मिथिला पेंटिंग ने मन मोहा

समस्तीपुर/पूसा (एसएनबी)। किसान मेला 20525 में नाबार्ड प्रायोजित अनमोल उपहार सेवा फाउंडेशन (औसेफा) के सहयोग से समस्तीपुर चीनी मिल चौक स्थित मिथिला ग्राम नाबार्ड रुरल मार्ट के स्टॉल पर मिथिला पेंटिंग एवं मिथिला पेंटिंग से सजे सामान लोगों को आकर्षित कर रहे है। मिथिला पेंटिंग कलाकार सौम्या सुमन एवं प्रेरणा कुमारी ने लोगों को मिथिला पेंटिंग युक्त साड़ी, सूट, दुपट्टा, फाईल, पर्स, रुमाल, बेडशीट, तकिया कवर एवं पेंटिंग के बारे में विस्तार से जानकारी दे रही है। इसके अलावे एफपीओ तथा एसएचजी सदस्यों द्वारा निर्मित शुद्ध सरसो तेल, हल्दी, हनी, सत्तु, उड़द बड़ी, अचार, मिलेट लड्डू आदि की भी विक्री हो रही है। मौके पर डीडीएम नाबार्ड अभिनव कृष्ण, संवर्धन संस्थान औसेफा के निदेशक देव कुमार, सेलको प्रबंधक यशवंत कुमार, विवके कुमार, लक्ष्मण सिंह आदि मौजूद थे।

नाबार्ड के स्टाल पर पेंटिंग कलाकार।

Rashtriya Sahara 17-02-2025

नवभारत फर्टिलाइजर एलएलपी ने किसानो को किया जागरूक

समस्तीपुर (एसएनबी)। राजेंद्र कृषि विश्वविद्यालय पूसा जिला समस्तीपुर के प्रांगण में आयोजित .षि मेला में नवभारत फर्टिलाइजर एलएलपी कंपनी के द्वारा स्टॉल लगाया गया। जिसमें कंपनी के वरिष्ठ सेल्स अधिकारी रविंद्र कुमार, सर्विस हेड सुमन कुमार एवं प्रणव कुमार उपस्थित थे। इस अवसर पर उन्होंने कीट व्याधियों से बचाते हुए जैविक खेती के गुर बताये। साथ ही प्रा.तिक मौसम अनुकूल खेती को अनिश्चित जलवायू में मृदा की उर्वरक क्षमता बचाते हुए अधिकतम फसल प्राप्त करने में अपने उत्पाद की उपयोगिता की जानकारी दी। इस क्रम में उन्हों ने जैविक खेती तथा कंपनी के जैविक उत्पाद विजया ग्रोमिन, विजेता, विंज्यम बीवी की जेम्स बॉन्ड आदि उत्पादों से होने वाले लाभ के बारे बताया। साथ ही उनके उपयोग से किस प्रकार मृदा का स्वास्थ्य बना रहता है इसकी विस्तृत जानकारी मेला में आए हुए किसान को दिया।

किसान को सम्मानित करते पदाधिकारी।

Rashtriya Sahara 17-02-2025

खबरें एक नजर में

किसानो को लुभा रही घरेलू तकनीक से बनी शिवम डेयरी की दही

समस्तीपुर/पूसा (एसएनबी)। दुग्ध उत्पादों में स्वाद एवं शुद्धता का प्रतीक के रूप में शिवम डेयरी के उत्पादों ने तेजी ग्राहकों को आकर्षित किया है। नाम बडे और दर्शन छोटे की तर्ज पर सुधा के उत्पादों की गुणवत्ता में आयी गिरावट ने गोदान एवं अन्य कंपनियों को बाजार में जगह बनाने का अवसर प्रदान किया है। उक्त बातें डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विष्व विद्यालय परिसर में आयोजित किसान मेले में आये ग्राहकों ने संवाददाता के एक प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा। जब संवाददाता ने सुधा के स्टॉल पर अपेक्षा शिवम डेयरी एवं अन्य स्टॉलों पर ग्राहकों की भीड होने का कारण एक ग्राहक से जानना चाहा था तो छूटते ही ग्राहकों ने कहा कि सुधा के उत्पादों में गुणवत्ता तो छोडिए स्वाद और शुद्धता की गारण्टी भी नहीं रही। दही में रसायनों का प्रयोग, पनीर एवं मिठाईयों के बिगडे स्वाद इसका प्रमाण है। दरअसल सुधा का सारा ध्यान सिर्फ दूध संग्रहण और विपणन में सिमट कर रह गया है। इस अवसर मौजूद शिवम डेयरी के मालिक राम सकल सिंह ने बताया कि बाजार में उपलब्ध दही में स्वभाविक गुण और स्वाद नहीं रहे, जिस कारण लोग अब दही खाने से परहेज करने लगे हैं। इसलिए बिलकुल घरेलू तकनीक से हम दही तैयार करते हैं। इसमें लकडी की आग पर दूध गर्म कर घरेलू जमावन की सहायता से दही तैयार की जाती है। श्री सिंह ने बताया कि विमुख हो रहे दही के शौकीनों को फिर से दही खाने की आदत लगाने के उद्देश्य से हम मिट्टी के बर्तन में दही लाये हैं। उन्होंने कहा कि 250 ग्राम, 500ग्राम, 1किलो, 5किलों एंव 8किलों के बर्तन में दही उपलब्ध है। इसके अलावा मिठाई, छाछ, लस्सी आदि भी अपने वास्तविक स्वाद और गुणवत्ता के कारण ग्राहको को पसंद आ रहे हैं।

शिवम डेयरी के स्टॉल पर दही का जायका लेते ग्राहक।

Rashtriya Sahara 17-02-2025

शिव शक्ति एग्रीटेक लिमिटेड ने किसानों को किया सम्मानित

समस्तीपुर (एसएनबी)। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विष्वविद्यालय द्वारा आयोजित तीन दिवसीय कृषि मेले में पेस्टीसाईड एवं फंगीसाईड बनाने वाली अग्रणी कंपनी षिव शक्ति एग्रीटेक लिमिटेड ने सर्विस मैनेजर सुजीत कुमार सिंह के नेतृत्व में अपनी उपस्थिति दर्ज करायी है। इस अवसर पर प्रगतिषील किसानों को उपहार एवं प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया। इस अवसर

किसान को सम्मानित करते पदाधिकारी।

पर आयोजित कार्यक्रम में किसानों को जागरूक करते हुए सर्विस मैनेजर श्री सिंह ने किसानों को बताया कि हमारे उत्पाद का उपयोग कर मृदा संरक्षण के साथ-साथ अपेक्षाकृत अधिक फसल प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि समय की मांग के अनुकूल किसानों को प्रा.तिक खेती को अपनाते हुए मृदा की उर्वरक क्षमता बढ़ाने की जरूरत है। लेकिन क्रमबद्ध तरीके से। शिव शक्ति के उत्पाद विनग्रोजी, खास धनराज, धरनी, भव्या, जुपिटर प्लस आदि खेतों के लिए संतुलित पोषण उपलब्ध कराते है जिससे मिट्टी की उर्वरा शक्ति भी बनी रहती है और किसानों को अपेक्षाकृति भरपूर पैदावार प्राप्त होता है। वहीं चीता, धनिक, ज्यूपिटर 5, का प्रयोग फसल को विभिन्न कीट व्याधियों से बचाता है। उन्होंने बताया कि जिस अनुपात में बढती आबादी के साथ कृषि योग्य भूमि का रकबा कम हो रहा है उससे आने वाले दिनों में किसानो की आय बढाने केलिए परंपरागत खेती से हटकर वाणिज्यिक खेती की ओर बढने की जरूरत है। ऐसे मे वानिकी की ओर किसान रूख कर सकते है। इसमें भी हमारे उत्पाद टिसु कल्चर्ड सागवान और महोगनी किसानों को पसंद आ रहे है। मौके पर कर्मचारी अभय रंजन, सुजीत कुमार ,रितेश कुमार, जयप्रकाश तिवारी मौजूद थे।

Rashtriya Sahara 17-02-2025

मशरूम उत्पादों ने बढाया मेले का जायका

मशरूम हब बना किसानों के आकर्षण का केन्द्र

किसानों ने सीखे मशरूम उत्पादन के गुर

समस्तीपुर/पूसा (एसएनबी)। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विष्वविद्यालय द्वारा आयोजित किसान मेंला में मशरूम मैन डॉ दयाराम के नेतृत्व में विभिन्न जिलों के मशरूम किसानों ने अपनी सहभागिता दर्ज कराई है। मशरूम हब में निपेन्द्र कुमार शाही, पुष्पा झा, रेखा देवी, रेखा सिंह, दीपक कुमार, रीता देवी सहित दर्जनों किसानों के द्वारा लगाये गये स्टॉलों पर मशरूम के विभिन्न किस्मों एवं मशरूम से बने दर्जनों उत्पादों ने भी किसानों को खूब रिझाया। वहीं दीपक कुमार के बटन मशरूम पकौडा, जीतेन्द्र राम का मशरूम पनीर पकौडा, रीता कुमारी का मशरूम मोमोज, प्रशान्त कुमार के मशरूम बिरयानी का भी किसानों ने जम कर लुत्फ उठाया। वहीं डॉ दयाराम के निर्देशन में बडी संख्या में किसानों ने मशरूम उत्पादन के गुर सीखे। इस अवसर पर मशरूम किसान मानिक चंद्र महतो के नेतृत्व में पुरूलिया से आयी मीरा प्रमाणिक, अलका महतो, शांतिराम गोराई, सोरिटा सोरेन, राम.ष्ण मल्लिक, बेलारानी महतो, सुलोचना टोकरी, सुभेंदु बास्की, सुनीता महतो, रीता महतो, जोनाकी मुर्मू, सूर्य प्रमाणिक, यमुना रानी महतो, बलराम महतो, प्रतिभा महतो, अपोलो महतो, सोमा महतो, फाल्गुनी हसदा, मणिमाला कर, परितोष महतो सहित करीब दो दर्जन महिला किसानों ने मशरूम पनीर बनाने का गुर सीखा। मशरूम विशेषज्ञ डॉ सुधा नंदनी ने ने ओयेस्टर मशरूम उत्पादन तकनीक एवं इसके उपयोगिता के बारे में लाईव प्रशिक्षण दिया। डॉ नंदनी ने बताया कि मषरूम बिना खेत की खेती है। स्वास्थ्य एवं स्वाद के साथ समृद्धि का बेहतर विकल्प बन चुका मषरूम किसानों की आय सिर्फ दो या चार गुनी नहीं दस गुनी बढा सकता है।

मशरूम पनीर निर्माण का प्रशिक्षण लेते प्रशिक्षु।

Rashtriya Sahara 17-02-2025

किसानों के सहयोग से हो सकता है आत्म निर्भर भारत निर्माण : कुलपति

तीन दिवसीय किसान मेले के दूसरे दिन स्थानीय सांसद ने किया उद्घाटन

पूसा (एसएनबी)। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय .षि विश्वविद्यालय के खेल मैदान में आयोजित तीन दिवसीय किसान मेला के दूसरे दिन किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि स्थानीय सांसद व कुलपति डॉ पीएस पाण्डेय सहित आगत अतिथियों ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस अवसर पर अपनें संबोधन में विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ पांडेय ने किसानों को संबोधित करते हुए शिक्षा शोध एवं अनुसंधन की जन्मस्थली पूसा के पौराणिक इतिहास से अवगत कराया। तदुपरांत उन्होंने ने मेले के थीम जलवायु अनुकूल .षि से विकसित भारत की ओर पर विस्तार से प्रकाश डाला। इस दौरान उन्होंने कहा कि देश की सम्पूर्ण अर्थ व्यवस्था की धूरी है कृषि। इसलिए किसानों के सहयोग से आत्म निर्भर भारत बनाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के शोध को किसानों तक सुगमता व सरलतापूर्वक पहुंचाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि मशरूम किसानों के आर्थिक स्थिति में बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। मशरूम के 52 उत्पाद है जो लोगों को पसंद आ रहे है। विगत दो सालों में मशरूम समोसा और मशरूम बिस्किट और मशरूम पनीर का पेटेंट हमें मिला है। मशरूम अचार, मशरूम भुजिया सहित कई उत्पादों का पेटेंट प्रक्रियाधीन है। वही मारीच धान को जी आईं टैग मिलने से उसके उत्पाद का मुल्य संवर्धन हुआ है। उन्होंने कहा कि शाही लीची के शहद के जीआईं टैग प्राप्त करने की दिशा में भी कार्य किया जा रहा है। 5 म पर

उद्घाटन करते सांसद, वीसी व अन्य।

विश्वविद्यालय का फोकस का जिक्र करते हुए उन्होंने बताया कि किसानों की समृद्धि केलिए मशरूम, मछली, मखाना, मसाला उत्पादन एवं मीडिया सेंटर को मजबूत बनाने की दिशा में हम काम कर रहे है। इससे किसानों की समृद्धि का मार्ग प्रशस्त होगा। इसके अलावा बेस्ट ऑफ द वेस्ट पॉलिसी के तहत हम गागर नींबु के छिलके से चाकलेट, तरबूज के छिलके से मुरब्बा आदि बनाने की दिशा में भी आगे बढ रहे है। इसके पुर्व कुलगीत प्रसारण, अतिथियों के स्वागत सम्मान एवं दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम के उद्घाटन की औपचारिकता के बाद निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ मयंक राय ने आगत अतिथियों का स्वागत किया। मौके पर सीबी रमण विवि के कुलपति डॉ एमएल गौड, आईसीआर एमजीएफआईआर मोतिहारी के डॉ एसके पुर्वे, गोविंद सिंह भंडारी, कुलसचिव डॉ मृत्युंजय कुमार सहित निदेशक अनुसंधान डॉ एके सिंह, जयकृष्ण झा, डॉ आरके तिवारी, भाजपा नेता अशोक पासवान, प्रखण्ड प्रमुख रविता तिवारी, कृष्णकुमार उर्फ मेघू, सहित सैकडों किसान वैज्ञानिक व छात्र उपस्थित थे। कार्यक्रम की संचालन मीनाक्षी द्विवेदी ने किया वही धन्यवाद ज्ञापन डॉ आर के तिवारी ने की।

Rashtriya Sahara 17-02-2025

मंत्री बोले- कृषि के पौराणिक पद्धतियों में बदलाव लाने की जरूरत

आज भू-जल को संरक्षित करने की जरूरत है : डॉ. राजभूषण

किसानों को संबोधित करते मंत्री डॉ. राजभूषण चौधरी.

कार्यक्रम को संबोधित करते वैज्ञानिक.

किसान मेला

- डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में किसान मेला का आयोजन

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित किसान मेला के दूसरे दिन के दूसरे सत्र को भारत सरकार के जल शक्ति राज्य मंत्री डॉ. राजभूषण चौधरी ने कहा सर्वप्रथम भू-जल को संरक्षित करने की जरूरत है. जलवायु परिवर्तन विश्व स्तर पर एक सच्चाई है. इससे भारत सहित सम्पूर्ण संसार प्रभावित है. कृषि के पौराणिक पद्धतियों में बदलाव लाने की जरूरत है. 2047 विकसित भारत के लिए प्रति व्यक्ति छह गुना अधिक आय की प्राप्ति होनी चाहिए, जो खासकर कृषि के लिए बहुत बड़ी चुनौती है. केंद्र सरकार कृषि को बेहतर रूप देने में जुटी है. इसी क्रम में गंगा सहित अन्य सहायक नदियों की सफाई की व्यवस्था सुनिश्चित की जा रही है. खेत का पानी खेत में योजना को संचालित कर भू-जल का रक्षा करने की दिशा में जोरदार पहल किया जा रहा है. पानी के कम आवश्यकता वाले प्रभेदों का चयन करने की जरूरत है. विवि की ओर से क्षेत्रीय तकनीकों के अनुसंधान पर कार्य करने की जरूरत है. इससे पहले स्वागत भाषण प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ. मयंक राय ने किया. वैशाली विश्वेश्वरैया विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. एमएल गोंड ने कहा कि देश के कृषि क्षेत्र में परिवर्तन की लहर दौर गई है. एक व्यक्ति के लिए प्रकृति ने पर्याप्त पानी की व्यवस्था दी है. पानी का संचय जरूरी है. प्रकृति प्रदत सभी संसाधन आपस में जुड़े हुये हैं. संचालन वैज्ञानिक डॉ. कुमारी अंजनी कर ही थी. वहीं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. फूलचंद ने किया.

मूल्यवर्धित पदार्थों के भंडारण की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए : वैज्ञानिक

पूसा .डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के अंतर्गत परिकटन अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी परियोजना, प्रसंस्करण एवं खाद्य अभियांत्रिकी महाविद्यालय के माध्यम से आयोजित एक दिवसीय प्रशिक्षण सह जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इसमें मुख्य रूप से कटाई उपरांत प्राथमिक प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन पर चर्चा हुई. इस कार्यक्रम में उपस्थित डॉ. राम सुरेश ने आयोजित कार्यक्रम में विभिन्न गांवों सतमलपुर, संकरपुर, सेदपुर, मोहिउद्दीनपुर, बलाही तथा हांसा से मेला में आये किसानों की महिला समूह से संबंधित किसान को विशेष रूप से कैसे कटाई उपरांत सभी अनाज, फल सब्जी खासकर आलू प्रसंस्करण, धान की कुटाई के लिए उपयोग की जाने वाली मशीन के बारे में बताया. डॉ. देवेंद्र कुमार विभागाध्यक्ष ने परियोजना के अंतर्गत मूल्यवर्धित पदार्थों एवं भंडारण पर विस्तृत जानकारी दी. डॉ. विशाल कुमार, वरीय वैज्ञानिक एवं मुख्य अन्वेषक ने परियोजना के अंतर्गत चल रहे योजनाओं तथा मूल्यवर्धित प्रोडक्ट के बारे में किसानों को जानकारी दी. डॉ. दिनेश रजक वरीय वैज्ञानिक एवं सह परियोजना अन्वेषक, ने मूल्यवर्धित उत्पाद तथा फलों एवं सब्जियों के बारे में भंडारण, आलू से चिप्स बनाने की तरीका के बारे में बताया. अनाज, फल एवं सब्जी को भंडारण, अनाज लाबा यंत्र और मक्के का भूटा पकाने के यंत्रों की विस्तृत जानकारी दी गयी. तेल निष्कासित यंत्र तथा ग्रेन मिलिंग के बारे में तथा अनाज भंडारण के लिए हेरमेटिक बैग (वायु रुद्ध) भंडारण जानकारी दी गयी.

प्रभात खबर
Tuesday, February 18, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67b372c4d50ffc68b0ff8672

विकसित भारत बनाने में किसानों की भूमिका महत्वपूर्ण : कुलपति

कार्यक्रम में मौजूद लोग .

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित खेल ग्राउंड में लगे तीन दिवसीय किसान मेला 2025 सोमवार को पुरस्कार वितरण के साथ सम्पन्न हुआ. अध्यक्षता करते हुए कुलपति डॉ. पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने कहा कि विकसित भारत बनाने में किसानों की महत्वपूर्ण भूमिका है. किसान मेला को प्रमाण देने की जरूरत नहीं है. समापन सत्र के अवसर पर पंडाल में मौजूद किसानों का जत्था गवाह बनकर इतिहास लिखने का भलीभांति कार्य किया है. वैज्ञानिकों का सोच मेले में प्रदर्शित किया गया है. मेला में अधिष्ठाता, निदेशक, वैज्ञानिक तथा कर्मचारी सहित छात्र-छात्राओं की सहभागिता अकल्पनीय रही है. जननायक भारत रत्न कर्पूरी ठाकुर के पुण्यतिथि के अवसर पर माल्यार्पण कर श्रद्धा सुमन अर्पित की गयी. जीविका के कार्यों का सराहना किया गया. किसानों के भविष्य संवारने की दिशा में विवि अपनी भूमिका निभा रहा है. किसान मेला में शैक्षणिक गतिविधियों से जुड़े दर्जनों तकनीकों की प्रस्तुति ने चारचांद लगा दिया. पुरस्कार लेने वालों में बेगूसराय की मुन्नी कुमारी एवं गोपाल, दरभंगा जाले की पार्वती देवी एवं रामबाबू, गोपालगंज की रेखा देवी एवं इंदर कुशवाहा, पिपराकोठी की आशा देवी एवं राजेश कुमार यादव, परसौनी के उपेन्द्र प्रसाद एवं शाहिना देवी, मधुबनी सुखैत की शिला देवी एवं शक्तिनाथ झा, सरैया की चुन्नी देवी एवं राजेश कुमार, तुर्की की नीतू देवी एवं अनिल कुमार सहनी, बिरौली की रीता देवी एवं लक्ष्मण सिंह, लादा की नीलम कुमारी एवं शिवनारायण, सारण की रामलगण एवं कलावती देवी, सिवान की शिवप्रसाद सहनी, शिवहर की आनंदी देवी एवं सुनील कुमार, वैशाली की नीलम सहनी एवं विजय कुमार साह, माधोपुर के हरेंद्र ठाकुर एवं राम आधार प्रसाद, नरकटियागंज की सुमन देवी एवं विजय गिरी के साथ कृषि विज्ञान केंद्र के किसान पुरस्कृत हुए. संचालन डॉ. मीनाक्षी द्विवेदी कर रही थी. धन्यवाद ज्ञापन वैज्ञानिक डॉ. विनिता सतपथी ने किया. मौके पर सूचना पदाधिकारी डॉ. कुमार राज्यवर्धन सहित अधिष्ठाता, निदेशक वैज्ञानिक कर्मचारी एवं छात्र छात्राएं के अलावे किसानों का जत्था मौजूद थे.

प्रभात खबर
Tuesday, February 18, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67b372c4d50ffc68b0ff8672

भास्कर 18/2/25 पेज 14

कृषि मेला • डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा में आयोजित तीन दिवसीय मेले का समापन

किसान मेले के आयोजन से विकसित भारत की संकल्पना को मिलेगी मदद : कुलपति

भास्कर न्यूज़ | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के परिसर में जलवायु अनुकूल कृषि से विकसित भारत की ओर के विषय पर आयोजित हुआ तीन दिवसीय किसान मेला सोमवार शाम संपन्न हो गया। इस अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि समापन समारोह को संबोधित करते हुए पुसा विवि के कुलपति डॉ. पीएस पांडे ने कहा कि विवि में पूरी तरह से सफल हुआ यह किसान मेला किसानों के लिए एक वरदान साबित होगा। कहा कि इस तीन दिवसीय मेले को हमारे विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक, छात्र, कर्मी आदि ने अपनी लगन व निष्ठा से संचालित कराया है। उन्होंने किसानों से कहा कि मेले में प्रदर्शित किए गए आधुनिकतम तकनीक का प्रयोग कर किसान प्रगतिशील किसान बन सकते हैं। उन्होंने कहा कि इस किसान मेले से विकसित भारत की संकल्पना में काफी मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि किसान मेले के अंतिम दिन जीविका दीदियों ने विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेकर महिला सशक्तिकरण एवं कृषि के क्षेत्र में बढ़ रही महिलाओं की सहभागिता को प्रदर्शित किया। उन्होंने कहा कि किसान मेले में कृषि शिक्षा से जुड़े छात्रों ने तमाम तरह की जानकारी विभिन्न स्टॉलों के माध्यम से हासिल की हैं। मंच संचालन डॉ. मीनाक्षी द्विवेदी व धन्यवाद ज्ञापन डॉ. विनीता सत्पति ने किया। मौके पर निदेशक प्रशार शिक्षा डॉ. मयंक राय, डॉ. उमाकांत बेहरा, डॉ. एके सिंह, अधिष्ठाता डॉ. उषा सिंह, डॉ. अमरेश चंद्रा थे।

नई तकनीक की दी जानकारी : मेले में कृषि यंत्रों की हुई खरीदारी

मेले के समापन समारोह को संबोधित करते कुलपति।

मेले में मौजूद किसान व वैज्ञानिक।

किसान मेले में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले किसान व स्टॉल संचालकों को किया गया पुरस्कृत

पूसा विवि के परिसर में सम्पन्न हुए किसान मेला के अंतिम दिन कुलपति डॉ. पीएस पांडेय सहित अन्य अतिथियों ने फसल, उत्पाद एवं कृषि तकनीक सहित कृषि से जुड़े अन्य क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले कई किसान व संस्थान के प्रतिनिधियों को पुरस्कृत किया।किसान मुन्नी कुमारी, गोपाल कुमार, पार्वती देवी एवं रामबाबू को कस्टम हायरिंग सेंटर के क्षेत्र में बेहतर कार्य करने के लिए कुलपति ने मेडल व प्रस्सति पत्र देकर सम्मानित किया। इसके अलावे किसान इन्द्रा कुमारी, आशा चौधरी, राजेश कुमार एवं बेहतर स्टॉल संचालकों में सुधा डेयरी को प्रथम, शिवम डेयरी को द्वितीय एवं आमी डेयरी को तृतीय पुरस्कार दिया गया। इसके अलावे भी करीब दो दर्जन से अधिक स्टॉलों को बेहतर प्रदर्शन करने के लिए सम्मानित किया गया। इन सबके अलावे किसान चाची को प्रथम, कुशवाहा नर्सरी को द्वितीय एवं उद्योग विभाग को तृतीय पुरस्कार दिया गया। फार्म मेंशनरी में संकल्प इंटरप्राइजेज को प्रथम पुरस्कार, सिमिट बीसा को प्रथम, तिरहुत कृषि महाविद्यालय को प्रथम, केवीके बिरौली को प्रथम आदि को बेहतर स्टॉल संचालन के लिए प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार दिया गया।

भास्कर 18/2/25 पेज 16

कार्यक्रम • जल शक्ति राज्य मंत्री ने कृषि विवि पूसा में कार्यक्रम को किया संबोधित

विकसित भारत बनाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति की आय को छह गुना बढ़ाने की जरूरत : मंत्री

भास्कर न्यूज | पूसा

भारत सरकार के जल शक्ति राज्य मंत्री डॉ. राज भूषण चौधरी कृषि विवि पूसा में चल किसान मेले में रविवार देर शाम पहुंचे। मेले में पहुंचने के उपरांत पूसा विवि के कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने राज्य मंत्री को शॉल, पुष्पगुच्छ, मोमेंटो आदि देकर उन्हें सम्मानित किया। इस अवसर पर किसान मेले में मौजूद किसान व कृषि वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए जल शक्ति राज्य मंत्री डॉ. राज भूषण चौधरी ने कहा कि खेती- किसानी किसी भी देश की आर्थिक व्यवस्था की रीढ़ होती है। कृषि और किसानों का विकास किये बगैर विकसित भारत की कल्पना नही की जा सकती है।

पुस्तकों का विमोचन करते केंद्रीय जल शक्ति राज्य मंत्री व अन्य।

उन्होंने कहा कि केंद्र व राज्य सरकार किसानों के लिए कई तरह की योजनाएं चला रही है। इन योजनाओं का लाभ किसानों को उठाना चाहिए। उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन एक ऐसी सच्चाई है जिसे आज बखूबी महसूस किया जा रहा है। जलवायु परिवर्तन के कारण आज गर्मी दिन ब दिन बढ़ती जा रही है तथा भूजल का स्तर लगातार गिरता जा रहा है। इस स्थिति में कृषि वैज्ञानिकों को कृषि के पद्धति को बदलने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि विकसित भारत के लिए यहां के प्रत्येक व्यक्ति की आय को छः गुना अधिक बढ़ाने की जरूरत है। यह विषय हमसबों के लिए एक बहुत बड़ा चैलेंज है। उन्होंने कहा कि किसानों को कृषि वैज्ञानिकों के सलाह को अपनाकर कम सिंचाई वाले फसलों की खेती को करने की जरूरत है। कार्यक्रम के दौरान मंत्री ने कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली सहित अन्य केवीके से जुड़े पुस्तकों का विमोचन भी किया। कार्यक्रम से पूर्व मंत्री ने कुलपति के साथ किसान मेले में लगाएं गए तमाम स्टॉल का भ्रमण भी किया। रात्रि में मंत्री ने किसान मेले में चल रहे कवि सम्मेलन का भी आनंद उठाया। मौके पर डॉ. अमरेश चंद्रा, डॉ. पीपी श्रीवास्तव, डॉ. मयंक राय, डॉ. आरके तिवारी, डॉ. एमएल मीना, डॉ. फूलचंद, डॉ. आरके झा आदि मौजूद थे।

जलवायु परिवर्तन को देखकर कृषि पद्धति को विकसित करें विज्ञानी : मंत्री

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा में किसान मेले के अंतिम दिन केंद्रीय जलशक्ति राज्यमंत्री डा. राजभूषण चौधरी ने लिया जायजा

संवाद सहयोगी, जागरण • पूसा : भारत सरकार के जलशक्ति राज्य मंत्री डा. राजभूषण चौधरी कृषि विश्वविद्यालय पूसा में चल रहे किसान मेले में रविवार देर शाम पहुंचे। मेले में मौजूद किसान व कृषि विज्ञानियों को संबोधित करते हुए जल शक्ति राज्य मंत्री डा. राज भूषण चौधरी ने कहा कि खेती-किसानी किसी भी देश की आर्थिक व्यवस्था की रीढ़ होती है। कृषि और किसानों का विकास किए बगैर विकसित भारत की कल्पना नही की जा सकती है। उन्होंने कहा कि केंद्र व राज्य सरकार किसानों के लिए कई तरह की योजनाएं चला रही है। इन योजनाओं का लाभ किसानों को उठाना चाहिए। उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन एक ऐसी सच्चाई है जिसे आज बखूबी महसूस किया जा रहा है। जलवायु परिवर्तन के कारण आज गर्मी दिन ब दिन बढ़ती जा रही हैं तथा भूजल का स्तर लगातार गिरता जा रहा है। इस स्थिति में कृषि वैज्ञानिकों को कृषि के पद्धति को बदलने की जरूरत हैं। उन्होंने कहा कि विकसित भारत के लिए यहां के प्रत्येक व्यक्ति की आय को छः गुना अधिक बढ़ाने की जरूरत हैं। यह विषय हमसबों के लिए एक बहुत बड़ा चैलेंज है।

उन्होंने कहा कि किसानों को कृषि वैज्ञानिकों के सलाह को अपनाकर कम सिंचाई वाले फसलों की खेती को करने की जरूरत है। कार्यक्रम के दौरान मंत्री ने कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली सहित अन्य केवीके से जुड़े पुस्तकों का विमोचन भी किया। कार्यक्रम से पूर्व मंत्री ने कुलपति के साथ किसान मेले में लगाएं गए तमाम स्टाल का भ्रमण भी किया।

रात को मंत्री ने किसान मेले में चल रहे कवि सम्मेलन का भी आंनद उठाया। मौके पर डा. अमरेश चंद्र, डा. पीपी श्रीवास्तव, डा. मयंक राय, डा. आरके तिवारी, डा. एमएल मीना, डा. फूलचंद आदि मौजूद रहे।

किसान मेला को संबोधित करते जलशक्ति राज्यमंत्री व अन्य अतिथि • जागरण

मिथिला पेंटिंग युक्त साड़ियों की भी रही डिमांड

संस. जागरण • पूसा : किसान मेला में मिथिला ग्राम नाबार्ड रुरल मार्ट द्वारा स्टाल लगाया गया। इसकी मिथिला पेंटिंग लोगों को खूब आकर्षित करती रही। कलाकार प्रेरणा कुमारी व सौम्या सुमन लोगों को मिथिला पेंटिंग युक्त उत्पाद साड़ी, सूट, दुपट्टा, शल, पाग, पर्स, रुमाल, थैला, शर्ट, कुर्ता एवं पेंटिंग की खासियत के बारे में जानकारी दी। मौके पर डीडीएम नाबार्ड अभिनव कृष्ण, अनमोल उपहार फाउंडेशन के निदेशक देव कुमार आदि मौजूद रहे।

किसान मेला में मिथिला पेंटिंग का लगाया गया स्टाल • जागरण

किसान ही साकार करेंगे विकसित भारत की संकल्पना

संवाद सहयोगी, जागरण • पूसा : डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के खेल मैदान में आयोजित तीन दिवसीय किसान मेला का समापन सोमवार की शाम हो गया। कुलपति डा. पीएस पांडेय ने कहा कि किसानों के लिए यह मेला माल का स्वरूप बना हुआ था। एक ही प्रांगण में किसानों के लिए उद्योगकर्मी, विज्ञानी, बैंक सहित किसानों से जुड़े सभी संसाधनों की उपलब्धता थी। कई किसानों ने इस मेले में कृषि यंत्र की खरीदारी की। इससे किसानों को भविष्य में खेती बारी के कार्य में काफी सहुलियत मिल सकेगी। कुलपति ने कहा कि कृषि से जुड़े उच्च शिक्षा के लिए छात्रों के प्रतिभा में निखार लाने की जरूरत है। विकसित भारत की संकल्पना किसानों के सहयोग से मिलेगा। इस दौरान फसल एवं तकनीक सहित अन्य क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने

तीन दिवसीय कृषि मेला संपन्न उत्कृष्ट प्रतिभागियों को किया गया पुरस्कृत, कई किसानों ने मेले में की कृषि यंत्रों की खरीदारी

वाले किसान व संस्थान को पुरस्कृत किया गया। जीविका से जुड़ी महिलाओं ने महिला सशक्तिकरण का कृषि के क्षेत्र में सहभागिता को प्रदर्शित किया। कृषि शिक्षा से जुड़े विद्यालय के छात्रों ने जानकारी हासिल की। फूल, पशुधन, पक्षियों बीज, दलहन, सहित अन्य कृषि क्षेत्र से जुड़े तकनीक को प्रदर्शित किया गया। केभीके से जुड़े महिला पुरुष किसानों को पुरस्कृत किया गया। इसमें मुन्नी कुमारी, गोपाल कुमार, पार्वती देवी, रामबाबू को कस्टम हायरिंग सेंटर, के लिए, इन्द्रा कुमारी, आशा चौधरी, राजेश कुमार किसानों व शिवम् डेयरी सहित अन्य क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन

उत्कृष्ट किसानों को पुरस्कार प्रदान करते अतिथि • जागरण

को लेकर पुरस्कृत किया। संचालन डा. मीनाक्षी द्विवेदी ने एवं धन्यवाद ज्ञापन डा. विनिता सतपथी ने किया। निदेशक प्रसार शिक्षा डा. मयंक राय, निदेशक शिक्षा डा. उमाकांत बेहरा, निदेशक अनुसंधान डा. एके सिंह,अधिष्ठाता डा. उषा सिंह, डा. अमरेश चंद्रा, डा. पीपी श्रीवास्तव, डा. आरके झा, डा. आरके तिवारी उपस्थित रहे।

मखाना की पापिंग तकनीक से अवगत हुए किसान

संस. जागरण • पूसा : जलवायु अनुकूल कृषि से विकसित भारत की ओर की थीम पर डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा में आयोजित किसान मेला में कृषि विज्ञान केन्द्र, जाले, दरभंगा ने सजीव और प्रयोगात्मक प्रदर्शनी इकाइयों के साथ – साथ दरभंगा जिला के विभिन्न प्रखंडों के किसानों के साथ हिस्सा लिया। सजीव प्रदर्शनियों में किसानों के आकर्षक का केंद्र मखाना की पापिंग तकनीक लगी। इसमें कृषि विज्ञान केन्द्र की प्रदर्शनी स्टाल में मखाना को एकत्रीकरण से लेकर सुखाने एवं उसके पश्चात पुरानी एवं नवीन दोनों पद्धतियों से पापिंग करके प्रयोगात्मक तरीका दिखाया गया। सजीव प्रदर्शनियों में वर्टिकल फॉर्मिंग माडल, जलभराव क्षेत्र में मखाना एवं सिंघाड़ा का उत्पादन करके आय

मखाना कैसे तैयार क्या चाहता है उसे प्रदर्शित करते • जागरण

उपार्जन माडल, आयुर्वेदिक पौधा माडल, मिथिला पेंटिंग, हर्बल गुलाल, वर्मीवाश माडल, वर्मीकंपोस्ट, मक्का सेलर, करक्यूमिन से भरपूर हल्दी 'राजेन्द्र सोनिया', सतावर, मखाना प्रजाति 'स्वर्ण वैदेही', कांटा रहित सिंघाड़ा प्रजाति 'स्वर्ण लोहित', एजोला, हाइड्रोपोनिक मॉडल एवं प्राकृतिक खेती के विभिन्न तत्व जैसे बीजामृत, जीवामृत, ब्रह्मास्त्र, नीमास्त्र एवं आग्नेयास्त्र का भी डेमो यूनिट प्रदर्शनी में लगाया गया।

कृषि संस्थान व किसान किए गए पुरस्कृत

संस. जागरण • पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित किसान मेले में अच्छे स्टाल एवं किसानों को जानकारी देने के लिए तिरहुत कृषि महाविद्यालय को प्रथम पुरस्कार, पशु उत्पादन शोध संस्थान पूसा को द्वितीय पुरस्कार एवं पोषण अनाज केंद्र एवं प्राकृतिक खेती विद्यालय को तृतीय पुरस्कार दिया गया। राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय संस्थानों में सीमिट बीसा संस्थान को प्रथम एवं द्वितीय स्थान मक्का अनुसंधान क्षेत्रीय स्टेशन बेगूसराय को एवं तृतीय स्थान एनआरसी मखाना को दिया गया। निजी कंपनी में शिवशक्ति एग्रीटेक लिमिटेड को द्वितीय, मशीनरी में मां भगवती सेवा केंद्र कैलाश सुगर कैंपस को तृतीय एवं संकल्प इंटरप्राइजेज को प्रथम

मेला में कुत्ता प्रदर्शनी • जागरण

पुरस्कार दिया गया। बीज एवं प्लाटिंग मशीनरी में किसान चाची को प्रथम पुरस्कार कुशवाहा नर्सरी को द्वितीय पुरस्कार दिया गया। खाद एवं उर्वरक में इफको को प्रथम पुरस्कार एवं शिव शक्ति सहित तीन कर्मियों को द्वितीय पुरस्कार मिला। कुत्ता प्रदर्शनी में प्रथम पुरस्कार में सूरज कुमार द्वितीय पुरस्कार डॉ सतीश कुमार सिंह एवं तृतीय पुरस्कार कुमारी कामिनी को मिला। कृषि विज्ञान केंद्र से जुड़े किसानों में बेगूसराय कृषि विज्ञान केंद्र से मुन्नी कुमारी एवं गोपाल दास दरभंगा से, पार्वती देवी, रामबाबू गोपालगंज से, रेखा कुमारी, इंद्र कुशवाहा पूर्वी चंपारण से, आशा चौधरी राजेश कुमार पू.चंपारण से उपेंद्र प्रसाद मधुबनी से शीला देवी शक्ति नाथ झा मुजफ्फरपुर से चुन्नू देवी राकेश कुमार मिंटू कुमारी अनिल कुमार समस्तीपुर से रीता देवी लक्ष्मण सिंह शिवनारायण से रामलगन यादव कलावती देवी, शिवहर से आनंदी देवी, सुनील कुमार वैशाली से, नीलम देवी, विजय कुमार प चंपारण से, सीमा देवी, रामाधार प्रसाद, सुमन देवी, विजय गिरी को कुलपति एवं विश्वविद्यालय के तीन डायरेक्टर के द्वारा पुरस्कृत किया गया।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा अगले 16 फरवरी तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार में अगले चार दिनों तक मौसम साफ एवं शुष्क रहेगा। इस बीच तापमान में बढ़ोतरी होगी। विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि 8 से 10 किलोमीटर की रफ्तार से पछुआ हवा भी चलेगी।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
18 फरवरी	26.0	12.0
19 फरवरी	26.6	12.0
दरभंगा		
18 फरवरी	26.6	12.0
19 फरवरी	26.6	12.5
पटना		
18 फरवरी	27	13.0
19 फरवरी	27	13.0

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran
18-02-2025

कृषि विवि के किसान मेले में केन्द्रीय जलशक्ति मंत्री ने लोगों को किया संबोधित

कृषि क्षेत्र के सहयोग से ही देश बन सकेगा विकसितः मंत्री

कृषि मेला

पूसा, निज संवाददाता। केंद्रीय जलशक्ति राज्य मंत्री डॉ राजभूषण चौधरी ने कहा कि जलवायु परिवर्तन का असर अब प्रत्यक्ष रूप से दिखने लगा है। ऐसे में किसान को कृषि की नई वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाने की जरूरत है। जिससे कम लागत में अच्छी आमदनी ली जा सके।

इस दिशा में सरकार हर संभव प्रयास कर रही है। लेकिन इसकी शत प्रतिशत सफलता किसानों के जागरूक होने पर निर्भर है। वे रविवार की देर शाम डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि परिसर में आयोजित किसान मेला के दूसरे दिन सभा को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि ग्राउंड वाटर में लगातार हो रही कमी को कम उपयोग कर एवं रिचार्ज कर पूरा किया जा सकता है।

इसके लिए सामूहिक प्रयास कर सिंचाई की नई तकनीकों का इस्तेमाल पर बल देने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि सरकार की अटल भूजल

सोमवार को राजेंद्र प्रसाद कृषि विवि में पुस्तक का विमोचन करते केन्द्रीय मंत्री, कुलपति और अन्य पदाधिकारी।

- मेले में कई पुस्तकों का किया गया विमोचन
- किसानों की आय बढ़ाने पर दिया गया जोर

योजना, पीएम कृषि सिंचाई योजना जैसी कई योजनाएं किसानों को संजीवनी का कार्य करेगा। उन्होंने कहा कि कई राज्यों में लोग ग्राउंड वाटर रिचार्ज के लिए स्ट्रक्चर बना रहे है। कई राज्यों में तो यह जनआंदोलन का रूप ले चुका है। यह ग्राउंड वाटर को इम्प्रूव करने में बेहतर पहल है। उन्होंने कहा वर्ष 2047 तक देश को विकसित भारत बनाने के लिए सकल व्यक्ति आय छह गुणा करना होगा। इसमें कृषि क्षेत्र की अहम भूमिका होगी। इस दौरान सीबी रमण विवि, वैशाली के कुलपति डॉ.एमएल गौड ने कहा कि प्राकृतिक संसाधनो का समुचित इस्तेमाल जरूरी है। जिसका दूरगामी परिणाम देखने को मिलेगा। विवि के कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय ने विवि की उपलब्धियो की चर्चा करते हुए आगामी योजनाओं पर विस्तार से चर्चा की। स्वागत निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ.मयंक राय, संचालन डॉ.कुमारी अंजनी एवं धन्यवाद डॉ.फूलचंद ने किया। मौके पर कुलसचिव डॉ.मृत्युंजय कुमार, डीन, डॉ.पीपी श्रीवास्तव, डॉ.पीपी सिंह, डॉ.अमरेश चन्द्रा, डॉ.उषा सिंह आदि मौजूद थे। इस दौरान कई पुस्तकों का विमोचन किया गया।

सोमवार को मेले में मेडिकल जांच करती मेडिकल टीम।

मशरूम, डेयरी, मछली व उद्यान की स्टॉल पर भीड़

पूसा, निज संवाददाता। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि में आयोजित तीन दिवसीय किसान मेला के दौरान मशरूम, उद्यान प्रदर्शनी, डेयरी व मछली उत्पाद समेत अन्य स्टॉल पर गजब की भीड़ रही।

सबसे अधिक भीड़ कृषि यंत्र, मशरूम व्यंजन, मछली व्यंजन, डेयरी उत्पाद, उद्यानिक फसलो के अलावा घरेलू सामान की दुकानों पर दिखी। मेले में दशरथ प्रसाद सिंह ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन, मुसहरी मुजफ्फरपुर के तत्वाधान मुफ्त मेडिकल कैम्प एवं जांच शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें मेला में आए किसानों का स्वास्थ्य जांच एवं मुफ्त दवा वितरित की गई। वहीं धानुका एग्रीटेक लि के स्टॉल पर एरिया मैनेजर मनीष कुमार व बीडीओ अनुभव शुक्ला के नेतृत्व में कीट प्रबंधन खरपतवार नियंत्रण पर किसानो को जानकारी दी गई। वहीं आईटीसी लिं कंपनी के स्टॉल पर कार्यक्रम पदाधिकारी अंकिता के नेतृत्व में किसानों को कृषि की जानकारी उपलब्ध कराई जा रही थी।

नर्सरी के स्टालों पर पौधों की लगातार बढ़ रही मांग

पूसा। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि में आयोजित तीन दिवसीय किसान मेले में नर्सरी के स्टॉलो पर लगी भीड़ से उद्यानिकी फसलो के प्रति किसान के रुझान को दर्शाता है। मेले में करीब दर्जन भर नर्सरी के स्टॉल लगाये गये हैं। इस दौरान प्रायः दुकानों पर लोगों की गजब की भीड़ देखने को मिल रही है।

सामूहिक प्रयास से किसान मेला हुआ सफलः कुलपति

पूसा, निज संवाददाता। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि में जारी तीन दिवसीय किसान मेला सोमवार की शाम संपन्न हो गया। इस दौरान कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय ने मेला की उपलब्धियों व अनुभवो को साझा करते हुए कहा कि विवि टीम के सामुहिक प्रयास से मेला शत-प्रतिशत सफल रहा। इस दौरान विवि से जुड़े कृषि विज्ञान केन्द्र क्षेत्र के ढ़ाई दर्जन से अधिक प्रगतिशील कृषको को कुलपति ने सम्मानित किया। सम्मानित होने वाले कृषको में बेगूसराय के मुन्नी कमारी, गोपाल कुमार, दरभंगा के पार्वती देवी, रामबाबू कुमार, गोपालगंज के रेखा कुमारी, इन्द्रप्रकाश कुशवाहा, पूर्वी चंपारण के आशा चौधरी, राजेश कुमार यादव, उपेन्द्र प्रसाद, साहिबा देवी, मधुबनी की शीला देवी, शक्तिनाथ झा, मुजफ्फरपुर के चुन्नू देवी, राकेश कुमार, नीतू कुमारी, अनिल कुमार सहनी, समस्तीपुर की रीता देवी, लक्ष्मण सिंह, नीलम कुमारी, शिवनारायण प्रसाद, सारण के राम लगन यादव, कलावती देवी, सीवान के शिव प्रसाद सहनी, शिवहर के आनंदी देवी, पश्चिम चंपारण की सीमा देवी, रामाधार प्रसाद, हरेन्द्र ठाकुर, सुमन देवी, विजय गिरी शामिल हैं। स्वागत डीन डॉ.मयंक राय, संचालन डॉ.मिनाक्षी द्विवेदी, डॉ.आरके तिवारी एवं धन्यवाद डॉ.विनिता शतपति ने किया।

फसल उत्पादों का मूल्य संवर्धन समय की मांगः डीन

कृषि विवि

पूसा, निज संवाददाता। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि से जुड़े कृषि अभियंत्रण एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के डीन डॉ.राम सुरेश ने कहा कि कृषि के बदलते परिवेश में कृषि को लाभकारी बनाना चुनौती है। ऐसे में इसके उत्पादन से लेकर भंडारण व मार्केटिंग में वैज्ञानिक तकनीकों का इस्तेमाल लाभदायक होगा।

इस दिशा में विवि लगातार ज्ञान देने का प्रयास कर रहा है। जरूरत है तकनीको को अपनाकर खेती को बढ़ावा देने की। वे महाविद्यालय के सभागार में कृषकों को संबोधित कर रहे थे। मौका था परिकटन अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी परियोजना के तहत

- कृषि अभियंत्रण कॉलेज में प्रशिक्षण आयोजित
- अनाजों के भंडारण के बारे में दी गई जानकारी

किसानो को कटाई उपरांत अनाजों के रखरखाव के दौरान नुकसान को कम करने को लेकर आयोजित प्रशिक्षण सह जागरूकता कार्यक्रम के मौके पर बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय कृषि को व्यवसाय के रूप में कार्य करने का है। जिससे कृषि को लाभकारी बनाया जा सकता है। उन्होंने किसानो से कहा कि वे अपने कृषि उत्पादो का प्रसंस्करण व मूल्य संवर्धन कर मार्केट तक ले जाये। इसमें समूह बनाकर कार्य करना लाभकारी साबित होगा। मौके पर डॉ.विशाल कुमार ने कहा कि इस

कृषि विवि में संबोधित करते डीन डॉ.राम सुरेश व अन्य।

योजना के तहत सरकार से मिलने वाले लाभ से किसानो को अवगत कराया। डॉ.दिनेश रजक ने प्रशिक्षण के महत्वों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने अनाज के भंडारण के लिए हेरमेटिक बैग (वायु रुद्ध) का उपयोग करने पर बल दिया। परियोजना अन्वेषक ई.अनुपम अमिताभ ने संचालन करते हुए, मकई निष्कासन यंत्र के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

Hindustan 18-02-2025

शिव शक्ति एग्रीटेक लिमिटेड मुजफ्फरपुर को मिला द्वितीय पुरस्कार

समस्तीपुर (एसएनबी)। शिव शक्ति एग्रीटेक लिमिटेड मुजफ्फरपुर को डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित किसान मेला 2025 में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया। जोनल रिक्रूटमेंट प्रबंधक संतोष कुमार झा के निर्देशन में शिवशक्ति एग्रीटेक लिमिटेड ने इस मेले में किसानों को प्राकृतिक खेती को अपनाते हुए मृदा की उर्वरक क्षमता बढ़ाने और आवश्यकता अनुसार फसल प्राप्त करने के लिए जागरूक किया। इस दौरान सर्विस मैनेजर सुजीत कुमार सिंह ने कहा कि रासायनिक सामग्री का प्रयोग

प्रमाण पत्र के साथ पदाधिकारी।

एक क्रम बद्ध तरीके से कम करते हुए जैविक खेती करने से मिट्टी की उर्वरा शक्ति बनी रहती है। साथ ही उन्होंने फसल चक्र अपनाने की सलाह भी दी। श्री सिंह ने कहा कि शिव शक्ति एग्रीटेक लिमिटेड के उत्पाद जैविक खेती अपनाने में मददगार है। साथ ही कहा कि हमारे सुप्रशिक्षित कृषि अधिकारी की टीम एक कॉल पर सर्विस के लिए उपलब्ध है। मौके पर राकेश मिश्रा, कामेश मिश्रा, अभय रंजन, जयप्रकाश तिवारी, रितेश कुमार सिंह, विजय कुमार तिवारी आदि मौजूद थे।

Rashtriya Sahara 18-02-2025

प्राकृतिक उर्जा का अक्षय भंडार है सुर्य : यशवंत

पूसा (एसएनबी)। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय खेल मैदान में आयोजित तीन दिवसीय किसान मेला में सेल्को इंडिया समस्तीपुर का सोलर सिस्टम लोगों के बीच खास कर युवओं के आकर्षण का केन्द्र रहा। इस दौरान सेल्को इंडिया की, समस्तीपुर इकाई ने किसानो को सौर उर्जा को अपनाकर आय बढाने केलिए जागरूक किया। इस अवसर पर शाखा प्रबंधक यशवंत कुमार ने कहा कि सेल्को स्थाई ऊर्जा समाधान विकसित करने में कार्य कर रही है। जो सोलर सिस्टम के माध्यम से कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं रोजगार के ऊपर काम करती है। उन्होंने बताया कि विगत 9 वर्षो से समस्तीपुर

सेल्को इंडिया के स्टाल पर जुटे युवा व पदधिकारी।

में रोजगार के क्षेत्र में सोलर पापड़ मशीन, अगरबत्ती मशीन, चिप्स मशीन, सोलर भाँति , सोलर कोल्ड स्टोरेज, मिल्किंग मशीन, फोटो मशीन, सिलाई मशीन के द्वारा लोगों को रोजगार से जोड़ने का प्रयास की है। उन्होंने कहा कि सुर्य उर्जा का प्राकृतिक एवं अक्षय भंडार है। उर्जा के पारंपरिक स्त्रोतों यथा गैस, बिजली, डीजल, पेट्रोल आदि के बढते मुल्य और इनके भंडार या उत्पादन में आ रही कमी के कारण वैकल्पिक ऊर्जा के स्त्रोत की ओर बढना समय की मांग है। उन्होंने कहा कि सोलर प्लेट लगाने में शुरुआती खर्च के बाद कोई खर्च नहीं लगता। यदि आप अपनी आवश्यकता से अधिक बिजली उत्पादन करते है तो बिजली विभाग आपसे बिजली खरीदेगा। जिससे आपकी उर्जा जरूरतों की पूर्ति के साथ साथ आमदनी भी बढती है। योजना के तहत घरेलू श्रेणी के उपभोक्ता को छत पर सौर पैनल लगाने पर सब्सिडी मिलता है। संजय कुमार ने कहा कि अधिकतर लोगों को इस योजना के बारे में जानकारी नहीं है। इसलिए इसके बारे में लोगों के बीच जानकारी और जागरूकता दोनो जरूरी है। मौके पर चंदन कुमार, आलोक कुमार एवं कोमल कुमारी आदि मौजूद थे।

Rashtriya Sahara 18-02-2025

मूल्यवर्धित पदार्थों के संरक्षण एवं एवं भंडारण की समुचित व्यवस्था करने की जरूरत : डॉ देवेन्द्र

समस्तीपुर/पूसा (एसएनबी)। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पुसा के अंतर्गत प्रसंस्करण एवं खाद्य अभियांत्रिकी महाविद्यालय द्वारा परिकटन अभियांत्रिकी एवं प्रोधोगिकी परियोजना, पर एक दिवसीय प्रशिक्षण सह जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्यरूप से कटाई उपरांत प्राथमिक प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन विस्तार से जानकारी दी गई। उद्घाटन एवं स्वागत की औपचारिकता के बाद इस कार्यक्रम में उपस्थित डॉ रामसुरेश ने विभिन्न गांवों

संबोधित करते वैज्ञानिक।

से मेला देखने आये महिला किसानों कटाई उपरांत सभी अनाज, फल सब्जी खासकर आलू संरक्षण, प्रसंस्करण व भंडारण की जानकारी दी और, खासकर धान की कुटाई के लिए उपयोग की जाने वाली मशीन पर बल दिया। इस दौरान डॉ देवेंद्र कुमार विभागाध्यक्ष ने परियोजना के अंतगर्त मूल्यवर्धित पदार्थो के संरक्षण एवं भंडारण पर विस्तृत जानकारी दी। इस अवसर पर वरीय वैज्ञानिक एवं मुख्य अन्वेषक डॉ विशाल कुमर, ने परियोजना के अंतर्गत चल रहे योजनायों तथा मूल्यवर्धित प्रोडक्ट के बारे में किसानों को जानकारी दिया। वहीं वरीय वैज्ञानिक एवं सह परियोजना अन्वेषक डॉ दिनेश रजक, ने मूल्यवर्धित उत्पाद तथा फलों एवं सब्जियों के बारे में भंडारण, आलू से चिप्स बनाने की तरीका के बारे में तथा शौर शुष्कक द्वारा अनाज, फल एवं सब्जी को भंडारण, अनाज लाबा यंत्र और मक्के का भूटा पकाने के यंत्रों की विस्तृत जानकारी दिया। इस दौरान किसानों को तेल निष्काषण यंत्र, ग्रेन मिलिंग तथा अनाज भण्डारण के लिए हेरमेटिक बैग ड्डवायु रुद्ध) भंडारण की जानकारी दी गई। इस कार्यक्रम में विभाग से पीएचडी, एम टेक के छात्र, तथा सभी कर्मचारी मौजूद थे।

Rashtriya Sahara 18-02-2025

किसान मेला एवं किसानों के सहयोग से विकसित भारत के संकल्पना को मिलेगा बल : कुलपति

पूसा (एसएनबी)। डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविधालय स्थित खेल ग्राउंड में आयोजित तीन दिवसीय किसान मेला 2025 सोमवार को पुरस्कार वितरण के साथ सम्पन्न हो गया। समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए कुलपति डा पुण्यव्रत सुविमलेंदु पांडेय ने कहा कि विकसित भारत बनाने में किसानों की महत्वपूर्ण भूमिका है। कृषि से जुड़े उच्च शिक्षा के लिए छात्रों के प्रतिभा में निखार लाने की जरुरी है। किसान मेला एवं किसानो के सहयोग से विकसित भारत की संकल्पना को बल मिलेगा। मेले की सफलता को लेकर छात्रों, एवं वैज्ञानिकों के दलों के साथ-साथ आगत किसानों व उद्यमियों को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि समापन सत्र के अवसर पर पंडाल में मौजूद किसानों के जत्थे ने इतिहास रच दिया है। इस मेले में हमारे वैज्ञानिकों की सोच मेले में प्रदर्शित की गई, मेला में अधिष्ठाताओं, निदेशकों, वैज्ञानिकों एवं कर्मचारी सहित छात्र छात्राओं की सहभागिता अकल्पनीय रही है। वीसी डॉ पाण्डेय ने कहा कि ससमय निराकरण निकालने पर वैज्ञानिक एवं छात्र छात्राओं को

सम्मानित प्रतिभागियों के साथ वीसी व अन्य।

सीखने का अवसर मिलता है। किसानों के भविष्य संवारने की दिशा में विवि अपनी भूमिका निभा रहा है। किसान मेला शैक्षणिक गतिविधियों से जुड़े दर्जनों तकनीकों की प्रस्तुति ने चारचांद लगा दिया। इस अवसर पर विभिन्न कृषि विज्ञान केंद्र के किसानों को भी पुरस्कृत किए गये। पुरस्कार लेने वालों में बेगूसराय से मुन्नी कुमारी एवं गोपाल, दरभंगा जाले से पार्वती देवी एवं रामबाबू, गोपालगंज से रेखा देवी एवं इंदर कुशवाहा, पिपराकोठी से आशा देवी एवं राजेश कुमार यादव, परसौनी से उपेन्द्र प्रसाद एवं शाहिना देवी, मधुबनी सुखैत से शिला देवी एवं शक्तिनाथ झा, सरैया से चुन्नी देवी एवं राजेश कुमार, तुर्की नीतू देवी एवं अनिल कुमार सहनी, बिरौली से रीता देवी एवं लक्ष्मण सिंह, लादा से नीलम कुमारी एवं शिवनारायण, सारण से रामलगण एवं कलावती देवी, सिवान से शिवप्रसाद सहनी, शिवहर से आनंदी देवी एवं सुनील कुमार, वैशाली से नीलम सहनी एवं विजय कुमार साह, माधोपुर से हरेंद्र ठाकुर एवं राम आधार प्रसाद, नरकटियागंज से सुमन देवी एवं विजय गिरी, शामिल है। इस दौरान फसल एवं तकनीक सहित अन्य क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले किसान व संस्थान को पुरस्कृत किया गया। इस वर्ष मेला में बिहार सहित अन्य प्रदेशों के किसान शामिल थे। इस दौरान रामबाबू को कस्टम हायरिंग सेंटर, के लिए, शिव शक्ति एग्रीटेक लिमिटेड, शिवम् डेयरी सहित विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले व्यवसायियों को भी पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ मीनाक्षी द्विवेदी एवं धन्यवाद ज्ञापन वैज्ञानिक डॉ बिनीता सतपथी ने की। मौके पर सूचना पदाधिकारी डॉ कुमार राज्यवर्धन, निदेशक प्रशार शिक्षा डॉ मयंक राय, निदेशक शिक्षा डॉ उमाकांत बेहरा, निदेशक अनुसंधान डॉ एके सिंह, अधिष्ठाता डॉ उषा सिंह, डॉ अमरेश चंद्रा, डॉ पीपी श्रीवास्तव, डॉ आरके झा, डॉ आर के तिवारी, उपस्थित थे। इस दौरान जननायक देश रत्न कर्पूरी ठाकुर की पुण्य तिथि पर उन्हें याद करते हुए विनम्र श्रद्धांजलि दी गई।

Rashtriya sahara 18-02-2025

तीन दिवसीय मशरूम प्रशिक्षण संपन्न

पूसा। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित तीन दिवसीय किसान मेला 2025 के समापन के साथ तीन दिवसीय मशरूम उत्पादन एवं प्रसंस्करण प्रशिक्षण भी संपन्न हो गया। इस दौरान प्रशिक्षुओं को मशरूम उत्पादन तकनीक के अलावा मशरूम पनीर बनाने का भी क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया गया। उक्त जानकारी देते हुए मशरूम मैन डॉ

प्रशिक्षण में शामिल किसान।

दयाराम ने बताया कि इस तीन दिवसीय प्रशिक्षण में अनुसुचित जाति जन जाति समन्वित योजना के तहत अजा/जजा 100 महिला पुरुष किसानों प्रशिक्षण लिया। वहीं अखिल भारतीय अनुसंधान परिषद के शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित प्रशिक्षण में उड़ीसा, झारखंड, बक्सर, बंगाल, मुजफ्फरपुर, भागलपुर समस्तीपुर के करीब 150 प्रशिक्षुओं ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण में मशरूम वैज्ञानिक डॉ आरपी प्रसाद एवं डॉ सुधानंनदनी ने प्रशिक्षुओं को मशरूम उत्पादन एवं उससे विभिन्न उत्पाद तैयार करने का प्रशिक्षण दिया।

Rashtriya sahara 18-02-2025

महिला कृषक समूह को विकसित करने की जरूरत

संबोधित करते डीन डॉ रामसुरेश.

पूसा . डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अंतर्गत परिकटन अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी परियोजना, प्रसंस्करण एवं खाद्य अभियांत्रिकी महाविद्यालय के सभागार में एक दिवसीय प्रशिक्षण सह जागरूकता कार्यक्रम हुआ. अध्यक्षता करते हुए डीन डॉ. रामसुरेश ने कहा कि महिला कृषक समूह को विकसित बनाने की जरूरत है, जिससे किसानों के उत्पाद को मूल्यसंवर्धित कर बेहतर आय दिलाया जा सके. प्रशिक्षण सह जागरूकता कार्यक्रम आये लदौरा, रामपुरा, मिल्की तथा कल्याणपुर किसानों की महिला समूह संबंधित किसान को कटाई उपरांत सभी अनाज, फल सब्जी खासकर आलू प्रसंस्करण, खासकर धान की कुटाई के लिए उपयोग की जाने वाली मशीन पर बल दिया. डॉ. विशाल कुमार परियोजना अन्वेषक ने चल रहे मूल्यवर्धित प्रोडक्ट के बारे में किसानों को जानकारी दी. डॉ. दिनेश रजक वरीय वैज्ञानिक सह परियोजना अन्वेषक ने मूल्यवर्धित उत्पाद तथा फलों एवं सब्जियों के बारे में भंडारण, आलू से चिप्स बनाने की तरीका के बारे में बताया. किसानों को तेल निष्कासित यंत्र तथा ग्रेन मिलिंग के बारे में तथा अनाज भंडारण के लिए हेरमेटिक बैग (वायु रुद्ध) भंडारण जानकारी दी गई. वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. पीडी शर्मा, ई. अनुपम अमिताभ वैज्ञानिक सह परियोजना अन्वेषक ने मंच संचालन एवं तथा मकई निष्कासन यंत्र के बारे में विस्तृत जानकारी दी.

प्रभात खबर
Wednesday, February 19, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67b4d0b95de977ce9b9f9ab3

मधुमक्खी पालन को लेकर सुमन हुईं सम्मानित

बगहा. शहद उत्पादन व मधुमक्खी पालन में सुमन देवी को बेहतर प्रदर्शन को लेकर डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा वीसी ने सम्मानित किया. प्राप्त समाचार के अनुसार राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा समस्तीपुर में आयोजित इस उपलक्ष्य में केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय द्वारा प. चंपारण के बगहा दो अंतर्गत कदमहिया निवासी व प्रगतिशील महिला कृषक सुमन देवी को मधुमक्खी पालन व उसके विभिन्न उत्पाद तैयार करने के लिए सम्मानित किया गया. इसको लेकर लोगों ने बधाई दिया है. सभी ने बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की.

प्रभात खबर
Wednesday, February 19, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67b4d0b95de977ce9b9f9abf

बखरिया के किसान को किया गया सम्मानित

मझौलिया. प्रखंड क्षेत्र केबखरिया के प्रगतिशील किसान सह हेचेरी संचालक हरेंद्र ठाकुर को डॉ राजेंद्र प्रसाद कृषि विश्वविद्यालय पूसा समस्तीपुर में आयोजित किसान मेला 2025 में उनके उत्कृष्ट कार्य एवं स्वरोजगार को लेकर सम्मानित किया गया. कार्यक्रम में सम्मानित करने वाले वैज्ञानिक डॉ अभिषेक कुमार, सौरभ दुबे, हेचरी के डॉक्टर सुमंत देवा आदि ने अपने संबोधन में कहा कि तय मानकों का पालन करते हुए हरेंद्र ठाकुर ने फीस हेचरी का उत्थान कर लोगों के बीच जो संदेश दिया हैं, वह विभाग के लिए गौरव की बात है. वहीं अपने सम्मान के मौके पर किसान हरेंद्र ठाकुर ने विभाग के मुख्य वैज्ञानिक एवं पदाधिकारी का अभिवादन करते हुए कहा कि मेरे लिए सौभाग्य की बात है कि सरकार द्वारा मुझे फीस हेचरी का रोजगार का अवसर प्रदान किया है. वही कार्यक्रम में डॉ विश्वास व रमेश ठाकुर के द्वारा मशरूम की खेती एवं फीस हेचरी के उत्थान के बारे में विस्तृत जानकारी साझा किया. इधर हरेंद्र ठाकुर के सम्मानित होने पर जेडीयू के प्रदेश महासचिव डॉ एनएन शाही, जिलाध्यक्ष शत्रुघ्न प्रसाद कुशवाहा, दूधनाथ सिंह, असलम हक्की खान, अरुण ठाकुर, रूपेश कुमार उर्फ बिट्टू आदि ने बधाइयां दी है.

प्रभात खबर
Wednesday, February 19, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67b4d0b95de977ce9b9f9abf

भास्कर 19/2/25 पेज 13

मौसम • 5 से 7 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से पछिया हवा चलने का अनुमान, तापमान में होगी वृद्धि

उत्तर बिहार में आज से 23 तक आसमान में छाए रहेंगे हल्के बादल, 15 डिग्री से अधिक रहेगा न्यूनतम पारा

भास्कर न्यूज | समस्तीपुर

उत्तर बिहार के जिलों में 19 से 23 फरवरी तक आसमान में हल्के बादल छाए रह सकते हैं। हालांकि, मौसम शुष्क रहने का अनुमान है। इस दौरान अधिकतम तापमान 26 से 28 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 15 डिग्री सेल्सियस से ऊपर रह सकता है। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के मौसम विभाग के अनुसार, इस अवधि में औसतन 5 से 7 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से पछुआ हवा चलने की संभावना है। सुबह सापेक्ष आर्द्रता 80 से 90 प्रतिशत और दोपहर में 45 से 55 प्रतिशत रह सकती है। अगात आलू की तैयार फसल की खुदाई करें। खुदाई से 15 दिन पहले सिंचाई बंद कर दें। जो किसान आलू को बीज के लिए रखना चाहते हैं, वे उसकी ऊपरी सतह की कटाई कर दें। समय से बोई गई गेहूं की फसल गाभा अवस्था में आ गई हो तो उसमें 30 किलोग्राम नाइट्रोजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन करें। तैयार खेत की हल्की जुताई कर गरमा सब्जियों की बुआई करें। भिंडी, कद्दू, करेला, खीरा और नेनुआ की बुआई के लिए मौसम अनुकूल है। भिंडी के लिए परभनी क्रांति, अका अभय, अकी अनामिका, केएस-312, लौकी के लिए राजेन्द्र चमत्कार, पूसा समर प्रौलिफिक लॉन्ग, पूसा समर प्रौलिफिक राउंड, नेनुआ के लिए राजेन्द्र नेनुआ-1, पूसा चिकनी, पूसा प्रिया, कल्याणपुर चिकनी, करेला के लिए पूसा दो मौसमी, पूसा विशेष, कोयंबटूर लॉन्ग, पंत करेला और कल्याणपुर बारहमासी अनुशंसित किस्में हैं। किसान प्रमाणित स्रोत से बीज का प्रबंध कर लें।

खेत में लगी गेहूं की फसल ।

मटर की फसल पर कीट का प्रकोप बढ़ा

मटर में फली छेदक कीट की निगरानी करें। यह कीट फलियों में जालीनुमा आवरण बनाकर अंदर घुसकर मटर के दानों को खा जाता है। एक कीट कई फलियों को नष्ट कर सकता है। इससे उपज में भारी कमी आती है। कीट प्रबंधन के लिए प्रकाश फंदा का उपयोग करें। प्रति हेक्टेयर 15-20 टी आकार के पक्षी बैठका (बर्ड पर्चर) लगाएं। अधिक नुकसान होने पर क्वीनालफास 25 ईसी या नोवाल्युरॉन 10 ईसी का 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करें। बसंतकालीन गन्ना और शकरकंद की रोपाई करें। अक्टूबर-नवंबर में रोपी गई गन्ने की फसल में हल्की सिंचाई करें। केले की सूखी और रोगग्रस्त पत्तियों को काटकर खेत से बाहर करें। प्रति पौधा 200 ग्राम यूरिया, 200 ग्राम म्युरेट ऑफ पोटाश और 100 ग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट का प्रयोग करें।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 23 फरवरी तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार में अगले 4 दिनों के अंदर आसमान में हल्के बादल छा सकते हैं। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि हालांकि मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है। इस बीच अधिकतम व न्यूनतम तापमान में बढ़ोतरी होगी।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
19 फरवरी	27.8	11.8
20 फरवरी	27.8	13.0
दरभंगा		
19 फरवरी	27.8	13.0
20 फरवरी	28.0	13.0
पटना		
19 फरवरी	29	14.0
20 फरवरी	29	14.0

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 19-02-2025

प्रशिक्षण | डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के कृषि अभियंत्रण एवं प्रौद्योगिकी कॉलेज के डीन ने कहा-समूह बनाकर खेती करने का है समय

प्रसंस्करण व मूल्य संवर्धन कर किसान हो सकते हैं सशक्तःडीन

पूसा,निज संवाददाता। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के कृषि अभियंत्रण एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के डीन डॉ.राम सुरेश ने कहा कि कृषि की लागत कम करने के साथ उसका प्रसंस्करण व मूल्य सवर्धन करना समय की मांग है। इससे किसान बेहतर आमदनी ले सकते हैं। इसके लिए समूह बनाकर कार्य करना किसानों के हित में होगा। इससे उत्पादन लागत में कमी के साथ बेहतर मार्केट तक पहुंच बनाना आसान हो सकता है। वे कॉलेज के सभागार में सतमलपुर, संकरपुर, सैदपुर, मोइद्दीनपुर, वालाही और हांसा से आये किसानों को संबोधित कर रहे थे। मौका था कटाई उपरांत प्रार्थमिक प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण का। उन्होंने कहा कि

मंगलवार को विवि में प्रसंस्करण व मूल्य संवर्धन पर प्रशिक्षण में शामिल किसान और वैज्ञानिक। ● हिन्दुस्तान

किसानो को कृषि की नवीनतम तकनीको को इस्तेमाल करने की जरूरत है। इससे कृषि आसान होने के साथ लाभकारी भी साबित होगी। मुख्य वैज्ञानिक डॉ.प्रतिभा देवी शर्मा ने किसानों को कटाई के बाद प्रोडक्ट बनाकर आमदनी बढ़ाने के तौर-तरीको से अवगत कराया। विभागाध्यक्ष डॉ.देवेंद्र कुमार ने परियोजना के तहत मूल्यवर्धित पदार्थों एवं भंडारण पर चर्चा की। मुख्य अन्वेषक डॉ.विशाल कुमार व सह परियोजना अन्वेषक डॉ दिनेश रजक ने फलों एवं सब्जियों के भंडारण, मूल्य संवर्घन, भंडारण आदि पर विस्तार से चर्चा की। वक्ताओं ने किसानों को तेल निष्कासित यंत्र, ग्रेन मिलिंग, अनाज भण्डारण के लिए हेरमेटिक बैग (वायु रुद्ध) आदि की जानकारी दी।

किसान व छात्रों के लिए कृषि मेला बना संजीवनी

पूसा,निज संवाददाता। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि में आयोजित तीन दिवसीय किसान मेला सोमवार की शाम संपन्न हो गई। इस वर्ष मेले ने शोध-शिक्षा के प्रचार-प्रसार के साथ व्यवसायियों को बड़ा रोजगार दिया। कृषि शोध-शिक्षा की जन्मस्थली पूसा में आयोजित इस किसान मेला के माध्यम से किसानो ने अपने ज्ञान को अपडेट किया। तो अध्ययनरत छात्रो ने अपने मॉडल की प्रस्तुति व शिक्षा के प्रायोगिक स्वरूप को प्रस्तुत कर अपने कार्य अनुभवो को विस्तारित किया। वही कृषि शिक्षा व कृषि विस्तार लेकर युवा पीढ़ी व किसानो की भीड़ ने एक उदाहरण प्रस्तुत किया। इस कड़ी को सशक्त करने में नर्सरी से लेकर डेयरी, कृषि यंत्र, कीटनाशक, बीज समेत दर्जनो व्यवसायिक संगठनो ने बेहतर आमदनी हासिल की। लोगों की मानें तो इस वर्ष भी मेला में करोड़ों का व्यवसाय कर इतिहास रच दिया। हलांकि आकलन विशेषज्ञों की टीम की जांच के बाद व्यवसाय समेत शोध का आकलन हो सकेगा।

Hindustan 19-02-2025

पछिया हवा के कारण बढा तापमान, रहेगा बेअसर, मौसम में बदलाव की उम्मीद नहीं

समस्तीपुर। जिले के पूसा स्थित डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के ग्रामीण .षि मौसम सेवा, एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से मौसम परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र द्वारा जारी 19-24 फरवरी, 2025 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के बादल आ सकते है. हालांकि मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है। इस अवधि में अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान में बढ़ोत्तरी के साथ यह 26 से 28 डिग्री सेल्सियस एवं 14-15 डिग्री सेल्सियस के बीच बने रह सकता है। पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 5 से 7 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से मुख्यतः पछिया हवा चलने का अनुमान है। सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 45 से 55 प्रतिशत रहने की संभावना है।

Rashtriya Sahara
19-02-2025

गरमा सब्जियों की करें बुआई किसान : डॉ ए सत्तार

समस्तीपुर। अगात आलू के तैयार फसल की खुदाई करने का समय है, खुदाई के 15 दिनों पूर्व सिंचाई बन्द कर दे। आलू की फसल जो .षक बंधु बीज के लिए रखना चाहते है उसकी ऊपरी लत्तर की कटाई कर दें। मौसम के बदलते तेवर को देखते हुए मौसम वैज्ञानिक डॉ ए सत्तार ने किसान भाईयों केलिए जारी सुझाव में बताया है कि, गरमा सब्जियों जैसे-भिन्डी, कद्दू, कदिमा, करेला, खीरा एवं नेनुओं की बुआई के लिए मौसम अनुकुल है, तैयार खेत की एक हल्की जुताई कर किसान भाई बुआई कर सकते है। भिंडी के लिए परभनी क्रान्ति, अका अभय, अकी अनामिका, वर्षा उपहार, के0एस0-312, लौकी के लिए राजेन्द्र चमत्कार, पूसा समर प्रौलिफिक लॉग, पूसा समर प्रौलिफिक राउंड, नेनुआ के लिए राजेन्द्र नेनुआ-1. पूसा चिकनी पूसा प्रिया, कल्याणपुर चिकनी, करेला के लिए पूसा दो मौसमी, पूसा विशेष, कोयम्बटूर लौग, पंत करेला और कल्याणपुर बारहमासी अनुशंसित किस्में है। किसान भाई प्रमाणित स्त्रोत से बीज का प्रबंध कर लें। उन्होंने बताया कि इस समय लहसुन एवं अगात बोयी गई प्याज की फसल में थ्रिप्स कीट का निगरानी करें।

Rashtriya Sahara19-02-2025

जीवकोपार्जन का साधन बना मत्स्य पालन व्यवसाय

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित मात्स्यिकी महाविद्यालय के सभागार में समस्तीपुर जिला के अनुसूचित जाति (एससी) समुदाय के 25 प्रशिक्षणार्थियों के लिए तीन दिवसीय व्यावहारिक एवं क्रियाशील प्रशिक्षण कार्यक्रम बुधवार को शुरू हुआ. यह प्रशिक्षण कार्यक्रम आगामी तीन दिनों तक चलेगा.

जिसमें प्रशिक्षणार्थियों को मछली से बनने वाले विभिन्न मूल्य संवर्धित उत्पाद, मछली का अचार, कटलेट, बिस्कुट इत्यादि को बनाने के लिए प्रशिक्षण दिया जाएगा. जिससे अनुसूचित जाति के प्रशिक्षणार्थी

प्रतिभागियों के साथ वैज्ञानिक.

स्वरोजगार अपनाकर आर्थिक लाभ प्राप्त कर स्वावलंबी बन सकेंगे. विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. पुन्यव्रत सुविमलेन्दु पाण्डेय के कुशल नेतृत्व में विश्वविद्यालय समाज के सभी वर्गों के कृषक बन्धुओं के कल्याणार्थ समय-समय पर विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर उन्हें लाभान्वित करने में अग्रणी भूमिका निभा रहा है. वर्तमान प्रशिक्षण उसी कड़ी में अनुसूचित जाति के प्रशिक्षणार्थियों के स्वावलंबन के लिए आहूत की गई है. प्रशिक्षण का शुभारंभ मात्स्यिकी महाविद्यालय, ढोली के अधिष्ठाता डॉ. प्रेम प्रकाश श्रीवास्तव के मार्गदर्शन में हुआ. साथ ही उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि मत्स्य पालन व्यवसाय जीवकोपार्जन का साधन के रूप में परिलक्षित हो चुका है. इस रोजगार को गति देने की जरूरत है. मौके पर महाविद्यालय की वैज्ञानिक व प्रशिक्षण आयोजिका डॉ. तनुश्री घोड़ई, तथा वैज्ञानिक डॉ. राजीव कुमार ब्रह्मचारी, डॉ. अनिरुद्ध कुमार, रोशन कुमार राम व अन्य कर्मी एवं सभी प्रशिक्षणार्थी मौजूद थे. इस प्रशिक्षण में वैज्ञानिक व प्रशिक्षण आयोजिका डॉ. तनुश्री घोड़ई ने प्रशिक्षणार्थियों को मछली से बनने वाले विभिन्न उत्पादों के लिए तकनीकी व क्रियाशील ज्ञान से रूबरू कराया.

प्रभात खबर
Thursday, February 20, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67b6269a5f43fdddcac72941

विकसित भारत बनने में जलवायु अनुकूल कृषि की महती भूमिका : डॉ. देवेंद्र सिंह

प्रतिनिधि,पूसा

किसानों के साथ वैज्ञानिक.

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित ईंख अनुसंधान संस्थान के तत्वावधान में गन्ना उत्पादन, प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धित उत्पादों के बाजारीकरण विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया. अध्यक्षता करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ. देवेंद्र सिंह ने कहा कि जलवायु परिवर्तन की दौर में 2047 विकसित भारत बनाने में जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम की महती भूमिका है. वैज्ञानिकों के माध्यम से सतत हो रहे आधुनिक अनुसंधान से गन्ना उत्पादकों के दिशा एवं दशा में परिवर्तन आया है. साथ ही उनके आमदनी में भी बढ़ोतरी दर्ज की जा रही है. गोष्ठी में चीनी मील बगहा, हरिनगर, सुगौली, लोरिया, रीगा, हसनपुर गोपालगंज के प्रगतिशील गन्ना उत्पादक किसानों ने भाग लिया. संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा जलवायु अनुकूल गन्ना प्रभेद, उन्नत तकनीक, मृदा प्रबंधन प्राकृतिक खेती, रोग प्रबंधन पर जानकारी दी गई. वरीय वैज्ञानिक सह परियोजना के मुख्य अन्वेषक डॉ. सीके झा ने किसानों को संबोधित किया. मौके पर संस्थान के वैज्ञानिक एवं कर्मी मौजूद थे.

प्रभात खबर
Thursday, February 20, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67b6269a5f43fdddcac7292f

भास्कर 20/2/25 पेज 14

कार्यक्रम • मत्स्यकी महाविद्यालय ढोली में मछली से विभिन्न उत्पाद को तैयार करने पर जोर

केंद्रीय कृषि विवि पूसा विभिन्न प्रशिक्षणों के माध्यम से सभी वर्गों के किसानों को कर रहा लाभान्वित : श्रीवास्तव

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ.राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के अधीनस्थ मतस्यकी महाविद्यालय ढोली में मछली से विभिन्न उत्पादों को तैयार करने के विषय पर अनुसूचित जाती से जुड़े 25 किसानों के लिए व्यवहारिक एवं क्रियाशील प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसका उद्‌घाटन मतस्यकी महाविद्यालय ढ़ोली के अधिष्ठाता एवं कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. प्रेम प्रकाश श्रीवास्तव ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर मौजूद प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए डॉ. प्रेम प्रकाश श्रीवास्तव ने कहा कि

प्रशिक्षणार्थियों के साथ मौजूद मुख्य अतिथि।

तीन दिनों तक चलने वाले इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थियों को मछली से बनने वाले विभित्र मूल्य वर्धित उत्पाद जैसे मछली अचार, कटलेट, बिस्कुट आदि को बनाने की जानकारी दी जाएगी। उन्होंने कहा कि इस प्रशिक्षण के माध्यम से अनुसूचित जाती से जुड़े खासकर छोटे स्तर के किसान स्वरोजगार को अपनाकर आर्थिक लाभ प्राप्त करते हुए स्वावलंबी बन पाएंगे। उन्होंने कहा कि कुलपति डॉ. पीएस पांडे के कुशल नेतृत्व में विवि समाज के सभी वर्गों से जुड़े किसानों के कल्याण के लिए समय-समय पर विभित्र प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन कर उन्हें लाभान्वित करने में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। प्रशिक्षण के पहले दिन वैज्ञानिक व प्रशिक्षण की आयोजिका डॉ. तन्नूश्री घोड़ई ने प्रशिक्षणार्थियों को मछली से बनने वाले विभिन्न उत्पादों की तकनीकी जानकारी दी। मौके पर वैज्ञानिक डॉ. राजीव कुमार ब्रह्मचारी, डॉ. अनिरुद्ध कुमार, रोशन भी थे।

भास्कर 20/2/25 पेज 14

॥ समाज-संस्था ब्रीफ ॥

उद्यान प्रदर्शनी में कद्दू के प्रदर्शन को लेकर रामवीर चौरसिया को मिला प्रथम पुरस्कार

पूसा | डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा में अभी हाल ही में संपन्न हुए तीन दिवसीयकिसानमेले में पौधा प्रवर्धन केंद्र हाजीपुर के स्टॉल को उद्यान प्रदर्शनी वर्ग 1 शाखा 15 में सब्जी वाले कद्दू के प्रदर्शन के लिए प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया हैं। पुसा विवि के कुलपति डॉ. पीएस पांडेय समेत अन्य अतिथियों ने पौधा प्रवर्धन केंद्र के प्रोपराइटर रामवीर चौरसिया को प्रमाण पत्र देकर उन्हें सम्मानित किया। बता दें कि किसान मेले में पौधा प्रवर्धन केंद्र का एक बड़ा स्टॉल भी लगाया गया था। इस स्टॉल पर मेले में तीनों दिन किसानों की भारी भीड़ देखने को मिली। स्टॉल पर पहुँचने वाले किसानों ने यहां से काफी मात्रा में सब्जियों के बीज व पौधें, औषधीय पौधे, आम, अमरूद, सेब, चंदन आदि के पौधों की खरीदारी की। स्टॉल संचालक रामवीर चौरसिया स्टॉल पर पहुँचने वाले तमाम किसानों को विभिन्न तरह के पौधों को लगाने एवं पौधों के विशेषताओं के बारे में बता रहे थे। श्री चौरसिया ने बताया की उन्हें कृषि विवि पुसा के द्वारा वर्ष 2017 में अभिनव किसान पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 23 फरवरी तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार में अगले 4 दिनों के अंदर आसमान में हल्के बादल छा सकते हैं। मौसम विज्ञानी डा. ए सत्तार का कहना है कि हालांकि मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है। इस बीच अधिकतम व न्यूनतम तापमान में बढ़ोतरी होगी।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
20 फरवरी	27.8	11.8
21 फरवरी	27.8	13.0
दरभंगा		
20 फरवरी	27.8	13.0
21 फरवरी	28.0	13.0
पटना		
20 फरवरी	29	14.0
21 फरवरी	29	14.0

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 20-2-2025

प्रशिक्षण | डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि तकनीकी प्रशिक्षण देकर किसानों और मछुआरों को स्वावलंबी बनाने की दिशा में कर रहा काम

मछली के उत्पाद निर्माण व बिक्री को बनाएं रोजगार:डीन

बुधवार को विवि में प्रशिक्षण में शामिल युवा किसान और वैज्ञानिक। इन्हें मछली उत्पादन की तकनीकों की जानकारी दी गई। • हिन्दुस्तान

पूसा,निज संवाददाता। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के मत्स्यकी महाविद्यालय के डीन डॉ.पीपी श्रीवास्तव ने कहा कि बदलते परिवेश में बाजार की मांग के अनुरूप मछली का प्रोडक्ट निर्माण कर उसकी बिक्री को व्यवसायिक रूप देने की जरूरत है। यह स्वरोजगार का बेहतर विकल्प होने के साथ आर्थिक समृद्धि में अहम भूमिका निभाता है। इस कड़ी को सशक्त करने में विवि तकनीकी प्रशिक्षण देकर लोगों को स्वाबलंबी बनाने की दिशा में लगातार प्रयासरत है। यह प्रशिक्षण इसी कड़ी का हिस्सा है। जरूरत है प्रशिक्षण में प्राप्त ज्ञान को जमीनी स्वरूप देने की। जिससे समुचित लाभ इससे जुड़े लोगों को मिल सके। वे बुधवार को महाविद्यालय के सभागार में प्रशिक्षुओं को संबोधित कर रहे थे। मौका था अनुसूचित जाति के चयनित प्रतिभागियों के तीन दिवसीय व्यवहारिक एवं क्रियाशील प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र का। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में मछली का अचार, कटलेट, बिस्कुट जैसे उत्पादों का निर्माण का प्रशिक्षण देकर प्रशिक्षुओं को आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया जा रहा है। मौके पर प्रशिक्षण आयोजिका डॉ.तनुश्री घोड़ई ने प्रशिक्षण की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए कहा कि आर्थिक समृद्धि के लिए किसानो को खेती के साथ मछली पालन व उसका मूल्य वर्धित उत्पाद का रोजगार बेहतर विकल्प के रूप में उभर रहा है। बाजार में इसकी मांग लगातार बढ़ रही है। जरूरत है व्यंजन निर्माण में उसकी गुणवत्ता व शुद्धता को ध्यान रखने की। जिससे इसका सेवन करने वाले निरंतर बढ़ते रहें। इस दौरान वैज्ञानिक डॉ. राजीव कुमार ब्रह्मचारी, डॉ.अनिरुद्ध कुमार, रौशन कुमार राम, राजेश कुमार व अन्य कर्मी मौजूद थे।

Hindustan 20-2-2025

डॉ राजेंद्र कृषि विवि में राज्यस्तरीय गन्ना किसान संगोष्ठी का उद्घाटन

गन्ना उत्पादकों की मूल समस्याओं को कम करने की जरूरत : मंत्री

कार्यक्रम

प्रतिनिधि, पूसा

बिहार सरकार के गन्ना उद्योग मंत्री कृष्णनंदन पासवान ने कहा कि गन्ना उत्पादकों की मूल समस्याओं को तकनीकों की बदौलत घटाने की जरूरत है. इससे उत्पादकों को कम लागत में रोग रोधी प्रभेदों को अपनाकर आय दोगुनी करने में सहूलियत मिलेगी. विवि के वैज्ञानिक सतत नये प्रभेदों का ईजाद कर रहे हैं. गन्ना उत्पादकों की आमदनी बढ़ाने की दिशा में बिहार सरकार संकल्पित है.

शुगर मिल की कमी के बावजूद बिहार का गन्ना उत्पादकता प्रथम स्थान पर है. मंत्री श्री पासवान ने वैज्ञानिकों से कहा कि जलजमाव वाले क्षेत्रों के लिए नवीनतम गन्ने के प्रभेदों का अनुसंधान करने की दिशा में बल देने की जरूरत है. किसानों की समस्याओं का निदान निकालना ही वैज्ञानिक एवं विभागीय अधिकारियों का प्रथम दायित्व है. जनहित में लागू होने वाले सभी योजनाओं को मंत्रालय समर्थन करती है. रीगा चीनी मिल का शुरू होना बिहार के विकास का गवाह है.

गुड़ प्रोसेसिंग प्लांट लगाने पर बिहार सरकार की ओर से ऑन स्पॉट 50 प्रतिशत का अनुदान खाते में भेज दिया जाता है. गुड़ उद्योग लगाने के लिए प्रथम चरण का आवेदन पूरा हुआ है. अभी तीन चरण और ऑनलाइन ही आवेदन लिया जाना है. बिहार के विभिन्न जिलों में गन्ना की खेती के लिए किसानों को जागरूक करने की जरूरत है. मौका था डा राजेंद्र कृषि विश्वविद्यालय स्थित विद्यापति सभागार में गन्ना उत्पादकता में वृद्धि सीख चुनौती विषय पर आयोजित राज्यस्तरीय गन्ना किसान संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र का.

संबोधित करते गन्ना उद्योग मंत्री कृष्णनंदन पासवान.

प्रदर्शनी का भ्रमण करते मंत्री.

संस्थान ऐतिहासिक धरोहर : आयुक्त

ईख आयुक्त अनिल कुमार झा ने कहा कि गन्ना अनुसंधान संस्थान ऐतिहासिक धरोहर है. गन्ना को प्रकृति ने ही बहुत ही ताकतवर फसलों में से एक फसल बनाया है. संचालन हसनपुर चीनी मिल के महाप्रबंधक सुग्रीव पाठक ने किया. धन्यवाद ज्ञापन सहायक ईख उप निदेशक अरविंद कुमार ने किया. मौके पर वैज्ञानिक डा मो. मिनितुल्लाह, डा एसके सिंह, डा सीके झा, डा सुनीता कुमारी मीणा, डा नवनीत कुमार आदि मौजूद थे.

बीज को करें आवेदन : जेडीआर : इससे पहले स्वागत संबोधन करते हुए जेडीआर महेंद्र प्रसाद सिंह कहा गन्ने के आधार बीज खरीददारी के लिए अविलंब वेबसाइट पर अपलोड करें. इससे बीजों पर मिलने वाली अनुदानित राशि किसानों के खाते पर जल्द से जल्द मिल सके.

बीज किसानों के लिए उपलब्ध : कुलपति

अध्यक्षता करते हुए कृषि विवि पूसा के कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने कहा कि पूसा कृषि शिक्षा, अनुसंधान और प्रसार की जन्मस्थली है. उन्होंने कहा कि विवि के गन्ना अनुसंधान केंद्र द्वारा विकसित गन्ना के तमाम प्रभेदों के बीज किसानों के लिए सदैव उपलब्ध रहेंगे. उन्होंने कहा कि बिहार में गन्ना उत्पादन की संभावनाओं को देखते हुए देश का पहला चीनी मिल सबसे पहले बिहार में ही लगाया गया था. उन्होंने कहा कि इस संगोष्ठी से गन्ना उत्पादन और प्रसंस्करण के अलावा गन्ना उत्पादक किसानों को काफी फायदा मिलेगा.

मंत्री ने प्रदर्शनी का किया निरीक्षण

विवि में गन्ना उत्पादन में वृद्धि एक चुनौती के विषय पर आयोजित राज्य स्तरीय गन्ना किसान संगोष्ठी कार्यक्रम के दौरान विद्यापति सभागार परिसर में गन्ने के विभिन्न प्रभेदों, गन्ना उत्पाद, कृषि तकनीक, कृषि उपकरण आदि की प्रदर्शनी का गन्ना उद्योग विभाग के मंत्री कृष्णनंदन पासवान ने जायजा लिया. इस दौरान कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने मंत्री को गन्ना से बनाये जा रहे गुर, गुर डस्ट, गुर से बने लड्डू, विनेगर, विवि द्वारा विकसित गन्ने के विभिन्न प्रभेद, ड्रोन तकनीक आदि के बारे में जानकारी दी.

प्रभात खबर
Friday, February 21, 2025
Samastipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67b7728af54100df9530aec9

तकनीकों का समावेश कर कृषि को बेहतर बनाने की जरूरत : डॉ तिवारी

संबोधित करते वैज्ञानिक.

पूसा. डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केन्द्र बिरौली में झारखंड के लोहरदगा से आये 50 किसानों के लिए प्रशिक्षण सह शैक्षणिक भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन किया गया. उद्घाटन कृषि विज्ञान केन्द्र बिरौली के वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान डॉ. आरके तिवारी ने किया. किसानों को संबोधित करते हुए डॉ. तिवारी ने कहा कि किसान कृषि में नवीन तकनीकों का समावेश कर खेती को बेहतर बनाते हुए उससे अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं. उन्होंने कहा कि मौजूदा समय में किसानों के लिए एक से बढ़कर एक कृषि तकनीक उपलब्ध हैं. किसानों को इन तकनीकों से फायदा उठाने की जरूरत है. बताया कि यह प्रशिक्षण सह शैक्षणिक भ्रमण कार्यक्रम पांच दिवसीय है. केवीके के उद्यानिकी विशेषज्ञ डॉ. धीरू कुमार तिवारी ने किसानों को बागवानी के संबंध में जानकारी दी. शस्य विशेषज्ञ भारती उपाध्याय ने प्राकृतिक खेती एवं जैविक खेती के बारे में किसानों को बताया. ई. विनिता कश्यप ने कृषि यंत्रों के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि किसान छोटे कृषि यंत्रों का उपयोग करके कृषि के लागत में कमी ला सकते हैं. गृह विज्ञान विशेषज्ञ वर्षा कुमारी ने केला रेशा से मूल्यवर्धित उत्पाद बनाने के बारे में किसानों को जानकारी दी.

प्रभात खबर
Friday, February 21, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67b7728af54100df9530aec9

आजीविका का साधन बना मशरूम : डॉ चंद्रा

प्रतिनिधि, पूसा

वैज्ञानिक के साथ प्रतिभागी.

डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित संचार केंद्र के पंचतंत्र सभागार में मशरूम के मूल्यवर्धित उत्पादों द्वारा अनुसूचित जातियों का उद्यमिता विकास विषय पर एफपीओ मॉडल पांच दिवसीय प्रशिक्षण शुरू हुआ. अध्यक्षता करते हुए आधार विज्ञान एवं मानविकी संकाय के डीन डा अमरेश चंद्रा ने कहा कि जलवायु परिवर्तन की दौर में मशरूम उत्पादन आजीविका साधन बन गया है. बिहार के मशरूम उत्पादन में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है. देश भर में बिहार प्रथम स्थान पर पहुंच चुका है. देश भर में एक लाख 35 हजार टन मशरूम उत्पादन हो रहा है. जबकि अकेले बिहार में 40 हजार टन मशरूम उत्पादित हो रहा है. मशरूम का बेहतर प्रसंस्करण हो तो विदेशों की बाजार में टक्कर दिया जा सकता है. प्रसार शिक्षा निदेशक डा मयंक राय ने कहा कि मशरूम देश भर के लोगों के बीच पसंदीदा व्यंजन के रूप में परोसा जा रहा है. हालांकि मांग के अनुसार मशरूम उत्पादन ही नहीं हो रहा है. मशरूम के बीज निर्माण में भी रोजगार का अवसर है. वैज्ञानिक मुकेश कुमार ने कहा कि औषधीय गुणों से भरपूर मशरूम अब भारत ही नहीं विश्व स्तर के बाजारों में बिकने के लिए तैयार है. प्रशिक्षण के दौरान स्वागत भाषण मशरूम विशेषज्ञ डा दयाराम ने किया. संचालन मशरूम वैज्ञानिक सुधानंदनी ने किया. धन्यवाद ज्ञापन डा आरपी प्रसाद ने किया. मौके पर टेक्निकल टीम के सुरेश कुमार, सुभाष कुमार आदि मौजूद थे.

प्रभात खबर
Friday, February 21, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67b7728af54100df9530aecf

भास्कर 2/2/25 पेज 18

गन्ना उद्योग विभाग के मंत्री ने विभिन्न उत्पादों का लिया जायजा, की सराहना

पूसा केंद्रीय विवि के गन्ना उत्पादन में वृद्धि को लेकर कार्यक्रम का आयोजन

भास्कर न्यूज़ | पूसा

पूसा विवि में गन्ना उत्पादन में वृद्धि एक चुनौती के विषय पर आयोजित हुए राज्य स्तरीय गन्ना किसान संगोष्ठी कार्यक्रम के दौरान विद्यापति सभागार परिसर में गन्ने के विभिन्न प्रभेदों, गन्ना उत्पाद, कृषि तकनीक, कृषि उपकरण आदि की प्रदर्शनी लगाई गई थी। कार्यक्रम में शिरकत करने पहुंचे गन्ना उद्योग विभाग के मंत्री कृष्णनंदन पासवान ने विभिन्न स्टॉल पर पहुंचकर प्रदर्शनी का जायजा लिया। भ्रमण के दौरान पूसा के कुलपति डॉ. पीएस पांडे ने गन्ना उद्योग मंत्री को गन्ना से बनाये जा रहे गुर, गुर डस्ट, गुर से बने लड्डू, विनेगर, विवि द्वारा विकसित किये गए गन्ने के विभिन्न प्रभेद, ड्रोन तकनीक आदि के बारे में जानकारी दी। बाद में मंत्री ने कार्यक्रम में बिहार के विभिन्न जिलों से पहुंचे गन्ना उत्पादक किसानों को बिहार राज्य गुर उद्योग प्रोत्साहन कार्यक्रम के तहत गुर उत्पादन इकाई की स्थापना को लेकर स्वीकृति पत्र दिया। बताया जाता है कि गन्ना उत्पादक किसानों के लिए सरकार और गन्ना विभाग गुर प्रोसेसिंग यूनिट लगाने पर उन्हें 50 प्रतिशत तक का बड़ा अनुदान दे रही है। इसी योजना के तहत किसानों को गुर उत्पादन इकाई की स्थापना को लेकर स्वीकृति पत्र दिया गया।

स्टॉल पर मौजूद गन्ना उत्पादों के बारे में जानकारी लेते मंत्री।

भास्कर 21/2/25 पेज 19

कृषि में नवीन तकनीकों का समावेश करें किसान

कृषि विज्ञान केन्द्र बिरौली में प्रशिक्षण कार्यक्रम

किसानों को संबोधित करते डॉ. तिवारी व अन्य।

भास्कर न्यूज | पूसा

कृषि विज्ञान केन्द्र बिरौली में झारखंड के लोहरदगा से आए 50 किसानों के लिए प्रशिक्षण सह शैक्षणिक भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन कृषि विज्ञान केन्द्र बिरौली के वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान डॉ. आरके तिवारी ने किया। इस अवसर पर मौजूद किसानों को संबोधित करते हुए डॉ. तिवारी ने कहा कि किसान कृषि में नवीन तकनीकों का समावेश कर खेती को बेहतर बनाते हुए उससे अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि मौजूदा समय में किसानों के लिए एक से बढ़कर एक कृषि तकनीक उपलब्ध हैं। किसानों को इन तकनीकों से फायदा उठाने की जरूरत हैं। उन्होंने बताया कि यह प्रशिक्षण सह शैक्षणिक भ्रमण कार्यक्रम पांच दिवसीय है। इस पांच दिनों के दौरान प्रशिक्षणार्थियों को कृषि की विभिन्न तकनीकियों के बारे में बताया एवं दिखाया जाएगा। केवीके के उद्यानिकी विशेषज्ञ डॉ. धीरू कुमार तिवारी ने किसानों को बागवानी के सम्बन्ध में जानकारी दी। सस्य विशेषज्ञ भारती उपाध्याय ने प्राकृतिक खेती एवं जैविक खेती के बारे में किसानों को बताया। ई. विनिता कश्यप ने कृषि यंत्रों के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि किसान छोटे छोटे कृषि यंत्रों का उपयोग करके कृषि के लागत में कमी ला सकते हैं। गृह विज्ञान विशेषज्ञ वर्षा कुमारी ने केला रेशा से मूल्यवर्धित उत्पाद बनाने के बारे में किसानों को जानकारी दी। पौध सुरक्षा विशेषज्ञ सुमित कुमार सिंह ने मशरूम उत्पादन तकनीक के बारे में किसानों को बताया।

भास्कर 21/2/25 पेज 18

कार्यक्रम • डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के विद्यापति सभागार में राज्य स्तरीय गन्ना किसान संगोष्ठी

पूसा विवि के सहयोग से उद्योग विभाग गुड़ उत्पादन में पहले स्थान पर आएगा : मंत्री

मंत्री ने कहा- किसानों को गन्ना उत्पादन के क्षेत्र में प्रेरित करने को चलाई जा रही योजनाएं

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के विद्यापति सभागार में गन्ना उद्योग विभाग द्वारा बिहार में गन्ना के उत्पादन में वृद्धि एक चुनौती के विषय पर राज्य के विभिन्न जिलों से पहुंचे गन्ना उत्पादक किसानों के लिए एक राज्य स्तरीय गन्ना किसान संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी का उद्घाटन संगोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि पहुंचे बिहार सरकार के गन्ना उद्योग विभाग के मंत्री कृष्णनंदन पासवान ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर मौजूद गन्ना उत्पादक किसान व विवि के गन्ना वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए गन्ना उद्योग विभाग के मंत्री कृष्णनंदन पासवान ने कहा की गन्ना उद्योग विभाग और विवि के सहयोग से आने वाले समय में बिहार गुर उत्पादन में नंबर 1 स्थान को प्राप्त करेगा। उन्होंने कहा कि गन्ना उद्योग विभाग पिछले एक साल में अपने लक्ष्य के अनुरूप 12 राज्यस्तरीय गन्ना किसान संगोष्ठी का आयोजन कर चुका हैं। इस संगोष्ठी से बिहार के गन्ना उत्पादक किसानों को काफी फायदा मिलेगा। उन्होंने कहा कि

संगोष्ठी में मौजूद गन्ना उत्पादक किसान व पुसा के गन्ना वैज्ञानिक।

गन्ना उत्पादन के क्षेत्र में गन्ना विभाग और उससे जुड़े अधिकारियों के साथ-साथ विवि के गन्ना वैज्ञानिक सभी बेहतर से बेहतर काम कर रहे हैं। आने वाले समय में बिहार गन्ना उत्पादन में देश में नंबर स्थान को प्राप्त करेगा। उन्होंने कहा कि पीएम नरेंद्र मोदी और सीएम नीतीश कुमार दोनों बिहार के गन्ना उत्पादक किसानों को आगे बढ़ाने के लिए दृढ़संकल्पित हैं। उन्होंने कहा कि गन्ना उद्योग विभाग के अधिकारी और कर्मियों की मेहनत के बदौलत चार वर्षों से बंद पड़े रिगा चीनी को चालू करा दिया गया है। गन्ना उद्योग विभाग द्वारा गन्ना उत्पादक किसान एवं अन्य किसानों को गन्ना उत्पादन के क्षेत्र में प्रेरित करने के लिए कई तरह की योजनाएं भी चलाई जा रही है। विभाग द्वारा गन्ना उत्पादक किसानों के लिए चलाए जा रहे योजनाओं का लाभ गन्ना उत्पादक किसानों को उठाना चाहिए। उन्होंने कहा कि वैसे किसान जो गन्ना की खेती नही करते हैं वैसे किसान भी कम से कम खाने के उद्देश्य से ही गन्ना जरूर लगाएं। इसकी खेती किसानों के लिए अत्यंत ही लाभकारी हैं। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में गन्ना का रेट सरकार ने 370 रुपये क्विंटल जबकि बिहार में 375 रुपए क्विंटल तय किया गया है।

गन्ना उत्पादन और प्रसंस्करण के अलावे गन्ना उत्पादक किसानों को काफी फायदा मिलेगा

कृषि विवि पुसा के कुलपति डॉ. पीएस पांडेय ने कहा कि पूसा कृषि शिक्षा, अनुसंधान और प्रसार की जन्मस्थली है। उन्होंने कहा कि पूसा विवि के गन्ना अनुसंधान केंद्र द्वारा विकसित किये गए गन्ना के तमाम प्रभेदों के बीज किसानों के लिए सदैव उपलब्ध रहेंगे। उन्होंने कहा कि बिहार में गन्ना उत्पादन की संभावनाओं को देखते हुए देश का पहला चीनी मिल सबसे पहले बिहार में ही लगाया गया था। उन्होंने कहा कि इस संगोष्ठी से गन्ना उत्पादन और प्रसंस्करण के अलावे गन्ना उत्पादक किसानों को काफी फायदा मिलेगा। बिहार के ईख आयुक्त अनिल झा ने कहा की गन्ना उत्पादन को बढ़ावा देने में पूसा विवि और यहां के गन्ना वैज्ञानिकों का काफी अहम योगदान हैं। उन्होंने कहा कि किसी कालखंड में किसी कारणवश गन्ना उत्पादन में कमी आ गई थी। हालांकि अब यह स्थिति नही हैं। गन्ना उत्पादक किसानों की मेहनत और लगन से जल्द ही बिहार गन्ना उत्पादन में अव्वल स्थान को प्राप्त कर लेगा।

भास्कर 21/2/25 पेज 17

जलवायु परिवर्तन के दौर में मशरूम उत्पादन रोजगार का बेहतर साधन

उद्यमिता विकास विषय पर एफपीओ मॉडल के तहत पांच दिवसीय प्रशिक्षण

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा स्थित संचार केंद्र भवन के पंचतंत्र सभागार में मशरूम के मूल्य वर्धित उत्पादों से अनुसूचित जाति के किसानों का उद्यमिता विकास करने के विषय पर एफपीओ मॉडल के तहत पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण का उद्घाटन आधार विज्ञान एवं मानविकी संकाय के डीन डा. अमरेश चंद्रा ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर मौजूद प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए

प्रशिक्षणार्थियों के साथ मौजूद वैज्ञानिक।

डॉ. अमरेश चंद्रा ने कहा कि जलवायु परिवर्तन के दौर में मशरूम उत्पादन छोटे किसानों के लिए आजीविका का एक बेहतर साधन बन गया है। बिहार में मशरूम उत्पादन के क्षेत्र में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। देश भर में बिहार प्रथम स्थान पर पहुंच चुका है। देश भर में एक लाख 35 हजार टन मशरूम का उत्पादन हो रहा है। मशरूम उत्पादन में अकेले बिहार में 40 हजार टन मशरूम का उत्पादन हो रहा है।

मशरूम के उत्पादन में आई अप्रत्याशित वृद्धि : डा. अमरेश

मशरूम प्रशिक्षण में मौजूद प्रशिक्षणार्थी एवं वैज्ञानिक • जागरण

संस, जागरण, पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित संचार केंद्र के पंचतंत्र सभागार में गुरुवार को मशरूम के मूल्यवर्धित उत्पादों द्वारा अनुसूचित जातियों का उद्यमिता विकास विषय पर एफपीओ माडल पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण शुरू हुई। अध्यक्षीय संबोधन में विज्ञान एवं मानविकी संकाय के डीन डा. अमरेश चंद्रा ने कहा कि जलवायु परिवर्तन की दौर में मशरूम उत्पादन आजीविका साधन बन गया है। बिहार के मशरूम उत्पादन में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। देश भर में बिहार प्रथम स्थान पर पहुंच चुका है। देश भर में एक लाख 35 हजार टन मशरूम उत्पादन हो रहा है। एशिया महादेश के सभी देशों की बात करें तो केवल चाइना 95 प्रतिशत मशरूम उत्पादन कर रहा है। बिहार में मशरूम अब आलू का विकल्प बनने के लिए तैयार है। मशरूम का बेहतर प्रसंस्करण हो तो विदेशों की बाजार में टक्कर दिया जा सकता है। प्रसार शिक्षा निदेशक डा. मयंक राय ने कहा कि मशरूम देश भर के लोगों के बीच पसंदीदा व्यंजन के रूप में परोसा जा रहा है। हालांकि मांग के अनुसार मशरूम उत्पादन ही नहीं हो रहा है। मशरूम के बीज निर्माण में भी रोजगार का अवसर है। वैज्ञानिक मुकेश कुमार ने कहा कि औषधीय गुणों से भरपूर मशरूम अब भारत ही नहीं विश्व स्तर के बाजारों में बिकने के लिए तैयार है। प्रशिक्षण के दौरान स्वागत भाषण मशरूम विशेषज्ञ डा दयाराम ने की। संचालन मशरूम वैज्ञानिक सुधानंदनी ने की। धन्यवाद ज्ञापन डा. आरपी प्रसाद ने की। मौके पर टेक्निकल टीम के सुरेश कुमार एवं सुभाष कुमार आदि मौजूद थे।

Dainik Jagran 21-02-2025

गुड़ प्रोसेसिंग प्लांट से बढ़ेगी राज्य में गन्ना की खेती

बिहार के गन्ना उत्पादकों को उत्तरप्रदेश से अधिक मिल रही कीमत, किसानों की समस्याएं होंगी दूर : मंत्री

- केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में हुई राज्यस्तरीय गन्ना किसान संगोष्ठी
- गन्ने की खेती करने के लिए कृषि यंत्रों पर अनुदान भी दे रही सरकार

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में संगोष्ठी को संबोधित करते गन्ना मंत्री कृष्णनंदन पासवान व अन्य अतिथि • जागरण

संस, जागरण, पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के विद्यापति सभागार में राज्य स्तरीय गन्ना किसान संगोष्ठी गुरुवार को आयोजित हुई। बिहार सरकार के गन्ना मंत्री कृष्ण नंदन पासवान ने कहा कि बिहार में गुड़ की प्रोसेसिंग प्लांट बैठते ही प्रत्येक जिलों में गन्ने की खेती बढ़ोतरी होगी। प्रोसेसिंग प्लांट के लिए गन्ने की जरूरत पड़ेगी। किसान इसी बहाने गन्ना की खेती प्रारंभ करेंगे। मंत्री ने कहा कि गन्ना उत्पादन करने में किसानों को जो भी समस्या उत्पन्न होगी उसका विभाग जल्द समाधान करेगी। जिससे किसानों को कोई भी कठिन ना हो। केंद्र से लेकर राज्य सरकार तक गन्ने के विकास के लिए कई योजनाएं बनाई हैं एवं उनकी खेती करने के लिए कृषि यंत्रों पर भी अनुदान दे रही है। साथ ही विभाग किसानों तक उपयोगी योजनाओं को पहुंचा रही है।

उत्तर प्रदेश से बिहार के किसानों को मिल रही अधिक कीमत : मंत्री ने कहा कि अभी बिहार में उत्तर प्रदेश से ज्यादा गन्ने की कीमत किसानों को मिल रही है। उत्तर प्रदेश में गन्ने की कीमत 370 रुपये हैं वहीं बिहार में 375 प्रति क्विंटल है। देखा जाए तो बिहार में गन्ने की खेती मात्र सात से आठ जिलों में जमकर होती है। हमें इसे गुड़ प्रोसेसिंग प्लांट के माध्यम से बढ़ाना है। इसके लिए सरकार 50 प्रतिशत की अनुदान अभी दे रही है। समस्तीपुर, छपरा एवं सिवान में 10 लोगों को गुड़ प्रोसेसिंग के लिए आदेश दिया गया है। बिहार गन्ने के उत्पादन में राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने के लिए दिन रात मेहनत कर रही है। जरूरत है वैज्ञानिक, पदाधिकारी एवं किसानों को एक साथ मिलकर इसकी खेती को बढ़ाने की। मंत्री ने मौजूद किसानों से कहा कि संगोष्ठी से प्राप्त ज्ञान को अपने ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचार प्रसार करें और इसकी खेती ज्यादा से ज्याद कर मुनाफा कमाने की अपील करें।

किसानों को बीज की नहीं होने देगी कमी : कुलपति डा. पीएस पांडे ने कहा कि गन्ना उत्पादन के क्षेत्र में किसानों को बीज की कमी विश्वविद्यालय नहीं होने देगी। विश्वविद्यालय के द्वारा विकसित कई ऐसे प्रभेद है जो यहां के लिए काफी उपयुक्त है। यहां तक की छठ पर्व के लिए भी एक विशेष प्रभेद विकसित की गई है। जिनकी डिमांड किसानों के बीच काफी है। कुलपति ने कहा कि देश में पहला चीनी मिल बिहार में खुली थी। इसके बावजूद भी बिहार में इस क्षेत्र में काफी विकास संतोषजनक नहीं हो पाई। बिहार में गन्ना विकास के लिए बिहार सरकार के साथ मिलकर कार्य कर रही है। आने वाले समय में इस क्षेत्र में काफी सफलता मिलने की संभावना है। गन्ना निदेशक अनिल कुमार झा ने गन्ने की खेती में होने वाले समस्याओं पर किसानों के साथ चिंतन मंथन किया। कहा कि इस क्षेत्र में जो भी समस्या हो अगर विभाग के द्वारा समाधान नहीं किया जाता है तो सीधी तौर पर मुझसे बात करें। उन्होंने किसानों को सलाह दी कि गन्ने की बीज उत्पादन में ज्याद मुनाफा किसानों को होगी। बीज उत्पादन करने वाले किसान को गन्ना की बीज की कीमत 425 रुपये प्रति क्विंटल निर्धारित की गई है। विश्वविद्यालय की सहभागिता से निदेशक काफी प्रसन्न थे और उनका कहना था विश्वविद्यालय और विज्ञान के सहयोग से जल्द ही इस क्षेत्र में क्रांति आएगी। उन्होंने कहा कि भारत में बिहार ही एक ऐसा इकलौता राज्य है जहां बिहार सरकार के द्वारा 10 रुपये प्रति क्विंटल अतिरिक्त गन्ने की कीमत दी जाती है। इस क्षेत्र में सरकार अनुसंधान एवं किसान सहित मिल प्रबंधन का सहयोग मिल रहा है। जिससे लगता है कि गन्ना के क्षेत्र में जल्द ही क्रांति आएगी। मौके पर 10 गन्ना प्रसंस्करण केंद्र को स्वीकृति मिली। जिसका प्रमाण पत्र मौके पर ही वितरण किया गया। मौके पर डा. अरविंद कुमार, डा. महेंद्र प्रताप सिंह, डा. देवेंद्र सिंह, डा. एसएन सिंह, डा. नवनीत कुमार आदि उपस्थित रहे।

Dainik Jagran 21-02-2025

बिहार में गन्ना की उत्पादकता में वृद्धि एक चुनौती विषय पर राज्यस्तरीय कार्यशाला का किया गया आयोजन, किसानों को दी सलाह

गुड़ प्रोसेसिंग प्लांट पर मिलेगा 50% अनुदान

बोले मंत्री

पूसा, निज संवाददाता। राज्य के गन्ना उद्योग मंत्री कृष्णनंदन पासवान ने कहा कि गन्ना उत्पादन व इससे जुड़े व्यवसाय को देश में नंबर-1 पर पहुंचाना लक्ष्य है। इसको लेकर विभाग कई योजनाएं चला रही है। जिससे गन्ना की पैदावार बढ़ाने के साथ किसानो की समृद्धि व रोजगार के अवसर प्रदान किया जा सके। इसी कड़ी में सरकार गुड़ प्रोसेसिंग प्लान्ट की स्थापना पर 50 प्रतिशत तक अनुदान दे रही है। इसके अलावा गन्ना के उत्पादन के प्रति किसानो को जागरूक करने व उनकी हर तरह की समस्याओं का निदान के लिए सरकार कृतसंकल्पित है। वे गुरूवार को विवि के विद्यापति सभागार में वैज्ञानिको, गन्ना उत्पादक किसानो व व्यवसायियों को संबोधित कर रहे थे। मौका था बिहार में गन्ना के उत्पादकता में वृद्धि एक चुनौती विषय पर राज्य स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

उन्होंने कहा कि गन्ना क्षेत्र को सशक्त करने को लेकर चार वर्षो से बंद रीगा चीनी मिल को चालू कराया गया है। गुड़ प्रोत्साहन योजना के तहत गुड़ प्रसंस्करण ईकाई की स्थापना भी हो रही है। राज्य के ईखायुक्त अनिल कुमार झा ने कहा कि राज्य भर में गुड़ उद्योग को बढ़ावा देने से गन्ना आधारित खेती व उद्योग को बढ़ावा मिलेगा। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के कुलपति डॉ.पीएस पाण्डेय ने कहा कि विवि किसानो के लाभ के लिए लगातार प्रभेद विकसित कर रही है। उन्होंने कहा विवि राज्य सरकार के साथ मिलकर इसके प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन व मार्केटिंग के क्षेत्र में लगातार कार्य कर रही है। संयुक्त निदेशक महेन्द्र प्रताप सिंह ने गन्ना यंत्रिकरण योजना, मुख्यमंत्री गन्ना विकास योजना आदि योजनाओं पर विस्तार से चर्चा की। इस दौरान बिहार राज्य गुड़ उद्योग प्रोत्साहन कार्यक्रम के तहत चयनित गन्ना किसान एवं गुड़ उद्यमियों को स्वीकृति पत्र का दिया गया।

गुरुवार को विवि के विद्यापति सभागार में वैज्ञानिकों, गन्ना उत्पादक किसानों व व्यवसायियों को संबोधित करते गन्ना उद्योग मंत्री कृष्णनंदन पासवान।

- राज्य में गन्ना की खेती व उद्योग को बढ़ावा मिलेगा
- कृषि प्रदर्शनी में यंत्रों का भी किया निरीक्षण

स्वागत ईख अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ.देवेन्द्र सिंह एवं धन्यवाद उपनिदेशक अरविन्द कुमार ने किया। मौके पर डा.एसएन सिंह, डॉ.नवनीत कुमार, डॉ.मिनानतुल्ला, डॉ.डीएन कामत, डॉ.बलवंत कुमार आदि मौजूद थे। बाद में मंत्री ने विवि के गन्ना प्रभेद, गन्ना से जुड़े कृषि यंत्र, मूल्य संवर्धित सामाग्री आदि से सजी प्रदर्शनी का निरीक्षण किया।

गुरुवार को गन्ना से जुड़े कृषि यंत्र का निरीक्षण करते मंत्री व अन्य।

कई योजनाओं का होगा शिलान्यास और उद्घाटन

वारिसनगर। जिला के प्रभारी मंत्री श्रवण कुमार 21 फरवरी को वारिसनगर प्रखंड में विभिन्न योजनाओं का शिलान्यास व उद्घाटन करेंगे। इसको लेकर योजनाओं के बचे हुए कार्य को तेजी से मुर्त देने का कार्य अंतिम चरण पर है साथ ही विभिन्न योजना से संबंधित स्टाल भी लगाया जाऐगा।इसी क्रम में पुरनाही पंचायत स्थित श्री कुशेशवर उच्च विद्यालय चारो के परिसर में बने खेल मैदान व चाहरदीवारी समेत विभिन्न योजनाओं का उद्घाटन करेंगे।यह खेल मैदान मनरेगा योजना के तहत बनाया जा रहा है। इसे लेकर गुरुवार की शाम जिला के पदाधिकारी व बीडीओ अजमल परवेज,मनरेगा के पीओ रणधीर कुमार आदि निर्माण कार्य का जायजा लिया। निरीक्षण उपरांत बीडीओ अजमल परवेज ने जेई अजीत कुमार दिवाकर को आवश्यक दिशा-निर्देश निर्देश दिए। खेल मैदान में स्कूली बच्चों व ग्रामीण युवाओं के लिए बास्केट बॉल, वॉलीबॉल आदि की सुविधा होगी।

Hindustan 21-02-2025

'खेती में तकनीक समय की है मांग'

पूसा,निज संवाददाता। कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली में गुरुवार को लोहरदगा, झारखंड से आये 50 कृषकों के दल को प्रशिक्षण एवं शैक्षणिक भ्रमण कराया गया। इस दौरान आयोजित कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में केन्द्र के प्रधान डॉ.आरके तिवारी ने कहा कि यह प्रशिक्षण सह शैक्षणिक भ्रमण पांच दिवसीय है।

कृषि विज्ञान केन्द्र में किसानो को संबोधित करते केन्द्र के प्रमुख व अन्य।

इन पांच दिनों के दौरान कृषि की विभिन्न तकनीकियों के बारे में जानकारी दी जायेगी। उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि कृषि की नवीनतम तकनीकों का समावेश अपने खेती में करके किसान अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं।

उद्यानिकी विशेषज्ञ डॉ धीरू कुमार तिवारी ने किसानों को बागवानी के सम्बन्ध, सस्य विशेषज्ञ भारती उपाध्याय ने प्राकृतिक खेती एवं जैविक खेती, ई. विनिता कश्यप ने कृषि यंत्रों के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि किसान छोटे छोटे कृषि यंत्रों का उपयोग करके लागत में कमी ला सकते हैं। पौधा सुरक्षा विशेषज्ञ सुमित कुमार सिंह ने मशरूम उत्पादन तकनीकी से लोगों को अवगत कराया।

Hindustan 21-02-25

प्रशिक्षण | मशरूम के मूल्य वर्धक विषय पर 5 दिवसीय प्रशिक्षण शुरू, दो सौ प्रतिशत बढ़ सकता मशरूम का उत्पादन:निदेशक

40 हजार टन मशरूम उत्पादन कर बिहार देश में अव्वल

पूसा,निज संवाददाता। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के डीन(बेसिक साइंस) डॉअमरेश चन्द्रा ने कहा कि बदलते समय में मशरूम आलू की जगह ले सकता है। इस दिशा में राज्य तेजी से विकास करते हुए 40 हजार टन मशरूम का उत्पादन कर देश मे अव्वल है। बाबजूद इस क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं। इसके लिए अब उत्पादन के साथ मूल्य संवर्धन व मार्केटिंग क्षेत्र को गति देने की जरूरत है। इसमें एफपीओ बनाकर कार्य करना एक बेहतर विकल्प है। जिससे किसानो को उसका समुचित लाभ मिल सके। वे गुरूवार को विवि के पंचतंत्र सभागार में बिहार व झारखंड से आये किसान प्रशिक्षुओं को संबोधित कर रहे थे। मौका था भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित पोषित (अनुसूचित जाति उपपरियोजना के तहत) मशरूम के मूल्य वर्धक विषय पर 5 दिवसीय प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र का। निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ.मयंक राय ने कहा कि मशरूम का उत्पादन दो सौ प्रतिशत तक बढ़ाया जा सकता है। इसके साथ ही मशरूम से जुड़े व्यवसाय को भी गति देने की जरूरत है। इसमें मशरूम बीज उत्पादन, प्रोसेसिंग, मार्केटिंग समेत इससे जुड़े अन्य कार्य रोजगार के अवसर प्रदान कर आर्थिक लाभ पहुचाने में सहायक होंगे।उन्होने कहा कि मशरूम में औषधीय गुण होने के कारण कई रोगों में लाभ पहुंचाता है। वैज्ञानिक डॉ.मुकेश कुमार ने कहा कि मशरूम स्वादिष्ट होने के साथ पौष्टिक आहार के रूप में लगातार उभर रहा है। इसके व्यंजन लोग काफी पसंद कर रहे है। विवि इसे गति देने में जुटा है। मशरूम वैज्ञानिक डॉ.दयाराम ने स्वागत करते हुए कहा कि विवि उत्पादन, मूल्य संवर्धन एवं खपत बढ़ाने में एक नई दिशा दे रहा है। संचालन डॉ.सुधानंदनी एवं धन्यवाद डॉ.आरपी प्रसाद ने किया।

प्रशिक्षण के दौरान गुरुवार को केंद्रीय कृषि विवि में बिहार और झारखंड के किसान प्रशिक्षुओं के साथ डीन-डायरेक्टर व अन्य। ● हिन्दुस्तान

Hindustan 21-02-2025

बिहार गन्ना उत्पादन में देश में बनेगा अग्रणी : मंत्री

समस्तीपुर कार्यालय (एसएनबी)। डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के विद्यापति सभागार में गन्ना उद्योग विभाग के द्वारा बिहार में गन्ना के उत्पादन में वृद्धि एक चुनौती के विषय पर राज्य के विभिन्न जिलों से पहुँचे गन्ना उत्पादक किसानों के लिए एक वृहत गन्ना किसान संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी का उद्घाटन संगोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि पहुँचे बिहार सरकार के गन्ना उद्योग विभाग के मंत्री कृष्णनंदन पासवान ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर मौजूद गन्ना उत्पादक किसान व विवि के गन्ना वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए गन्ना उद्योग विभाग के मंत्री कृष्णनंदन पासवान ने कहा की गन्ना उद्योग विभाग पिछले एक साल में अपने लक्ष्य के अनुरूप 12 राज्यस्तरीय गन्ना किसान संगोष्ठी का आयोजन कर चुका है। इस संगोष्ठी से बिहार के गन्ना उत्पादक किसानों को काफी फायदा मिलेगा। उन्होंने कहा कि गन्ना उत्पादन के क्षेत्र में गन्ना विभाग और उससे जुड़े अधिकारियों के साथ-साथ विवि के गन्ना वैज्ञानिक सभी बेहतर से बेहतर काम कर रहे है। आने वाले समय में बिहार गन्ना उत्पादन में देश में नंबर स्थान को प्राप्त करेगा। उन्होंने कहा कि पीएम नरेंद्र मोदी

संगोष्ठी को संबोधित करते मंत्री।

कार्यक्रम में मौजूद वैज्ञानिक व अन्य।

और सीएम नीतीश कुमार दोनों बिहार के गन्ना उत्पादक किसानों को आगे बढ़ाने के लिए दृढ़संकल्पित हैं। उन्होंने कहा की गन्ना उद्योग विभाग के अधिकारी और कर्मियों की मेहनत के बदौलत चार वर्षो से बंद पड़े रीगा चीनी को चालू करा दिया गया है। गन्ना उद्योग विभाग के द्वारा गन्ना उत्पादक किसान एवं अन्य किसानों को गन्ना उत्पादन के क्षेत्र में प्रेरित करने के लिए कई तरह की योजनाएं भी चलाई जा रही है। विभाग द्वारा गन्ना उत्पादक किसानों के लिए चलाए जा रहे योजनाओं का लाभ गन्ना उत्पादक किसानों को उठाना चाहिए। उन्होंने कहा कि वैसे किसान जो गन्ना की खेती नही करते है वैसे किसान भी कम से कम खाने के उद्देश्य से ही गन्ना जरूर लगाएं। इसकी खेती किसानों के लिए अत्यंत ही लाभकारी है। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में गन्ना का रेट सरकार ने 370 रुपये क्विंटल जबकि बिहार में 375 रुपए क्विंटल तय किया गया है। कृषि विवि पुसा के कुलपति डॉक्‌ पीएस पांडेय ने कहा की पूसा कृषि शिक्षा, अनुसंधान और प्रसार की जन्मस्थली है। उन्होंने कहा कि पूसा विवि के गन्ना अनुसंधान केंद्र द्वारा विकसित किये गए गन्ना के तमाम प्रभेदों के बीज किसानों के लिए सदैव उपलब्ध रहेंगे। उन्होंने कहा कि बिहार में गन्ना उत्पादन की संभावनाओं को देखते हुए देश का पहला चीनी मिल सबसे पहले बिहार में ही लगाया गया था। उन्होंने कहा कि इस संगोष्ठी से गन्ना उत्पादन और प्रसंस्करण के अलावे गन्ना उत्पादक किसानों को काफी फायदा मिलेगा। बिहार के ईख आयुक्त अनिल झा ने कहा की गन्ना उत्पादन को बढ़ावा देने में पूसा विवि और यहां के गन्ना वैज्ञानिकों का काफी अहम योगदान है। उन्होंने कहा कि किसी कालखंड में किसी कारणवश गन्ना उत्पादन में कमी आ गई थी। हालांकि अब यह स्थिति नही है। गन्ना उत्पादक किसानों की मेहनत और लगन से जल्द ही बिहार गन्ना उत्पादन में अव्वल स्थान को प्राप्त कर लेगा। उन्होंने कहा कि बिहार पहला राज्य है जहाँ गन्ना उत्पादको को पूरे देश में सबसे ज्यादा गन्ने की कीमत मुहैया कराई जा रही है। उन्होंने कहा कि आज के दौर में गन्ना उत्पादक किसान गन्ने की फसल के साथ अन्य तरह के फसलों को लगाकर दोहरा लाभ कमा रहे है। मौके पर गन्ना विभाग के संयुक्त निदेशक महेंद्र प्रताप सिंह, अरबिंद कुमार, ईख अनुसंधान संस्थान पुसा के निदेशक डॉ. देवेंद्र सिंह, डॉ. एस एन सिंह, डॉ. नवनीत कुमार, डॉ. डीएन कामत, डॉ. कुमार राज्य वर्धन आदि मौजूद थे।

Rashtriya Sahara 21-02-2025

केविके बिरौली ने किया शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन

समस्तीपुर (एसएनबी)। जिले के बिरौली स्थित कृषि विज्ञान केन्द्र में लोहरदगा, झारखण्ड से आए 50 कृषकों के दल केलिए शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली के वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान डॉ आरके तिवारी ने बताया कि यह प्रशिक्षण सह शैक्षणिक भ्रमण पांच दिवसीय है। इन पांच दिनों के दौरान .षि की विभिन्न तकनीकों के बारे में बताया एवं दिखाया जाएगा। उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि .षि की नवीन तकनीकों का समावेश अपने खेती में करके किसान अपनी आय में वृद्धि कर सकते है। उद्यानिकी विशेषज्ञ डॉ धीरू कुमार तिवारी ने किसानों को बागवानी के सम्बन्ध में जानकारी दी। सस्य विशेषज्ञ भारती उपाध्याय ने प्रा.तिक खेती एवं जैविक खेती के बारे में चर्चा की। ई. विनिता कश्यप ने .षि यंत्रों के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि किसान छोटे छोटे .षि यंत्रों का उपयोग करके लागत में कमी ला सकते हैं। गृह विज्ञान विशेषज्ञ वर्षा कुमारी ने प्रसंस्.त उत्पादों एवं केला रेशा से मूल्यवर्धित उत्पाद बनाने के बारे में जानकारी दी। पौध सुरक्षा विशेषज्ञ सुमित कुमार सिंह ने मशरूम उत्पादन तकनीक के बारे में बताया।

उद्घाटन सत्र को संबोधित करते डॉ तिवारी।

Rashtriya Sahara 21-02-2025

उन्नत प्रबंधन उच्च उपज व बेहतर लाभ की है कुंजीः डॉ. सिंह

समस्तीपुर कार्यालय (एसएनबी)। केला एक महत्वपूर्ण फल फसल है, जो साल के बारहो महीनों बाजार में उपलब्ध रहता है। जिसे दुनिया भर में उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में उगाया जाता है। केले की अधिकतम उपज प्राप्त करने के लिए, बंच ट्टघौद) के उचित प्रबंधन की आवश्यकता होती है। केले के बंच का सही ढंग से प्रबंधन करने से फलों का आकार, गुणवत्ता और उपज बढ़ती है। उक्त बातें डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि वि वविद्यालय पूसा के प्रधान वैज्ञानिक डॉक्टर एस के सिंह ने खास बातचीत के दौरान कही। उन्होनें बताया कि बंच प्रबंधन का महत्व केले के पौधे के विकास के दौरान, बंच का प्रबंधन फल के उचित विकास और आकार वृद्धि के लिए आवश्यक है। केले के बंच का उचित प्रबंधन से अच्छी गुणवत्ता और अधिक उपज प्राप्त की जा सकती है। इसके लिए थिनिंग, बैगिंग, पोषण प्रबंधन, जल प्रबंधन, बंच सपोर्ट, रोग-कीट नियंत्रण और सही समय पर कटाई जैसे महत्वपूर्ण चरणों का पालन करना आवश्यक है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से बंच प्रबंधन अपनाने से केले की उत्पादकता में सुधार होगा, जिससे किसानों की आय भी बढ़ेगी। डा0 सिंह नें कहा कि थिनिंग या फिंगर थिनिंग प्रक्रिया में, कमजोर, असमान और छोटे हथों ट्टहैंड्स) या फलों ट्टफिंगर्स) को निकाल दिया जाता है। इस प्रक्रिया को करने से, बड़े और स्वस्थ फलों का उत्पादन होता है। पोषक तत्वों का वितरण समान रूप से होता है। पौधे पर अधिक भार नहीं पड़ता और गिरने का खतरा कम होता है।

उन्नत फसल व कृषि वैज्ञानिक।

वैज्ञानिक नें बताया कि बंच बैगिंग केले के फलों को कीट, रोग और पर्यावरणीय तनाव से बचाने के लिए एक प्रभावी तकनीक है। बंच बैगिंग फलों की त्वचा चिकनी और दाग रहित रहती है। इससे तापमान में स्थिरता बनी रहती है, जिससे बंच समान रूप से परिपक्वता को प्राप्त करता है। साथ ही कीटों जैसे, केला स्कैरिंग बीटल से सुरक्षा मिलती है और फलों का रंग और चमक बेहतर होती है, जिससे बाजार मूल्य अधिक मिलता है। सामान्य अवधि से एक हफ्ता पहले ही बंच परिवक्व हो जाता है और नील गाय सहित जंगली जानवरों से बंच का बचाव भी होता है। रोग और कीटों के प्रबंधन के संदर्भ में उन्होनें बताया कि बंच के अच्छे विकास के लिए कीट और रोग नियंत्रण भी आवश्यक है। सिगाटोका रोग हो तो प्रोपिकोनाजोल 0.1ः या मैंकोजेब 0.2ः का छिड़काव करें। फलों का धब्बा रोग दिखे तो कार्बेन्डाजिम 0.1ः का छिड़काव करें। थ्रिप्स और स्केल कीट को नीम तेल 5ः या क्लोरपायरीफॉस 0.2ः का छिड़काव करें नियंत्रित किया जा सकता है।

Rashtriya Sahara 21-02-2025

मछली के अचार व कटलेट लोकप्रिय व्यंजन : डॉ सिंह

प्रमाणपत्र के साथ प्रतिभागी.

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ मात्स्यिकी महाविद्यालय के सभागार में समस्तीपुर जिला के चयनित अनुसूचित जाति के 25 प्रशिक्षणार्थियों के लिए आयोजित तीन दिवसीय व्यावहारिक एवं क्रियाशील प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन सह प्रमाण पत्र वितरण समारोह हुआ.

मुख्य अतिथि कीट विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक डॉ पुष्पा सिंह ने कहा कि बिहार राज्य फिलवक्त मछली का हब बन चुका है. इसे वैज्ञानिकी विधि से व्यवसायिक रूप देने के लिए संवारने की जरूरत है. मत्स्यपालन के क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बेहतर व्यवसाय एवं अग्रणी आमदनी का सूचक है. मछली के उत्पादन की तरफ से विभिन्न उत्पादों के निर्माण करने की दिशा में पहल करने की जरूरत है. जिंदा मछली ही हमेशा लोग खाना पसंद करते है. मछली से बने भिन्न भिन्न उत्पादों को वैल्यू एडिशन करने पर अधिक आमदनी संभव है. मछली के अचार एवं कटलेट काफी लोकप्रिय व्यंजनों में शुमार है. मछली से बने उत्पादों को लंबे समय तक रखने के लिए क्षमतावर्धन करने की दिशा में भी सोचने की जरूरत है. फार्मर प्रोड्यूसर संगठन बनकर मत्स्य को बाजारीकरण करने पर बेहतर आमदनी संभव हो सकता है. उच्च कोटि का पैकेजिंग के साथ गुणवत्तायुक्त उत्पादों का निर्माण करना जरूरी है. स्वागत भाषण करते हुए महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. प्रेम प्रकाश श्रीवास्तव ने कहा कि अर्जित तकनीकी ज्ञान से समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े लोगों को भी स्वरोजगार से जोड़कर आमदनी दिलाने की आवश्यकता है.

अधिष्ठाता डा श्रीवास्तव ने कुलपति की दूरदर्शिता की प्रशंसा की. संचालन रोशन कुमार राम ने किया. धन्यवाद ज्ञापन वैज्ञानिक एवं प्रशिक्षण संयोजिका डॉ. तनुश्री घोड़ई ने किया. मौके पर महाविद्यालय की वैज्ञानिक व प्रशिक्षण कार्यक्रम की संयोजिका डॉ तनुश्री घोड़ई, वैज्ञानिक डॉ. शिवेन्द्र कुमार, डॉ मुकेश कुमार सिंह, डॉ सुजीत कुमार नायक, डॉ राजीव कुमार ब्रह्मचारी, डॉ अनिरुद्ध कुमार, रोशन कुमार राम अधिष्ठाता के निजी सहायक डॉ.राजेश कुमार, साजन कुमार भारती थे.

प्रभात खबर
Saturday, February 22, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67b8ba8f38dbd4928e8a79db

केंद्रीय कृषि विवि स्थित संचार केंद्र के पंचतंत्र सभागार में कार्यक्रम

टिकाऊ कृषि, पौधों व पशुओं के उत्पादन व वितरण को एकीकृत दृष्टिकोण : डॉ राय

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित संचार केंद्र के पंचतंत्र सभागार में टिकाऊ खेती के लिए फसल विविधीकरण विषय पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण की शुरुआत की गई. अध्यक्षता करते हुए डीन पीजीसीए सह प्रसार शिक्षा निदेशक डा मयंक राय ने कहा कि टिकाऊ कृषि, पौधों और पशुओं के उत्पादन और वितरण के लिए एक एकीकृत व्यवस्थित दृष्टिकोण है जो पर्यावरण की रक्षा करता है. पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधन आधार का विस्तार करता है और गैर-नवीकरणीय संसाधनों का सबसे कुशल उपयोग करता है. फसल

वैज्ञानिक के साथ प्रतिभागी.

विविधीकरण टिकाऊ कृषि का आधार है, जो कृषि उत्पादकता, मृदा स्वास्थ्य और पर्यावरण लचीलापन बढ़ाने वाले कई लाभ प्रदान करता है. इससे पहले नालंदा से आये प्रतिभागियों के बीच आगत अतिथियों ने दीप जलाकर प्रशिक्षण सत्र का शुभारंभ किया गया. शश्य विज्ञान विभाग के प्राध्यापक सह जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केंद्र के निदेशक डा रत्नेश कुमार झा ने कहा कि जलवायु परिवर्तन की दौर में विभिन्न प्रकार की फसलें उगाकर, किसान अपनी कृषि प्रणालियों को अनुकूलित कर सकते हैं. जलवायु अनुकूल कृषि को अपने खेती में समाहित कर जोखिम कम कर सकते है. पारिस्थितिक संतुलन में योगदान दे सकते हैं. डा रवीश चंद्रा ने कहा कि विविधीकरण या तो व्यावसायिक इकाई के स्तर पर हो सकती है या फिर कॉरपोरेट स्तर पर होता है. फसल विविधता या फसल जैव विविधता कृषि में उपयोग की जाने वाली फसलों, पौधों की विविधता और परिवर्तनशीलता है. इसमें उनकी आनुवंशिक और फेनोटाइपिक विशेषता शामिल हैं. यह कृषि जैव विविधता के एक विशिष्ट तत्व का एक उपसमूह है. संचालन वैज्ञानिक सह प्रसार शिक्षा के समन्वयक प्रशिक्षण डा विनिता सतपथी ने किया. धन्यवाद ज्ञापन वैज्ञानिक डा फूलचंद ने किया. मौके पर प्रतिभागियों सहित टेक्निकल टीम के सुरेश कुमार आदि मौजद थे.

प्रभात खबर
Saturday, February 22, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67b8ba8f38dbd4928e8a79db

बढ़ेगा दिन व रात का तापमान, रहेंगे हल्के बादल

समस्तीपुर. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के ग्रामीण कृषि मौसम सेवा केंद्र व भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से 22 से 26 फरवरी 2025 तक के लिये मौसम पूर्वानुमान जारी किया गया है. पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के बादल आ सकते हैं, हालांकि मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है. इस अवधि में अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान में बढ़ोतरी के साथ यह 29 से 31 डिग्री सेल्सियस एवं 15-19 डिग्री सेल्सियस के बीच बने रह सकता है. पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 2 से 3 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से 22 फरवरी को पुरवा हवा व उसके बाद की अवधि में पछिया हवा चलने का अनुमान है. सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 50 से 55 प्रतिशत रहने की संभावना है. आज का अधिकतम तापमान 29.3 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से 3.1 डिग्री सेल्सियस अधिक रहा. वहीं न्यूनतम तापमान 13.6 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से 1.2 डिग्री सेल्सियस अधिक रहा. इधर, असमय आसमान में बादल छाये रहने से किसानों की चिंता बढ़ती जा रही है.

प्रभात खबर
Saturday, February 22, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67b8ba8f38dbd4928e8a79e

ओस की नन्ही बूंदों से लेकर वर्षा की झरझर धाराओं तक, हर बूंद खेत-खलिहानों को संजीवनी देती है. जल पौधों की वृद्धि के लिए सबसे महत्वपूर्ण तत्व है.

कृषि में ओस और वर्षा जल: फसलों के लिए प्राकृतिक वरदान

जल का पौधों (फसल) के जीवन में विशेष महत्व है और जब ओस की बूंदें और वर्षा का जल फसलों पर गिरते हैं, तो यह उनकी वृद्धि और समृद्धि को बढ़ावा देते हैं. यह प्राकृतिक जल स्रोत न केवल फसलों को आवश्यक नमी और पोषण प्रदान करते हैं, बल्कि मिट्टी के स्वास्थ्य और पारिस्थितिकी तंत्र को भी संतुलित करते हैं. ओस की बूंदें और वर्षा का जल पौधों के लिए प्राकृतिक वरदान हैं. ये न केवल पौधों को आवश्यक नमी प्रदान करते हैं, बल्कि पोषण, मृदा संरक्षण, तापमान नियंत्रण, रोग प्रबंधन और पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने में भी सहायक होते हैं.

संवाददाता, मुजफ्फरपुर

कृषि वैज्ञानिकों का सुझाव है कि किसान इन प्राकृतिक जल स्रोतों का अधिकतम लाभ उठाएं. डॉ. एसके सिंह, विभागाध्यक्ष, पोस्ट ग्रेजुएट विभाग, पौध रोगविज्ञान और नेमाटोलॉजी राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा ने किसानों को सलाह दी है कि वे जल संरक्षण तकनीकों को अपनाएं ताकि फसलें सदैव हरी-भरी और लहलहाती रहें. पानी की हर बूंद अमृत समान होती है. ओस की नन्ही बूंद से लेकर वर्षा की झरझर धाराओं तक, हर बूंद खेत-खलिहानों को संजीवनी देती है. जल पौधों की वृद्धि के लिए सबसे महत्वपूर्ण तत्व है. ओस की बूंदें और वर्षा का जल पौधों के पत्तों, तनों और मिट्टी पर गिरकर नमी को संरक्षित करते हैं. नमी की बढ़ी हुई उपलब्धता पौधों को अधिक तेजी से प्रकाश संश्लेषण करने में सक्षम बनाती है, जिससे उनकी वृद्धि मजबूत होती है. वर्षा का जल मिट्टी में मौजूद पोषक तत्वों को घोलने और इन्हें पौधों की जड़ों तक पहुंचाने में मदद करता है. यह नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटैशियम, और अन्य महत्वपूर्ण पोषक तत्वों को पौधों के लिए आसानी से उपलब्ध कराता है, जिससे उनकी वृद्धि में तेजी आती है. ओस और वर्षा के जल के कारण पत्तियों पर धूल और अवांछित पदार्थ धुल जाते हैं, जिससे सूर्य का प्रकाश बेहतर तरीके से पत्तियों तक पहुंचता है. इससे प्रकाश संश्लेषण की दर में वृद्धि होती है, जो पौधों को अधिक ऊर्जा प्राप्त करने में मदद करती है और उनका विकास स्वस्थ और हरा-भरा होता है. रात के समय तापमान में कमी के कारण वातावरण में ओस का निर्माण होता है. यह ओस पौधों के लिए एक प्राकृतिक जल स्रोत का काम करती है, विशेषकर शुष्क मौसम में, जब मिट्टी में नमी की कमी हो जाती है. ओस की बूंदें पौधों की सतह से धीरे-धीरे अवशोषित हो सकती हैं, जिससे पौधों के ऊतकों में जल का पुनः भरण होता है. यह विशेष रूप से उन पौधों के लिए फायदेमंद हैं, जिन्हें अधिक जल वाष्पोत्सर्जन के कारण जल की कमी होती है. ओस की बूंदों के कारण पौधों की पत्तियों पर एक परत बन जाती है, जो दिन के दौरान अत्यधिक वाष्पोत्सर्जन को रोकने में मदद करती है. इससे पौधे जल की कमी से बचते हैं और उनकी वृद्धि प्रभावित नहीं होती. वर्षा का जल सामान्यतः शुद्ध होता है और इसमें कोई हानिकारक लवण नहीं होते. यह जल पौधों के लिए अत्यधिक उपयुक्त होता है क्योंकि यह प्राकृतिक जल चक्र से आता है और इसमें आवश्यक खनिज भी होते हैं, जो पौधों के लिए लाभकारी होते हैं.

डॉ. एसके सिंह

नाइट्रोजन का प्राकृतिक स्रोत

वर्षा के जल में वायुमंडलीय नाइट्रोजन घुली होती है. यह नाइट्रोजन पौधों की वृद्धि के लिए आवश्यक प्रोटीन और एंजाइमों के निर्माण में मदद करती है. लगातार सिंचाई से मिट्टी की संरचना प्रभावित हो सकती है, लेकिन प्राकृतिक वर्षा जल मृदा कणों को व्यवस्थित करता है और इसकी जल धारण क्षमता को बढ़ाता है. इससे मिट्टी अधिक उपजाऊ बनती है, और पौधों की जड़ों को बेहतर वातावरण मिलता है. गर्मी के मौसम में जब तापमान अधिक होता है, तो वर्षा का जल मिट्टी और पौधों की सतह को ठंडा कर देता है. इससे पौधों की जैव रासायनिक क्रियाएं अधिक प्रभावी हो जाती हैं, और उनका विकास बेहतर होता है. पारिस्थितिक संतुलन, हानिकारक कीटों और रोगों में कमी वर्षा जल और ओस की बूंदें पौधों की सतह से धूल और कीटों को हटाने में मदद करती हैं. इससे पौधों में फफूंदी जनित रोगों और कीट संक्रमण का खतरा कम हो जाता है.

सूखे और अर्ध-सूखे इलाकों में ओस से मिलने वाली नमी को बचाकर किसान जल संकट से बच सकते हैं

नियमित वर्षा से खेतों में सूक्ष्मजीवों की सक्रियता बढ़ जाती है, जिससे जैविक गतिविधियां तीव्र हो जाती हैं. ये सूक्ष्मजीव मृदा को उपजाऊ बनाते हैं और पौधों की जड़ों को आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करते हैं. पारिस्थितिकी तंत्र संतुलित रहता है.

प्रभात खबर
Saturday, February 22, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67b8ba8f38dbd4928e8a79f6

मौसम • 2 से 3 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से 22 फरवरी को पूर्वा व उसके बाद के पछिया हवा चलने का अनुमान

उत्तर बिहार में 26 फरवरी तक आसमान में छा सकते हैं हल्के बादल, अधिकतम व न्यूनतम तापमान में बढ़ोतरी

भास्कर न्यूज़ | समस्तीपुर

उत्तर बिहार के जिलों में 22 से 26 फरवरी तक आसमान में हल्के बादल छाए रह सकते हैं। हालांकि, मौसम शुष्क रहने का अनुमान है। इस दौरान अधिकतम तापमान 29 से 31 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 15 से 19 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के मौसम विभाग के अनुसार, 22 फरवरी को पूर्वा हवा 2 से 3 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चलेगी। इसके बाद पछिया हवा का प्रभाव रहेगा। सुबह सापेक्ष आर्द्रता 80 से 90 प्रतिशत और दोपहर में 50 से 55 प्रतिशत रहने की संभावना है। डॉ. ए. सत्तार, नोडल पदाधिकारी मौसम विभाग पूसा के अनुसार, उत्तर बिहार में 26 फरवरी तक हल्के बादल छाए रह सकते हैं। हालांकि, मौसम शुष्क रहेगा। आने वाले दिनों में तापमान बढ़ने की संभावना है। इसे देखते हुए किसानों को सब्जियों की फसलों की सिंचाई करने की सलाह दी गई है। मटर, टमाटर, बैंगन, मिर्च, प्याज और पत्ता गोभी जैसी फसलों को पानी की जरूरत होगी। सिंचाई से फसलों की वृद्धि बेहतर होगी।

सरसों की फसल हुई तैयार।

बसंतकालीन मक्का और सूर्यमुखी की करें बुआई

बसंतकालीन मक्का की बुआई का यह सही समय है। जुताई से पहले प्रति हेक्टेयर 15-20 टन गोबर की खाद, 40 किलोग्राम नाइट्रोजन, 40 किलोग्राम सल्फर और 30 किलोग्राम पोटाश का प्रयोग करें। बुआई के लिए सुवान, देवकी, गंगा 11, शक्तिमान 1 और 2 किस्में उपयुक्त हैं। बीज दर 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें। बीज को 2.5 ग्राम थीरम या कैप्टान से उपचारित कर बुआई करें। रबी मक्का की फसल में दाना बनने की अवस्था तक नमी बनाए रखें। सूर्यमुखी की बुआई भी करें। बुआई से पहले प्रति हेक्टेयर 100 क्विंटल कम्पोस्ट, 30 किलोग्राम नाइट्रोजन, 80 किलोग्राम स्फूर और 40 किलोग्राम पोटाश का प्रयोग करें। उत्तर बिहार के लिए मोरडेन और पैराडेविक संकुल किस्में उपयुक्त हैं। संकर किस्मों में केबीएसएच-1, केबीएसएच-44, एमएसएफएच-1, एमएसएफएच-4 और एमएसएफएच-17 की सिफारिश की गई है। संकर किस्मों के लिए बीज दर 5 किलोग्राम और संकुल किस्मों के लिए 8 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें। बुआई से पहले प्रति किलोग्राम बीज को 2 ग्राम थीरम या कैप्टान से उपचारित करें।

दैनिक भास्कर - 22/02/25 P- 19

दैनिक भास्कर - 22/02/25 - P-21

मछली पालन के क्षेत्र में रोजगार की अपार संभावना

डॉ. पीपी श्रीवास्तव ने प्रशिक्षुओं का बढ़ाया उत्साह

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ.राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के अधीनस्थ मतस्यकी महाविद्यालय ढ़ोली में मछली से विभिन्न उत्पादों को तैयार करने के विषय पर अनुसूचित जाती से जुड़े 25 किसानों के लिए शुरू हुआ तीन दिवसीय व्यवहारिक एवं क्रियाशील प्रशिक्षण कार्यक्रम शुक्रवार को संपन्न हो गया। इस अवसर पर समापन समारोह में बतौर मुख्य अतिथि पहुंचे तिरहुत कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. प्रेम प्रकाश श्रीवास्तव ने कहा कि इस प्रशिक्षण के दौरान मछली से बनने वाले विभिन्न मूल्य वर्धित उत्पाद जैसे मछली अचार, कटलेट, बिस्कुट आदि बनाने की विस्तार पूर्वक जानकारी वैज्ञानिकों ने प्रशिक्षणार्थियों को दी है। उन्होंने कहा कि मछलीपालन के क्षेत्र में रोजगार की अपार संभावनाएं मौजूद हैं।

छोटे छोटे किसान मछलियों से विभिन्न उत्पाद बनाकर तथा उसे बाजारों में बेचकर अच्छी कमाई कर सकते हैं। उन्होंने सभी प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र देते हुए कहा कि आप सभी प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान को जीवन में उतारकर स्वरोजगार शुरू करते हुए स्वाबलंबी बने। मौके पर मत्स्य पदाधिकारी समस्तीपुर के अलावे वैज्ञानिक डॉ. पुष्पा कुमारी, डॉ. तनुश्री घोड़ई, डॉ. शिवेन्द्र कुमार, डॉ. मुकेश कुमार सिंह, डॉ. सुजीत कुमार नायक, डॉ. राजीव कुमार ब्रह्मचारी, डॉ.अनिरुद्ध कुमार, डॉ. राजेश कुमार, रोशन कुमार राम, साजन कुमार भारती आदि मौजूद थे।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 26 फरवरी तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार में अगले चार दिनों के अंदर आसमान में हल्के बादल छा सकते हैं। हालांकि मौसम शुष्क रहेगा। इस बीच अधिकतम व न्यूनतम तापमान में बढ़ोतरी होगी। इस अवधि में अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान में बढ़ोतरी होगी।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
22 फरवरी	29.0	11.0
23 फरवरी	29.0	12.0
दरभंगा		
22 फरवरी	29.0	13.0
23 फरवरी	29.3	13.0
पटना		
22 फरवरी	30	14.0
23 फरवरी	30	14.0

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 22-02-2025

फागुन में वैशाख का मार्च

जागरण संवाददाता, समस्तीपुर : अभी तो फागुन है, चैत चढ़ने दीजिए...। जेठ-वैशाख तो बहुत बाद के हैं। ये महीने तपाएंगे, झुलसाएंगे। इन महीनों में वर्षा हो न हो अग्निवर्षा जरूर होगी। गर्मी के तेवर ऐसे फागुन में ही वैशाख का मार्च हो। दिन चढ़ते गर्मी और दोपहर में तीखी धूप के साथ पसीना। ठंड के कपड़े तो लगभग उतर गए हैं, बस वृद्धजन और बच्चे दिख जाते हैं गर्म कपड़ों में। धूप तो अब चुभ रही, मुश्किल से सुबह लोग बैठ जाते हैं, नौ बजते-बजते देह झुलसाने लग रही। उत्तर बिहार के प्रायः सभी जिलों में यही स्थिति है। करीब 29 डिग्री सेल्सियस तो तापमान पहुंच चुका है।

29 डिग्री सेल्सियस पार कर चुका है फरवरी में अधिकतम तापमान

- दिन चढ़ते ही दिखने लग रहे धूप के तेवर, निकल रहा पसीना
- उत्तर बिहार के जिलों में आ सकते आसमान में हल्के बादल

वीते एक सप्ताह का तापमान (डिग्री सेल्सियस में)

तिथि	अधिकतम	न्यूनतम
21 फरवरी	29.3	13.6
20 फरवरी	28.9	12.5
19 फरवरी	28.0	11.5
18 फरवरी	27.8	11.8
17 फरवरी	26.5	12.0
16 फरवरी	26.0	9.5
15 फरवरी	25.8	7.7

पछिया हवा चलने का अनुमान

मौसम विभाग के अनुसार, अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान में बढ़ोतरी के साथ इस महीने यह 29 से 31 डिग्री सेल्सियस एवं 15-19 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। अगले चार दिनों में दो से तीन किमी प्रतिघंटे की रफ्तार से 22 फरवरी को पुरवा तथा उसके बाद पछिया हवा चलने का अनुमान है।

पहले पुरवा, फिर चलेगी पछिया हवा : हालांकि, डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के मौसम पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के बादल आ सकते हैं। इस बीच मौसम शुष्क रह सकता है। शुक्रवार को अधिकतम तापमान 29.3 एवं न्यूनतम तापमान 13.6 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। अधिकतम तापमान सामान्य से तीन डिग्री एवं न्यूनतम लगभग एक डिग्री अधिक रिकार्ड किया गया।

Dainik Jagran 22-02-2025

मछली स्वरोजगार का बेहतर विकल्प: डीन

पूसा, निज संवाददाता । डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के मात्स्यिकी महाविद्यालय के डीन डॉ पीपी श्रीवास्तव ने कहा मछली पालन व उससे जुड़े रोजगार को बढ़ावा देने की जरूरत है। यह स्वरोजगार का बेहतर विकल्प है।

इसमें विवि का यह प्रशिक्षण काफी लाभकारी साबित होगा। जरूरत है प्रशिक्षण में प्राप्त ज्ञान को जमीन पर उतार कर आत्मनिर्भर बनने की दिशा में कदम बढ़ाने की। वे शुक्रवार को महाविद्यालय के सभागार में प्रशिक्षुओं को संबोधित कर रहे थे। वैज्ञानिक डॉ पुष्पा कुमारी ने कहा कि समूह बनाकर कार्य करने से उत्पादों का सही मूल्य मिलने के साथ लागत कम और आमदनी में बढ़ोतरी होती है। प्रशिक्षण

कृषि विवि में प्रमाण पत्र के साथ प्रशिक्षु, डीन एवं वैज्ञानिक।

संयोजिका डॉ तनुश्री घोड़ई ने प्रशिक्षण के दौरान मछली के अचार, कटलेट, बिस्कुट आदि के मार्केट में डिमांड से अवगत कराया। प्रशिक्षुओं के बीच प्रमाण पत्र वितरित की गई। मौके पर वैज्ञानिक डॉ शिवेंद्र कुमार, डॉ मुकेश कुमार सिंह, डॉ सुजीत कुमार नायक, डॉ राजीव कुमार ब्रह्मचारी, डॉ अनिरुद्ध कुमार, रौशन कुमार राम, डॉ राजेश कुमार, साजन कुमार भारती आदि मौजूद थे।

Hindustan 22-02-2025

तापमान में होगा इजाफा

समस्तीपुर कार्यालय। डा0 राजेंन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के ग्रामीण कृषि मौसम सेवा एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 26 फरवरी तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार पूर्वानुमान की अवधि मे उत्तर बिहार के जिलों मे आसमान मे हल्के बादल आ सकते है हालांकि इस दौरान मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है। इस अवधि में अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान मे बढोतरी की संभावना है। अधिकतम तापमान 29 सें 31 तथा न्यूनतम तापमान 16 से 19 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।

लौकी के नए फलों का सड़कर खराब हो जाना किसानों के लिए जटिल समस्या : कृषि वैज्ञानिक

समस्तीपुर कार्यालय (एसएनबी)। लौकी के नए फलों का सड़कर खराब हो जाना लौकी उत्पादक किसानों के लिए एक जटिल समस्या है। लौकी उत्पादक किसानों की यह समस्या खासकर ठंढ के सीजन में ज्यादा बढ़ जाती है जिससे किसानों को प्रति वर्ष अत्यधिक नुकसान उठाना पड़ता है। बिहार के लौकी उत्पादक किसान .षि वैज्ञानिकों के तकनीक को अपनाकर अपने लौकी के छोटे छोटे फलों को सड़ने से बचाते हुए लौकी से अच्छा उत्पादन और मुनाफा दोनों प्राप्त कर सकते है। ये बातें डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय .षि विवि पुसा के पादप रोग विभाग के हेड सह वरीय .षि वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार सिंह ने कही। उन्होंने कहा की समस्तीपुर जिले से जुड़े लौकी उत्पादक किसानों पर गौर करें तो पिछले कुछ सालों में यहां लौकी उत्पादक किसानों की संख्या में काफी बढ़ोतरी हुई है। उन्होंने कहा कि ठंड के मौसम में लौकी उत्पादक किसानों के समक्ष कई तरह की चुनौतियां सामने आती है। इन चुनौतियों में से एक लौकी के छोटे-छोटे फलों का सड़ना भी है। छोटे फलों के अचानक सड़कर गिर जाने से जहां लौकी उत्पादक किसानों का उत्पादन काफी घट जाता है। वही किसानों को काफी नुकसान् का सामना भी करना पड़ता है। उन्होंने कहा कि लौकी के फलों में सड़न का मुख्य कारण फंगल संक्रमण और अत्यधिक नमी होता है। फंगल संक्रमण के तहत पाइथियम, फाइटोफ्थोरा और एन्थ्रेक्नोज जैसे फफूंद रोग फल सड़न रोग के मुख्य कारण है। उन्होंने कहा कि फंगल रोग के अलावे बैक्टीरियल वेट रोट रोग भी नमी के कारण काफी तेजी से फैलता है और लौकी के नवजात फलों को नुकसान पहुंचाता है। फ्रूट फ्लाई और रेड पंपकिन बीटल जैसे कीट लौकी के फलों में छेद कर रोग को फैलाने का काम करते है। अत्यधिक नमी, तापमान में उतार-चढ़ाव और असंतुलित उर्वरक का प्रयोग इस रोग के लिए अनुकूल परिस्थितियां पैदा करती है। .षि वैज्ञानिक ने बताया कि सबसे पहले किसान लौकी के बीज को खेतों में लगाने से पूर्व कार्बेन्डाजिम जैसे फफूंदनाशकों से बीज को उपचारित करें तथा उसके बाद ही उसे मिट्टी में बोयें। सबसे जरूरी बात यह भी है कि किसान खेतों में फसल चक्र को जरूर से जरूर अपनाएं। फसल चक्र अपनाने से मिट्टी की उर्वरता शक्ति बढ़ती रहती है। सड़न रोग का जैविक नियंत्रण करने के लिए किसान ट्राइकोडर्मा और प्स्यूडोमोनास का उपयोग करें। खेतों में समय समय पर अलग-अलग फसलों की बुआई करें। ऐसा करने से भी फसलों पर रोगों का प्रकोप कम होता है।

राष्ट्रीय सहारा - 22/02/25 P- 5

गन्ना उत्पादन तकनीक विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण शुरू हुआ

गन्ना उत्पादक किसानों को तकनीकी ज्ञानवर्धन करने की जरूरत : डॉ बेहरा

ट्रेनिंग प्रोग्राम

प्रतिनिधि, पूसा

संबोधित करते निदेशक शिक्षा.

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित ईख अनुसंधान संस्थान के सभागार में गन्ना उत्पादन तकनीक विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण शुरू हुआ. अध्यक्षता करते हुए निदेशक अनुसंधान डा यूके बेहरा ने कहा कि गन्ना उत्पादकों को प्रशिक्षण के दौरान तकनीकी ज्ञानवर्धन करने की जरूरत है. प्रशिक्षण प्राप्त गन्ना उत्पादक किसान क्षेत्र में पहुंच कर अपनी खेती के अलावा अन्य ग्रामीणों को भी स्वरोजगार से जुड़ने के लिए प्रेरित करें. वैज्ञानिकी विधि से गन्ना उत्पादन करने पर कम पानी एवं नगण्य लागत में किसान बेहतर आमदनी प्राप्त कर सकते हैं. गन्ने का मूल्य संवर्धित उत्पादों का निर्माण से बिहार के किसान अधिकाधिक लाभान्वित हो सकते हैं. स्वागत करते हुए संस्थान के निदेशक डा देवेंद्र सिंह ने कहा कि बिहार के पूसा में गन्ना अनुसंधान संस्थान वर्ष 1938 ईसवी से ही संचालित है. वरिष्ठ वैज्ञानिक सह पाठ्यक्रम निदेशक डा एसएन सिंह ने विषय प्रवेश कराते हुए कहा कि जलवायु परिवर्तन की दौर में गन्ना की खेती वैज्ञानिकी विधि से करने पर भारत सरकार के कृषि रोडमैप के अनुसार उत्पादन दर को बढ़ाने में कामयाबी हासिल हो सकेगी. प्रशिक्षण के इस सत्र में 11 व्याख्यान देने का निर्णय लिया गया है. शस्य विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ एसके चौधरी ने कहा कि गन्ने की बुआई के लिए अलग-अलग पारिस्थितिकी के अनुरूप प्रभेदों का चयन करने की आवश्यकता है. वैज्ञानिक डा नवनीत कुमार ने गन्ने उत्पादन वाले क्षेत्र में प्रबंधन करने की दिशा में बल दिया. संचालन संस्थान के वैज्ञानिक डा सुनीता कुमारी मीणा ने किया. धन्यवाद ज्ञापन वरिष्ठ वैज्ञानिक डा डीएन कामत ने किया. मौके पर डा मो. मिनितुल्लाह आदि थे.

प्रभात खबर
Sunday, February 23, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67ba16d563d14d04289ae5fc

मत्स्य पालकों को तकनीकी ज्ञान देने की जरूरत : डॉ सिंह

प्रमाण-पत्र के साथ प्रतिभागी .

प्रतिनिधि, पूसा

डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ मात्स्यिकी महाविद्यालय सभागार में पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग बिहार सरकार द्वारा प्रायोजित पूर्वी चम्पारण जिला के किसानों के लिए छह दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन सह प्रमाण पत्र वितरण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ. मुख्य अतिथि डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के निदेशक अनुसंधान डॉ अनिल कुमार सिंह एवं मात्स्यिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ प्रेम प्रकाश श्रीवास्तव ने प्रशिक्षुओं को प्रमाण-पत्र दिया. वैज्ञानिकों ने बताया कि प्रशिक्षण में अर्जित तकनीकी ज्ञान को मत्स्यपालन में अपनाकर बेहतर लाभ प्राप्त करें. अपने तकनीकी ज्ञान को अन्य मत्स्यपालकों तक पहुंचाने का भी संकल्प लें. मौके पर प्रशिक्षणार्थियों के साथ मात्स्यिकी महाविद्यालय ढोली के शिक्षक डॉ. शिवेन्द्र कुमार, डॉ. राजीव कुमार ब्रह्मचारी, डॉ सुजीत कुमार नायक, डॉ मोगलेकर, एचएस डॉ. मुकेश कुमार सिंह, डॉ अनिरुद्ध कुमार, डॉ. तनुश्री घोड़ई, रोशन कुमार राम, अधिष्ठाता के निजी सहायक डॉ राजेश कुमार, विनोद कुमार, साजन कुमार भारती आदि मौजूद थे.

प्रभात खबर
Sunday, February 23, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67ba16d563d14d04289ae5fc

भास्कर 23/2/25 पेज 19

कार्यक्रम • किसानों के लिए गन्ना उत्पादन की उन्नत तकनीक के विषय पर प्रशिक्षण

गन्ना उत्पादकों को नवीनतम वैज्ञानिक तकनीक से खेती करने की जरूरत, तभी होगा लाभ : उमाकांत

भास्कर न्यूज | पूसा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि पूसा के ईख अनुसंधान संस्थान सभागार में पश्चिम चंपारण के बेतिया से आये गन्ना उत्पादक किसानों के लिए गन्ना उत्पादन की उन्नत तकनीक के विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन विवि के निदेशक शिक्षा डॉ.उमाकांत बेहरा ने सहित अन्य अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर मौजूद प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए डॉ. उमाकांत बेहरा ने कहा कि जलवायु परिवर्तन के दौर में किसानों को नवीनतम वैज्ञानिक तकनीक व अनुसंशा के अनुरूप प्रभेदो को चयनित करने के अलावे अंतरवर्ती खेती करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि किसानो की समस्या के निदान को लेकर विवि के वैज्ञानिक लगातार प्रयासरत हैं। उन्होंने कहा कि यह प्रशिक्षण किसानों को गन्ना उत्पादन के क्षेत्र में तकनीकी तौर पर सशक्त बनाने में काफी अहम भूमिका निभायेगा। उन्होंने कृषि को लाभकारी बनाने के लिए समन्वित खेती प्रणाली अपनाने एवं फसलो का मूल्य संवर्धन कर मार्केटिंग को बढ़ावा देने की बात किसानों से कही। सस्य विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ.एसके चौधरी ने कहा कि गन्ना उत्पादक किसान गन्ना लगाने के दौरान अपने अपने क्षेत्र के लिए अनुसंशित किये गए गन्ना के प्रभेदो का ही इस्तेमाल करें। उन्होंने कहा की क्षेत्रवार अनुसंशित प्रभेदों की खेती करने से किसानों की आमदनी दोगुनी व तिगुनी हो सकेंगी। सेवा केन्द्र बेतिया के परियोजना प्रबंधक माधेश्वर कुमार पाण्डेय ने किसान हित में किये जा रहे कार्यो पर विस्तार से चर्चा की। अतिथियों का स्वागत करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ.देवेन्द्र सिंह ने संस्थान के विभिन्न उपलब्धियों पर चर्चा की तथा आगामी योजनाओं पर प्रकाश डाला। बताया कि बेहतर तकनीक से कृषि के क्षेत्र में विकास होगा। पाठ्यक्रम निदेशक डॉ.एसएन सिंह ने प्रशिक्षण की रूपरेखा प्रस्तुत की। संचालन डॉ.सुनीता कुमारी मीना एवं धन्यवाद डॉ.डीएन कामत ने किया। मौके पर डॉ.मिनानुतुल्लाह, डॉ.नवनीत कुमार, डॉ.बलवंत कुमार, डॉ.अनिल कुमार, ई.अनुपम अमिताभ आदि मौजूद थे।

कार्यक्रम को संबोधित करते डॉ. बेहरा।

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 26 फरवरी तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार में अगले चार दिनों के अंदर आसमान में हल्के बादल छा सकते हैं। हालांकि मौसम शुष्क रहेगा। इस बीच अधिकतम व न्यूनतम तापमान में बढ़ोतरी होगी। इस अवधि में अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान में बढ़ोतरी होगी।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
23 फरवरी	27.8	11.8
24 फरवरी	27.8	13.0
दरभंगा		
23 फरवरी	27.8	13.0
24 फरवरी	28.0	13.0
पटना		
23 फरवरी	29	14.0
24 फरवरी	29	14.0

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 23-02-2025

गन्ना उत्पादकों को तकनीकी ज्ञान देने की जरूरत

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय में गन्ना उत्पादन तकनीक पर प्रशिक्षण शुरू

संस, जागरण●पूसा : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय अधीनस्थ ईख अनुसंधान संस्थान के सभागार में शनिवार को गन्ना उत्पादन तकनीक विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण शुरू हुई। अध्यक्षीय संबोधन में निदेशक अनुसंधान डा. यूके बेहरा ने कहा कि गन्ना उत्पादकों को प्रशिक्षण के दौरान तकनीकी ज्ञानवर्धन करने की जरूरत है। जिससे प्रशिक्षण प्राप्त गन्ना उत्पादक किसान क्षेत्र में पहुंचकर अपनी खेती के अलावे अन्य ग्रामीणों को भी स्वरोजगार से जुड़ने के लिए प्रेरित करें। गन्ना संस्थान लखनऊ एवं कोयंबटूर से पूरे भारत के गन्ना संस्थान नियंत्रित होता है। वैज्ञानिकी तकनीक से गन्ना उत्पादन करने पर कम लागत में किसान बेहतर आमदनी प्राप्त कर सकते हैं।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि व अन्य कृषि विज्ञानी ● जागरण

उत्पादकता की बात करें तो उत्तरप्रदेश का गन्ना उत्पादन देश भर में प्रथम स्थान पर है। जबकि बिहार बारहवें स्थान पर ही फिलवक्त झूलता प्रतीत हो रहा है। औसतन बिहार के किसान गन्ना का 50 टन प्रति हेक्टेयर ही उत्पादन ले पा रहे हैं। स्वागत भाषण करते हुए संस्थान के निदेशक डा. देवेंद्र सिंह ने कहा कि गन्ना अनुसंधान केंद्र के द्वारा कई ऐसी किस्म विकसित की गई है जो बिहार की जलवायु के लिए अनुकूल है। वरिष्ठ वैज्ञानिक सह पाठ्यक्रम निदेशक डा. एसएन सिंह ने प्रशिक्षण का विषय प्रवेश कराते हुए कहा कि जलवायु परिवर्तन की दौर में गन्ना की खेती वैज्ञानिकी विधि से करने पर भारत सरकार के कृषि रोडमैप के अनुसार उत्पादन दर को बढ़ाने में कामयाबी हासिल हो सकेगी। प्रशिक्षण के इस सत्र में 11 व्याख्यान देने का निर्णय लिया गया है। शष्य विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डा. एसके चौधरी ने कहा कि गन्ना की बुआई के लिए अलग-अलग पारिस्थितिकी के अनुरूप प्रभेदों का चयन करने की आवश्यकता है। संचालन संस्थान के वैज्ञानिक डा. सुनीता कुमारी मीणा ने किया। धन्यवाद ज्ञापन वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. डीएन कामत ने किया। मौके पर वैज्ञानिक डा. नवनीत कुमार और डा. मो. मिनितुल्लाह सहित संस्थान के कर्मी मौजूद थे।

Dainik Jagran 23-02-2025

मछली पालन पर प्रशिक्षण हुआ संपन्न

पूसा,निज संवाददाता। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के निदेशक अनुसंधान डॉ.अनिल कुमार सिंह ने कहा कि कृषि को लाभकारी बनाने के लिए समन्वित खेती को बढ़ावा देने की जरूरत है। इसमें मछली पालन व इससे जुड़ा रोजगार एक बेहतर विकल्प है। जरूरत है इसके तकनीकी व व्यवसायिक पहलुओ को समझने की। इसमें विवि से दिया जा रहा प्रशिक्षण काफी लाभकारी साबित होगा। वे शनिवार को मत्स्यकी महाविद्यालय के सभागार में आयोजित छह दिवसीय प्रशिक्षण के समापन सत्र में बोल रहे थे। पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग, बिहार सरकार से प्रायोजित पूर्वी चम्पारण के किसानो को संबोधित करते हुए डीन डॉ.पीपी श्रीवास्तव ने मछली से जुडे.कार्यों में विवि की उपलब्धियों की चर्चा की। मौके पर वैज्ञानिक डॉ.शिवेन्द्र कुमार, डॉ.राजीव कुमार ब्रह्मचारी, डॉ.सुजीत कुमार नायक, डॉ.मोगलेकर एच.एस., डॉ.मुकेश कुमार सिंह, डॉ.अनिरुद्ध कुमार, डॉ.तनुश्री घोड़ई, रोशन कुमार राम, डॉ.राजेश कुमार आदि थे।

Hindustan 23-02-2025

स्कूली बच्चों ने संग्रहालय व तारामंडल का किया दौरा

स्कूली बच्चे व शिक्षक को हरी झंडी दिखाती स्कूल की एचएम।

पूसा,निज संवाददाता। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि से जुड़े राजेन्द्र शिशु सदन से जुड़े स्कूली बच्चो को शैक्षणिक भ्रमण कराने के लिए दरभंगा रवाना किया गया। दरभंगा पहुंचने पर स्कूली बच्चों ने विख्यात मंदिर, संग्रहालय, तारामंडल, किला आदि स्थलो का भ्रमण करते हुए ज्ञान की बातें सीखी। इससे पूर्व स्कूल की एचएम पुष्पा कुमारी ने हरी झंडी दिखाकर बस को रवाना किया।

इस दौरान एचएम ने कहा कि शैक्षणिक भ्रमण से बच्चों को बाहरी दुनिया से जुड़ने में मदद मिलती है। उनमें आत्मविश्वास, जिम्मेदारी की भावना, पारस्परिक कौशल और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास होने के साथ सांस्कृतिक व ऐतिहासिक विरासत की जानकारी मिलती है।

एचएम ने कहा कि किताबी ज्ञान के साथ व्यावहारिक ज्ञान के लिए बच्चों को बीते दिन कृषि मेला का भ्रमण भी करवाया गया था। भ्रमण में शिक्षिका सीमा कुमारी, श्वेता कुमारी, नीतू कुमारी, विजया कुमारी, अनिल कुमार, नीरज कुमार आदि शामिल हुए।

Hindustan 23-02-2025

अन्तर्वर्ती खेती को बढ़ावा समय की मांग:डॉ.बेहरा

- ईख उत्पादन केंद्र पूसा में शुरू हुआ प्रशिक्षण
- गन्ने की उन्नत खेती के बारे में दी जानकारी

पूसा,निज संवाददाता। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के निदेशक शिक्षा डॉ.उमाकांत बेहरा ने कहा कि जलवायु परिवर्तन के दौर में नवीनतम वैज्ञानिक तकनीक व अनुसंशा के अनुरूप प्रभेदो का चयन एवं अन्तर्वर्ती खेती को बढ़ावा देना समय की मांग है। किसानो की समस्या निदान को लेकर विवि के वैज्ञानिक लगातार प्रयासरत हैं।

ऐसे में यह प्रशिक्षण किसानों को तकनीकी तौर पर सशक्त करने में अहम भूमिका निभायेगा। वे शनिवार को विवि के ईख अनुसंधान संस्थान, पूसा के सभागार में पश्चिम चंपारण के बेतिया से आये गन्ना उत्पादक किसानों को संबोधित कर रहे थे। मौका था ईख अनुसंधान संस्थान, पूसा के तत्वाधान में गन्ना उत्पादन तकनीक की उन्नत खेती विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र का। स्वागत करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ.देवेन्द्र सिंह ने संस्थान की उपलब्धियों की चर्चा करते हुए आगामी योजनाओं पर विस्तार से चर्चा की। पाठ्यक्रम निदेशक डॉ.एसएन सिंह ने प्रशिक्षण की रूपरेखा प्रस्तुत की। संचालन डॉ.सुनीता कुमारी मीना एवं धन्यवाद डॉ.डीएन कामत ने दिया। मौके पर डॉ.मिनानुतुल्लाह, डॉ.नवनीत कुमार, डॉ.बलवंत कुमार, डॉ.अनिल कुमार, ई.अनुपम अमिताभ आदि मौजूद थे।

Hindustan 23-02-2025

सब्जियों में समुचित सिंचाई करें किसान भाई : डॉ सत्तार

समस्तीपुर (एसएनबी)। आने वाले दिनों में तापमान में वृद्धि होने की संभावना है। इसे देखते हुए, किसान भाईयों को अपने सब्जियों की फसलों की सिंचाई करने की सलाह दी जाती है। विशेष रूप से, मटर, टमाटर, बैगन, मिर्च, प्याज और पत्ता गोभी जैसी सब्जियों की फसलों को पानी की आवश्यकता होती है। इन फसलों में सिंचाई करने से न केवल उनकी वृद्धि और विकास में मदद मिलेगी, बल्कि तापमान में वृद्धि के कारण होने वाले नुकसान से भी उन्हें बचाया जा सकता है। किसानों से अनुरोध है कि वे अपनी फसलों की सिंचाई करने के लिए आवश्यक कदम उठाएं। अगात बोयी गई गेहूँ की दाना बनने से दुध भरने की अवस्था वाली फसल में प्रयाप्त नमी का विशेष ध्यान रखें। इस अवस्था में नमी की कमी रहने से उपज में कमी आती है। बसंत कालीन मक्का की बुआई करें। जुताई से पूर्व खेतों में प्रति हेक्टेयर 15-20 टन गोबर की खाद, 40 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम सल्फर एवं 30 किलोग्राम पोटास का व्यवहार करें। बुआई के लिए सुवान, देवकी, गंगा 11, शक्तिमान 1 एवं 2 किस्में अनुशंसित है। बीज दर 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें। प्रति किलोग्राम बीज को 2.5 ग्राम थीरम या कैप्टाफ द्वारा उपचारित कर बुआई करें। रवी मक्का की धनबाल व मोचा निकलने से दाना बनने की अवस्था वाली फसल में प्रयाप्त नमी बनाए रखें। गरमा मौसम की सब्जियों की बुआई करते चलें। 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से गोबर खाद की मात्रा पूरे खेत में अच्छी प्रकार विखेरकर मिला दें। कजरा (कटुआ) पिल्लू से होने वाले नुकसान से बचाव हेतु खेत की जुताई में क्लोरपायरीफॉस 20 ई0सी0 दवा का 2 लीटर प्रति एकड़ की दर से 20-30 किलो बालू में मिलाकर व्यवहार करें। सब्जियों में निकाई-गुड़ाई एवं सिंचाई करें।

Rashtriya Sahara 23-02-2025

कैंपस अलर्ट

शैक्षणिक परिभ्रमण पर गये राजेंद्र शिशु सदन के बच्चे

बस को हरी झंडी दिखाते प्राचार्य.

पूसा. डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित राजेंद्र शिशु सदन के बच्चों को शैक्षणिक परिभ्रमण के लिए दरभंगा भेजा गया. इससे बच्चों को बाहरी दुनिया से जुड़ने में मदद मिलती है. उनमें आत्मविश्वास, जिम्मेदारी की भावना, पारस्परिक कौशल और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास होता है. ऐसा मानना है राजेन्द्र शिशु सदन की प्राचार्या पुष्पा कुमारी का. इसी उद्देश्य को मद्देनजर रखते हुए सीमा, श्वेता, नीतू, विजया, अनिल कुमार और नीरज कुमार के नेतृत्व में को बच्चों को दरभंगा के विख्यात मंदिर, संग्रहालय, तारामंडल, किला आदि का भ्रमण कराया जायेगा. बस को प्राचार्या पुष्पा कुमारी ने हरी झंडी दिखा कर रवाना किया.

प्रभात खबर
Monday, February 24, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67bb61f1c6ac8ee385aa2508

एडवांस सेंटर फॉर मशरूम रिसर्च परिसर में हुआ प्रौयोगिक प्रशिक्षण

ग्रीन हाउस तकनीक व नियंत्रित अवस्था में उत्पादन की जरूरत

सफेद बटन मशरूम

प्रतिनिधि, पूसा

डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित एडवांस सेंटर फॉर मशरूम रिसर्च परिसर में प्रतिभागियों के बीच प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया गया. इस दौरान आवश्यक तकनीक से मशरूम लगाने की जानकारी उपलब्ध करायी गयी. डा दयाराम ने बताया कि मशरूम की खेती सबसे लाभदायक कृषि व्यवसाय में से एक है. इसे कम खर्च और कम जगह के साथ शुरू कर सकते हैं. सफेद बटन मशरूम का बाजार में अधिक मांग है. इसलिए सबसे अधिक किसान व्यावसायिक रूप से मशरूम की खेती के लिए इस किस्म का चयन करते हैं. बटन मशरूम निम्न तापमान वाले क्षेत्रों में अधिक उगाया जाता है. लेकिन, अब ग्रीन हाउस तकनीक एवं नियंत्रित अवस्था के माध्यम से यह हर जगह उगाया जा सकता है. मशरूम पोषक तत्व युक्त, गुणकारी, पाचनशील, स्वादिष्ट उपयोगी सब्जी है. यह रक्तचाप, ह्रदयरोग में लाभकारी होता है. बटन मशरूम को उगाने के लिए कम्पोष्ट की आवश्यकता होती है. कंपोष्ट भूसा, गेहूं का चापड़, यूरिया एवं जिप्सम को एक साथ मिलाकर व सड़ा कर तैयार किया जाता है. इस मिश्रण को कई तरह की सूक्ष्मजीव रासायनिक क्रिया द्वारा कार्बनिक पदार्थों का विघटन कर कम्पोष्ट में परिवर्तित कर देते हैं. यह जैविक विधि है. मशरूम उगाने के लिए वानस्पतिक प्रवर्धन तकनीक का प्रयोग किया जाता है. मौके पर सुभाष कुमार, मुन्नी, निशा आदि मौजूद थे.

प्रायोगिक प्रशिक्षण देते वैज्ञानिक सुधानंदनी.

प्रभात खबर
Monday, February 24, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67bb61f1c6ac8ee385aa2508

मा-कर 24/2/25 पेज 20

कृषि • डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड ने दी बचाव की जानकारी

आम व लीची के पत्तों के सिरे पर टिप बर्न का प्रकोप, उत्पाद कम होने की आशंका

भास्कर न्यूज | पूसा

आम और लीची के पत्तों के सिरे पर लगने वाली बीमारी (टिप बर्न) काफी खतरनाक और विध्वंसकारी होती है। पेड़ों में इस बीमारी के लग जाने के बाद पेड़ की सभी पत्तियां जलकर सुख जाती हैं तथा धीरे-धीरे पेड़ भी सुख जाते हैं। आम और लीची उत्पादक किसानों के लिए यह आवश्यक है की किसान इस बीमारी की सर्वप्रथम पहचान करें तथा वैज्ञानिक तकनीक से इस बीमारी का प्रबंधन करते हुए पेड़ों को सूखने से बचाएं। ये जानकारी डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के पादप रोग विभाग के हेड डॉ. एसके सिंह ने दी। उन्होंने कहा कि यह बीमारी मिट्टी या सिंचाई के पानी में अधिक नमक होने के कारण उत्पन्न होती है। नमक की अधिकता के कारण पेड़ों की पत्तियां झुलस जाती हैं। पेड़ की पत्तियां अपना प्राकृतिक रंग खो देती हैं तथा वह कांस्य रंग में बदल जाती हैं। नमक की वजह से गंभीर मामलों में टिप बर्निंग भी देखी जाती है। उन्होंने बताया कि आम एवं लीची के पत्तों के सिरे पर पत्तियों के जलने का प्राथमिक लक्षण पत्ती के किनारों के आसपास से शुरू होता है। इस बीमारी का उचित उपचार शुरू करने के लिए बीमारी की स्थिति के कारणों का पता लगाना महत्वपूर्ण होता है। उन्होंने कहा कि आम के पत्तों पर टिपबर्न अक्सर तीन स्थितियों में से एक के कारण होता है। पहला आम के पेड़ को पर्याप्त पानी नहीं मिल पाना दूसरा मिट्टी में नमक (सॉल्ट) का जमा हो जाना तथा तीसरा मैग्नीशियम की कमी इस समस्या का संभावित कारण हो सकता है।

इस बीमारी से ग्रसित होने पर पेड़ की पत्तियां झड़ने लगती हैं

टिप बर्न बीमारी से ग्रसित लीची के पत्ते।

वैज्ञानिक की सलाह से किसान समय पर करें प्रबंधन

उन्होंने कहा कि किसी किसी मामले में ये तीनों समस्या एक साथ तथा अलग अलग दोनों रूप में हो सकती है। उन्होंने कहा की यदि किसान अपने पौधे में नियमित रूप से पानी देते हैं तो पत्ते पर टिप बर्न बीमारी नमी की कमी के कारण नही हो सकती हैं। आमतौर पर बागों में की जाने वाली छिटपुट सिंचाई या मिट्टी की नमी में अत्यधिक उतार चढ़ाव ही (टिपबर्न) पत्ती के सिरे के जलने का कारण होता है। बागों में सिंचाई को नियमित करके नमी के उतार-चढ़ाव को रोकते हुए टिपबर्न बीमारी को आसानी से प्रबंधित किया जा सकता है। किसान अपने पौधे को पानी देने का समय निश्चित रूप से निर्धारित करें तथा समय पर पौधों में पानी देते रहे।

बीमारी से ग्रसित पेड़ों के सूखने का रहता है खतरा

कृषि वैज्ञानिक ने बताया कि यदि किसान के बागों में उचित जल निकासी की व्यवस्था नहीं है तो मिट्टी में नमक यानी (सॉल्ट) अधिक जमा हो जा सकता है। इससे भी आम और लीची के पत्ते जल सकते हैं। यदि मिट्टी में नमक जमा हो गया है तो नमक को जड़ क्षेत्र से बाहर निकालने के लिए भारी पानी डालने का प्रयास करें। जल निकासी की समस्या को दूर करने के लिए बागों में जल निकासी के लिए चैनल बनाएं। बरसात के मौसम में बागों में हरी खाद की फसल के रूप में सनई या धैचा को अंतरफसल के रूप में उगाएं तथा उसमें 50 प्रतिशत फूल आने पर उसे वापस जुताई करके मिट्टी में ही मिला दे। यह कार्य कम से कम 4 से 5 साल तक किसान जरूर करें। जिप्सम से भरी बोरी को अगर बहते हुए सिंचाई के पानी में रखा जाए तो बाग में नमक का प्रभाव कम हो जाएगा।

गन्ना के क्षेत्र में लघु उद्योग स्थापित करने की जरूरत : डा सिंह

प्रतिनिधि, पूसा

डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित ईख अनुसंधान विभाग के सभागार में गन्ना उत्पादन एवं विविधीकरण विषय पर चल रहे तीन दिवसीय प्रशिक्षण प्रमाण पत्र वितरण के साथ सम्पन्न हुआ. अध्यक्षता करते हुए संस्थान के निदेशक डा देवेंद्र सिंह ने कहा कि गन्ना उत्पाद के क्षेत्र में लघु उद्योग स्थापित करने की जरूरत है. बीते तीन दिनों से सीखे गये ज्ञान को समाज के अंतिम पंक्ति में खरे लोगों के बीच बांटने की जरूरत है. गन्ना उत्पादन तकनीक वाकई प्रभावशाली है. प्रशिक्षण के दौरान किया परिभ्रमण से भी प्रतिभागियों को बहुत कुछ सीखने का अवसर मिलता है. सीखे गये ज्ञान को उपयोग में लाने की आवश्यकता है. गन्ना उद्योग से संबंधित कोई भी उद्योग लाभकारी ही होता है. वैज्ञानिक डा एसएन सिंह ने स्वागत करते हुए कहा कि प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों के बीच विभिन्न तकनीकी दिशाओं के अनुरूप 11 व्याख्यान की प्रस्तुति दी गयी. कोई भी प्रशिक्षण के लिए तीन दिन का समय बहुत ही दक्ष होता है. बावजूद गन्ने उत्पादन से संबंधित तकनीकों की बेहतर प्रस्तुति करने का प्रयास किया गया है. वैज्ञानिक डा बलवंत कुमार ने कहा कि तीन दिनों कुंभ में किसानों गोता लगाया है. गन्ना खासकर मिठास के लिए जान जाता है. लघु उद्योग को बढ़ावा देने के लिए इसे स्वरोजगार से जोड़ने की जरूरत है. प्रशिक्षण के फीडबैक देते हुए बगहा के किसान आनंद मोहन प्रसाद ने कहा कि प्रशिक्षण से कम लागत में बेहतर उत्पादन लेने की तकनीक से अवगत हुए. कोई भी टैलेंट परिचय का मोहताज नहीं होता वह मौलिक रूप से प्रखर होता है. बगहा के नेपाली महतो ने कहा कि गन्ना उत्पादन एवं उससे बने विभिन्न उत्पादों के बारे में विस्तार से सीखने का अवसर मिला है. पश्चिमी चंपारण के किसान राकेश कुमार ने बताया कि गन्ना की विभिन्न प्रजाति, उसे लगाने की समुचित तकनीकों से अवगत हुए हैं. संचालन करते हुए संस्थान के वैज्ञानिक डा सुनीता कुमारी मीणा ने कहा कि बिहार के किसानों के लिए गन्ना उत्पादन एक भविष्य के रूप में देखा जा रहा है. इस फसल के उत्पादन से भूमि की उर्वरा शक्ति कायम रहती है. मौके पर वैज्ञानिक मीनातुल्लाह आदि मौजूद थे.

प्रमाणपत्र के साथ प्रतिभागी व वैज्ञानिक.

प्रभात खबर
Tuesday, February 25, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67bcc77b18e1e6fb18f95f1e

पीएम के सीधा प्रसारण से किसानों ने लिया लाभ

प्रतिनिधि, पूसा

डा राजेंद्र प्रसाद कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ कृषि विज्ञान के सभागार में प्रधानमंत्री के पीएम किसान सम्मान निधि योजना के तहत 19 वीं किस्त जारी करने पर सीधा प्रसारण से किसानों ने लाभ लिया. विशिष्टि अतिथि एमएलसी डॉ तरुण कुमार चौधरी एवं विशेष अतिथि के रूप में बोर्ड के सदस्य जयकृष्ण झा ने भाग लिया. किसानों को संबोधित करते हुए डॉ. तरुण कुमार चौधरी ने कहा कि पीएम किसान सम्मान निधि योजना की राशि से किसान को खेती में काफी सहयोग मिलता है. भारत जैसे देश में जिसकी अर्थव्यवस्था कृषि पर निर्भर करती है. इस प्रकार की योजना से किसानों को काफी प्रोत्साहन मिलता है. आज के समय में किसानों को नई तकनीक अपनाने की आवश्यकता है. इसमें कृषि विज्ञान केन्द्र काफी अहम भूमिका निभा रही है. अन्य अतिथि सुनील कुमार सिंह ने भी सम्बोधित किया. मौके पर पांच किसानों को अतिथियों द्वारा सम्मानित किया गया ताकि वे इसी प्रकार कृषि के क्षेत्र में और बेहतर कर सकें. कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली के प्रधान डॉ. आरके तिवारी ने किसानों का स्वागत किया. डॉ. धीरू कुमार तिवारी ने आम बगान के प्रबंधन, ई. विनीता कश्यप ने फसल अवशेष प्रबंधन, भारती उपाध्याय ने प्राकृतिक खेती, सुमित कुमार सिंह ने मक्का एवं गेहूं में कीट-प्रबंधन, वर्षा कुमारी ने मोटे अनाजों का मूल्य संवर्धन, निशा रानी ने मृदा जांच एवं इसके महत्त्व के बारे में किसानों को बताया. संचालन ई. विनीता कश्यप ने किया.

किसानों को संबोधित करते एमएलसी.

प्रभात खबर
Tuesday, February 25, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67bcc77b18e1e6fb18f95f1e

बसंतकालीन मक्का व सूर्यमुखी की बोआई करें किसान

वैज्ञानिक सुझाव

प्रतिनिधि, समस्तीपुर

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के द्वारा किसानों के लिये जारी समसामायिक सुझाव में बसंतकालीन मक्का व सूर्यमुखी बोआई करने की सलाह वैज्ञानिक ने दी है. कहा गया है कि इन दोनों फसलों की बोआई के लिये मौसम पूरी तरह अनुकूल है. किसान बंसतकालीन मक्का की बोआई के लिये जुताई पूर्व खेतों में प्रति हेक्टेयर 15-20 टन गोबर की खाद, 40 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम सल्फर व 30 किलोग्राम पोटाश का व्यवहार करें. बोआई के लिये सुवान, देवकी, गंगा 11, शक्तिमान 1 एवं 2 किस्में अनुशंसित हैं. बीज दर 20 किलोग्राम प्रति हेक्टयेर की दर से व्यवहार करें. प्रति किलोग्राम बीज को 2.5 ग्राम थीरम या कैप्टाफ द्वारा उपचारित कर बोआई करें. रबी मक्का की धनबाल व मोचा निकलने से दाना बनने की अवस्था वाली फसल में पर्याप्त नमी बनाये रखें. किसान सूर्यमुखी की बोआई से पूर्व 100 क्विंटल कम्पोस्ट, 30 किलोग्राम नेत्रजन, 80 किलोग्राम स्फुर, 40 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टयेर की दर से व्यवहार करें. उत्तर बिहार के लिए सूर्यमुखी की उन्नत संकुल प्रभेद मोरडेन एवं पैराडेविक तथा संकर प्रभेद के लिये केबीएसएच-1, केबीएसएच-44,एमएसएफएच-1, एमएसएफएच-8 व एमएसएफएच-17 अनुशंसित हैं. संकर किस्मों के लिये बीज दर 5 किलोग्राम प्रति हेक्टयेर तथा संकलु किस्मों के लिये आठ किलोग्राम प्रति हेक्टयेर रखें. बोआई से पहले प्रति किलोग्राम बीज को दो ग्राम थीरम या कैप्टाफ दवा से उपचारित कर बोआई करें. किसान गरमा मौसम की सब्जियों की भी बोआई करते चलें.

150-200 क्विंटल प्रति हेक्टयेर की दर से गोबर खाद की मात्र पूरे खेत में अच्छी प्रकार बिखेड़कर मिला दें. कजरा (कटुआ) पिल्लू से होने वाले नुकसान से बचाव के लिए खेत की जुताई में क्लोरपायरिफॉस 20 ईसी दवा का दो लीटर प्रति एकड़ की दर से 20 से 30 किलो बालू में मिलाकर व्यवहार करें. आने वाले दिनों में तापमान में वृद्धि होने की संभावना है. इसे देखते हुए, किसानों को अपनी सब्जियों की फसलों की सिंचाई करने की सलाह दी जाती है. विशेष रूप से मटर, टमाटर, बैगन, मिर्च, प्याज और पत्तागोभी जैसी सब्जियों की फसलों को पानी की आवश्यकता होती है. इन फसलों में सिंचाई करने से न केवल उनकी वृद्धि और विकास में मदद मिलेगी, बल्कि तापमान में वृद्धि के कारण होने वाले नुकसान से भी बचा जा सकता है. किसानों से अनुरोध है कि वे अपनी फसलों की सिंचाई करने के लिए आवश्यक कदम उठायें.

अगात बोयी गई गेहूं की दाना बनने से दूध भरने की अवस्था वाली फसल में पर्याप्त नमी का विशेष ध्यान रखें. इस अवस्था में नमी की कमी रहने से उपज में कमी आती है. किसान मटर में फली छेदक कीट की निगरानी करें. इस कीट के पिल्लू फलियों में जालीनुमा आवरण बनाकर उसके नीचे फलियों में प्रवेश कर अन्दर ही अन्दर मटर के दानों को खाती रहती है. एक पिल्लू एक से अधिक फलियों को नष्ट करता है. आक्रांत फलियां खाने योग्य नहीं रह जाती, जिससे उपज में अत्यधिक कमी आती है. कीट प्रबंधन के लिये प्रकाश फंदा का उपयोग करें. 15-20 टी आकार का पंछी बैठका (वर्ड पर्चर) प्रति हेक्टर लगावें. अधिक नुकसान होने पर क्वीनॉलफॉस 25 ईसी या नोवाल्यरुॉन 10 ईसी का 01 मिली प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करें. सब्जियों में निकाई-गुड़ाई एवं सिंचाई करें. प्याज की फसल में थ्रीप्स की निगरानी करें. यह प्याज को नुकसान पहुंचाने वाला मुख्य कीट है. तापमान में बढ़ोत्तरी के साथ-साथ फसल में इस कीट की सक्रियता में वृद्धि होती है.

यह आकार में सूक्ष्म होता है तथा पत्तियों की सतह पर चिपक कर रस चूसते हैं, जिससे पत्तियों का ऊपरी हिस्सा टेढ़ा-मेढ़ा हो जाता है. पत्तियों पर दाग सा दिखाई देता है जो बाद में हल्के सफेद हो जाते हैं. जिससे उपज में काफी कमी आती है. थ्रीप्स की संख्या फसल में अधिक पाये जाने पर प्रोफनेफॉस 50 ईसी दवा का 1.0 मिली प्रति लीटर पानी या इम्डिाक्लोपिड्र दवा का 1.0 मिली प्रति 4 लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करें

प्रभात खबर
Tuesday, February 25, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67bcc77b18e1e6fb18f95f21

कृषि विज्ञान केन्द्र में किसान गोष्ठी का हुआ आयोजन

जाले. कृषि विज्ञान केन्द्र के सभागार में सोमवार को कृषक गोष्ठी का आयोजन हुआ. इसमें कृषकों को भागलपुर में आयोजित प्रधानमंत्री किसान समारोह कार्यक्रम का सीधा प्रसारण दिखाया गया. मौके पर विधायक जीवेश कुमार सहित सैकड़ों कृषक उपस्थित थे. इसमें कृषि विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष सह वरीय वैज्ञानिक डॉ दिव्यांशु शेखर ने केन्द्र की विभिन्न परियोजनाओं व नवीन तकनीकी के बारे में बताया. कार्यक्रम समाप्ति के बाद प्रखंड क्षेत्र के विभिन्न पंचायत के पांच किसानों को उत्कृष्ट खेती के लिए विधायक जीवेश कुमार द्वारा सम्मानित किया गया. इनमें सोरिया की मंजू देवी, जाले के महंथ बैठा, आबिद खान, अहियारी दक्षिणी के चंद्रजीत राय, रतनपुर के रंजीत ठाकुर व जोगियारा के बृजकिशोर सिंह शामिल थे.वहीं कृषकों को केन्द्र के उद्यान विशेषज्ञ डॉ प्रदीप कुमार विश्वकर्मा ने बगीचा के रखरखाव व उसके प्रबंधन की जानकारी दी. कहा कि बगीचा का रखरखाव सही तरीके नहीं होने पर वृक्ष अच्छा फलन नहीं कर पाएगा. उन्होंने कहा कि अधिकांश कृषक फल तोड़ाई के बाद अपने बाग में जाना छोड़ देते हैं.

प्रभात खबर
Tuesday, February 25,
Samstipur
https://epaper.prabha cl

भास्कर 25/2/25 पेज 12

पीएम के कार्यक्रम का प्रसारण • कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली में कार्यक्रम में गिनाई सरकार की उपलब्धियां

पीएम किसान सम्मान निधि योजना किसानों के लिए वरदान, कृषि की उन्नति से विकास संभव : डॉ. तरुण

भास्कर न्यूज | पूसा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सोमवार को भागलपुर पहुंचे। भागलपुर पहुंचकर पीएम ने सर्वप्रथम किसान सम्मान निधि योजना के तहत किसानों के खाते में 19वीं किस्त के रूप दो हजार रुपये की राशि भेजी। इसके बाद पीएम ने बिहार के विभिन्न जिलों में ओवरब्रिज, रेलवे लाइनों का दोहरीकरण, किसान उत्पादक संगठन को राष्ट्र को समर्पित करने, स्वदेशी नस्ल के गायों के लिए बनाएं गए उत्कृटता केंद्र, दुग्ध उत्पादन संयंत्र आदि का उद्घाटन किया। पीएम मोदी के बिहार दौरे को लेकर डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के अधीनस्थ कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली के परिसर में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि पहुंचे एमएलसी डॉ. तरुण चौधरी ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर सर्वप्रथम मुख्य अतिथि,

कार्यक्रम को संबोधित करते मुख्य अतिथि व मौजूद किसान।

कृषि वैज्ञानिक और किसानों ने पीएम के कार्यक्रम और संबोधन को लाइव प्रसारण के माध्यम से देखा व सुना। बाद में किसानों को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि तरुण चौधरी ने कहा की पीएम किसान सम्मान निधि योजना किसानों के लिए एक वरदान हैं। इस योजना के तहत भेजी गई राशि से किसानों को खेती में काफी सहयोग मिलता हैं। उन्होंने कहा कि भारत की अर्थव्यवस्था कृषि पर टिकी हैं। इसे ध्यान में रखकर पीएम मोदी किसानों के उत्थान के लिए नई-नई कृषि योजनाओं को लाने के साथ-साथ कृषि के क्षेत्र में नए कदम भी उठा रहे हैं। कार्यक्रम में पहुंचे विशिष्ट अतिथि जय कृष्ण झा ने कहा कि आज के दौर में किसानों को कृषि के नए नए तकनीकों को अपनाने की जरूरत है। किसान कृषि वैज्ञानिकों के बताएं सुझावों को अपनाकर अच्छी खेती कर भी रहे हैं। उन्होंने कहा कि किसानों को प्रेरित करने की दिशा में कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली की भूमिका शुरुआत से ही काफी अच्छी रही हैं। बाद में मुख्य अतिथि के द्वारा कृषि के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले पांच किसानों को प्रस्सति पत्र देकर सम्मानित भी किया गया। कार्यक्रम से पूर्व केवीके हेड डॉ. आरके तिवारी ने मुख्य अतिथि व विशिष्ट अतिथि को शॉल व पुष्प देकर सम्मानित किया।

मशरूम की खेती से जीविका दीदियां हुईं आत्मनिर्भर

जैविक विधि से खेती-किसानी कर जीविका की **दो हजार से अधिक** महिलाएं लिख रही सफलता की इबारत

जागरण संवाददाता, समस्तीपुर : जिले की महिलाएं अब हर क्षेत्र में सफलता की नई इबारत लिख रही हैं। खासकर जीविका दीदियां मशरूम की खेती कर न केवल आर्थिक रूप से सशक्त हो रही हैं, बल्कि अन्य महिलाओं के लिए भी प्रेरणा बन रही हैं। जिले में दो हजार से अधिक जीविका दीदियों को मशरूम की खेती और उससे बनने वाले उत्पादों का प्रशिक्षण दिया गया है। वर्तमान में 1,380 जीविका दीदियां आएस्टर मशरूम की खेती कर रही हैं, जिससे प्रति दीदी 45 किलो तक का उत्पादन हो रहा है। 47 जीविका दीदियां बटन मशरूम उगा रही हैं, जिससे वे 2.5 क्विंटल से अधिक उत्पादन कर रही हैं। इनकी मेहनत अब रंग ला रही है, जिससे इन महिलाओं की आर्थिक स्थिति मजबूत हो रही है। साथ ही वे समाज में नारी सशक्तीकरण का बेहतर उदाहरण भी प्रस्तुत कर रही है।

मशरूम से वने उत्पादों से हो रही अच्छी कमाई : जीविका दीदियां अब मशरूम से अलग-अलग उत्पाद बनाकर भी अच्छा मुनाफा कमा रही हैं। 15 से अधिक जीविका दीदियां मशरूम से बने उत्पाद जैसे मशरूम अचार, पाउडर और मसाले तैयार कर बाजार में बेच रही हैं। इससे वे हर महीने 10 से 15 हजार रुपये तक की कमाई कर रही हैं। खास बात यह है कि ये महिलाएं पूरी तरह जैविक विधि से मशरूम की खेती कर रही हैं, जिससे उत्पादों की गुणवत्ता बनी रहती है और बाजार में इनकी मांग भी बढ़ रही है।

1380 जीविका दीदियां जिले में कर रही आएस्टर मशरूम की खेती

47 जीविका दीदियां उगा रही बटन मशरूम, 2.5 क्विंटल से अधिक का हो रहा उत्पादन

पूसा कृषि विश्वविद्यालय का रहा महत्वपूर्ण योगदान

जीविका परियोजना के प्रबंधक विक्रांत शंकर सिंह ने बताया कि बीते वर्षों में समस्तीपुर जिले की महिलाओं के बीच मशरूम की खेती को बढ़ावा देने में डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के मशरूम विभाग ने अहम भूमिका निभाई है। केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से इन सभी महिलाओं को निशुल्क प्रशिक्षण उपलब्ध कराया गया, जिसकी बदौलत उन्हें आत्मनिर्भर बनाया गया है। आज समस्तीपुर की ये महिलाएं मशरूम की खेती के माध्यम से आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रही हैं और महिला सशक्तीकरण की मिसाल पेश कर रही हैं।

मशरूम उत्पादन की प्रशिक्षण लेती जीविका दीदी • फाइल फोटो

पहले मैं घर के छोटे-मोटे कामों पर निर्भर थी, लेकिन जब से मैंने मशरूम की खेती शुरू की है, मेरी आमदनी बढ़ गई है। अब मैं बच्चों की पढ़ाई और घर के खर्च में सहयोग कर रही हूं। यह काम मेरे लिए आत्मनिर्भर बनने का जरिया बन गया है।

– निर्मला कुमारी, ताजपुर, समस्तीपुर।

मशरूम की खेती ने मेरी जिंदगी बदल दी। पहले हमें कम आमदनी में घर चलाने में दिक्कत होती थी, लेकिन अब मैं हर महीने 12-15 हजार रुपये तक कमा लेती हूं। इससे मेरा आत्मविश्वास बढ़ा है और मैं अपने समूह की दूसरी महिलाओं को भी इसके लिए प्रेरित कर रही हूं।

–रंजना कुमारी, पूसा, समस्तीपुर।

Dainik Jagran 25-02-2025

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 26 फरवरी तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार में अगले चार दिनों के अंदर आसमान में हल्के बादल छा सकते हैं। हालांकि मौसम शुष्क रहेगा। इस बीच अधिकतम व न्यूनतम तापमान में बढ़ोतरी होगी। इस अवधि में अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान में बढ़ोतरी होगी।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
25 फरवरी	29.3	12.0
26 फरवरी	29.3	12.3
दरभंगा		
25 फरवरी	29.3	12.3
26 फरवरी	30.0	12.3
पटना		
25 फरवरी	30	13.0
26 फरवरी	30	13.0

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 25-02-2025

किसानों ने प्रधानमंत्री का लाइव संबोधन सुना

- पीएम किसान सम्मान निधि योजना में प्राप्त राशि से किसानों को खेती करने में मिलता काफी सहयोग : एमएलसी
- कार्यक्रम में खेती-किसानी में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले पांच किसानों को किया गया सम्मानित

प्रसारण के दौरान मंच पर बैठे मुख्य अतिथि व विज्ञानी • जागरण

संवाद सहयोगी, जागरण • पूसा : कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली के प्रांगण में उपस्थित किसानों के बीच प्रधानमंत्री द्वारा पीएम किसान सम्मान निधि योजना की 19वीं किस्त जारी करने एवं भागलपुर में संबोधन का लाइव प्रसारण किया गया। मौके पर विधान पार्षद डा. तरूण कुमार ने कहा कि पीएम किसान सम्मान निधि योजना के द्वारा प्राप्त राशि से किसानों को खेती करने में काफी सहयोग मिलता है। भारत जैसे देश की अर्थव्यवस्था कृषि पर निर्भर करती है। कृषि विज्ञान प्रबंधन समिति सदस्य जय कृष्ण झा ने सभी किसानों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि आज के समय में किसानों को नई तकनीक अपनाने की आवश्यकता है। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले पांच किसानों को सम्मानित किया। कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली के प्रधान डा. आरके तिवारी ने किसानों का स्वागत किया। डा. धीरू कुमार तिवारी ने आम बगान के प्रबंधन, ई. विनीता कश्यप ने फसल अवशेष प्रबंधन, भारती उपाध्याय ने प्राकृतिक खेती, सुमित कुमार सिंह ने मक्का एवं गेहूं में कीट प्रबंधन, वर्षा कुमारी ने मोटे अनाजों का मूल्य संवर्धन, निशा रानी ने मृदा जांच एवं इसके महत्व के बारे में किसानों को विस्तृत जानकारी दी। संचालन ई. विनीता कश्यप ने किया।

Dainik Jagran 25-02-2025

प्रोत्साहन | कृषि व महिलाओं की सहभागिता से विकसित भारत का सपना होगा साकारः एमएलसी, लोगों को दी योजना की जानकारी

अभिनव खेती के लिए पांच किसानों को किया पुरस्कृत

पूसा,निज संवाददाता। एमएलसी डॉ.तरूण कुमार चौधरी ने कहा कि देश की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है। इसे सशक्त करने में केन्द्र व राज्य सरकार लगातार प्रयासरत है। पीएम किसान सम्मान निधि योजना से मिल रही राशि किसानो को सहयोग के साथ मनोबल बढ़ाने में अहम भूमिका निभा रही है। जरूरत है आधुनिक तकनीको व अनुसंशित प्रभेदो का उपयोग कर खेती एवं इससे जुड़े कार्य को बढ़ावा देने की। इसमें कृषि विज्ञान केन्द्र किसानो को सहयोग देने में निरंतर प्रयास कर रही है। वे सोमवार को डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि से जुड़े कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली के सभागार में किसानो को संबोधित कर रहे थे। मौका था पीएम किसान सम्मान निधि योजना की 19वीं किस्त जारी करने के दौरान पीएम के संबोधन के सीधा प्रसारण समारोह का। उन्होंने कहा कि कृषि व महिलाओं की सहभागिता से ही वर्ष 2047 में विकसित भारत का सपना साकार होगा। जरूरत है अपनी अंदर छुपी प्रतिभा व कौशल को पहचान कर आगे बढ़ने की।

सोमवार को पूसा कृषि विज्ञान केन्द्र में किसान को सम्मानित करते एमएलसी।

पूसा कृषि विज्ञान केन्द्र में पीएम का संबोधन सुनते किसान।

विवि के बीओएम के सदस्य जयकृष्ण झा ने कहा कि मुजफ्फरपुर की किसान चाची महिलाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं। कृषि व उद्यम के क्षेत्र में महिलाओ की लगातार बढ़ रही मजबूत भागीदारी भविष्य में बेहतर परिणाम देगा। मौके पर सुनील सिंह ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

इस दौरान कृषि क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य कर रहे 5 किसानो को सम्मानित किया गया। सम्मानित किसानों में खानपुर के पंकज कुमार राय(सोयाबीन की खेती), मोरसंड बहादुरा के मनोज कुमार(सोलर सिम्टम सिंचाई)चकहाजी के रामानंद प्र.सिंह (प्राकृतिक खेती), गोपालपुर के नूतन देवी (अचार), रामपुर कल्याणपुर के कुशेश्वर प्र. वर्मा(पोसेसिंग प्लान्ट) शामिल हैं। स्वागत केन्द्र प्रमुख डॉ.आरके तिवारी, संचालन विनिता कश्यप ने की। मौके पर आत्मा के जिलाध्यक्ष देवशंकर राय, दीपक कुमार समेत वैज्ञानिक भारती उपाध्याय, डॉ.धीरू कुमार तिवारी, सुमित कुमार सिंह, वर्षा कुमारी, निशा रानी आदि थे।

Hindustan 25-02-2025

राष्ट्रीय लक्ष्यों को पाने के लिए क्षेत्रीय उत्कृष्टता केंद्र की स्थापना आवश्यक : राधामोहन

पशु प्रजनन उत्कृष्टता केंद्र का वर्चुअल रूप से पीएम ने किया उद्घाटन

-करीब 34करोड़ के लागत से हुआ निर्माण

-अब बछड़ी ही पैदा करेगी गाय

पीपराकोठी(एसएनबी)। स्थानीय कृषि विज्ञान केंद्र परिसर में सोमवार को किसान सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन पूर्व केंद्रीय कृषि मंत्री राधामोहन सिंह, कुलपति डॉ. पीएस पाण्डेय, डीएओ मनीश कुमार सिंह ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इस अवसर पर पीएम मोदी ने भागलपुर के जनसभा से पीपराकोठी कृषि विज्ञान परिसर में 33.80 करोड़ के लागत से स्थापित पशु प्रजनन उत्कृष्टता केंद्र वर्चुअल रूप से किया। सभा को संबोधित करते हुए पूर्व केंद्रीय कृषि मंत्री सह सांसद राधामोहन सिंह ने कहा कि प्रशिक्षित जनशक्ति की पूर्ति करने तथा एनएपी के तहत परिकल्पित राष्ट्रीय लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए क्षेत्रीय उत्कृष्टता केंद्र (सीओई) की स्थापना करना आवश्यक है। सीओई परियोजना के तहत प्रस्तावित बड़े पैमाने पर आईवीएफ गतिविधियों के कार्यान्वयन के लिए आवश्यक तकनीकी जनशक्ति को प्रशिक्षण प्रदान करेगा। केवीके मोतिहारी में राष्ट्रीय गोकुल मिशन के तहत 33.80 करोड़ रुपये के निवेश से उत्कृष्टता केंद्र की स्थापना की गई है, एवं आज यशस्वी प्रधानमंत्री मोदी ने उत्कृष्टता केंद्र का उद्घाटन किया है। जिससे पशुपालक किसान लाभांवित होंगे। उन्नत देसी गायों के नस्ल सुधार होगा। यहां देसी गौशाला के तकनीक का प्रशिक्षण दिया जाएगा। उन्नत पशुचारा के उत्पादन का प्रशिक्षण दिया जाएगा। उन्नत देसी गाय के नस्लों का भ्रूण प्रदान किया जाएगा, साथ ही दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी होगी। कहा कि मोदी सरकार को किसानों की चिंता है। इस बजट में केसीसी तीन लाख से बढ़ाकर पांच लाख किया गया और उसमें पशुपालन एवं मछली पालन को शामिल किया गया है। देश में कृषि उत्पादन में पिछड़े एक सौ जिलों को चयन कृषि धन धान्य योजना के तहत किसानों के उत्थान का का काम किया जायेगा। पीएम मोदी ने आज के पूर्व किसान सम्मान निधि के तहत 11 करोड़ लोगों के खातों में 3.46लाख करोड़ रूपये भेज चुकी है और आज सफलता पूर्वक छह साल पुरे होने पर 19 वी किस्त भी किसानों के खाते में सीधा डीबीटी के माध्यम से भेजी जा रही है। कहा की किसान दलहन की खेती को बढ़ावा दें और वह बीज के रूप में केविके 250 रूपये किलो के हिसाब से खरीद करेगा। किसान बाजार के चंगुल से बचे और खुद उत्पादन कर अच्छी आमदनी बढ़ाये। उन्होंने कहा की अगले सात एवं आठ मार्च को मोतिहारी गांधी मैदान में देश के सेना आएंगे जिसमें उनके शौर्य से आम जन को जानने का अवसर मिलेगा। मौके पर कुलपति डॉ. पीएस पाण्डेय, प्रकाश अस्थाना डॉ. ए कुंदु, डॉ. एसके पूर्वे, डीएओ मनीश कुमार सिंह, डॉ. आरके झा, रविन्द्र सहनी, दिवाकर पाण्डेय, उपेंद्र पासवान, उप महापौर डॉ. लालबाबू प्रसाद, केविके संचालक मनीश कुमार सहित अन्य लोग मौजूद थे।

किसान सम्मान समारोह का दीप प्रज्ज्वलित करते पूर्व केंद्रीय कृषिमंत्री राधामोहन सिंह व अन्य ।

Rashtriya Sahara 26-02-2025

गन्ना उत्पादन को प्रोत्साहित करने के लिए लघु उद्योग स्थापित करने की जरूरत : डा देवेंद्र

समस्तीपुर/पूसा। डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविधालय स्थित ईख अनुसंधान विभाग के सभागार में गन्ना उत्पादन एवं विविधीकरण विषय पर चल रहे तीन दिवसीय प्रशिक्षण प्रमाण पत्र वितरण के साथ सम्पन्न हुई। जिसकी अध्यक्षता करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ देवेंद्र सिंह ने कहा कि गन्ना उत्पादन को बढावा देने केलिए गन्ना प्रसंस्करण आधारित लघु उद्योग स्थापित करने की जरूरत है। बीते तीन दिनों से सीखे गए ज्ञान को समाज के अंतिम पंक्ति में खडे लोगों के बीच बांटने की जरूरत है। गन्ना उत्पादन तकनीक वाकई प्रभावशाली है। प्रशिक्षण के दौरान परिभ्रमण से भी प्रतिभागियों को बहुत कुछ सिखने का अवसर मिलता है। सीखे गए ज्ञान को उपयोग में लाने की आवश्यकता है। गन्ना उद्योग से संबंधित कोई भी उद्योग लाभकारी ही होता है। वैज्ञानिक डा एसएन सिंह ने स्वागत करते हुए कहा कि प्रशिक्षण के दरमियान प्रतिभागियों के बीच विभिन्न तकनीकी दिशाओं के अनुरूप 11 व्याख्यान की प्रस्तुति किया गया। कोई भी प्रशिक्षण के लिए तीन दिन का समय बहुत ही तुक्ष होता है। बावजूद गन्ने उत्पादन से संबंधित तकनीकों की बेहतर प्रस्तुति करने का प्रयास किया गया है। वैज्ञानिक डा बलवंत कुमार ने कहा कि तीन दिनों कुंभ में किसानों गोता लगाया है। गन्ना खासकर मिठास के लिए जान जाता है। लघु उद्योग को बढ़ावा देने के लिए इसे स्वरोजगार से जोड़ने की जरूरत है। प्रशिक्षण के फीडबैक देते हुए बगहा के किसान आनंद मोहन प्रसाद ने कहा प्रशिक्षण से कम लागत में बेहतर उत्पादन लेने की तकनीक से अवगत हुए। कोई भी टैलेंट परिचय का मोहताज नहीं होता वह मौलिक रूप से प्रखर होता है।

Rashtriya Sahara 025-02-02025

ग्रीन हाउस तकनीक एवं नियंत्रित परिस्थितिकी में किसी मौसम में हो सकता है मशरूम उत्पादन : डॉ दयाराम

प्रशिक्षण में शामिल प्रशिक्षु।

समस्तीपुर (एसएनबी)। डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविधालय स्थित एडवांस सेंटर फॉर मशरूम रिसर्च के परिसर में दर्जनों प्रतिभागियों को नवीनतम तकनीक से मशरूम उत्पादन का व्यवहारिक प्रशिक्षण दिया गया। इस अवसर पर मशरूम मैन डॉ दयाराम ने बताया कि मशरूम की खेती सबसे लाभदायक कृषि व्यवसाय में से एक है। जिसे आप कम खर्च और कम जगह के साथ शुरू कर कम से कम चार से छः गुना मुनाफा कमा सकते है। उन्होंने कहा कि भारत में मशरूम की खेती, धीरे-धीरे लोगों के आर्थिक स्वावलंबन का भरोसेमंद वैकल्पिक साधन के रूप में स्थापति हो चुका है। उन्होंने बताया कि सफेद बटन मशरूम की बाजार में सबसे अधिक मांग है, इसलिए सबसे अधिक किसान व्यावसायिक रूप से मशरूम की खेती के लिए इस किस्म का चयन करते है। बटन मशरूम कम तापमान वाले क्षेत्रों में अधिक उगाया जाता है। लेकिन अब ग्रीन हाउस तकनीक एवं नियंत्रित अवस्था के माध्यम से यह हर जगह उगाया जा सकता है। मशरूम आधारित स्वेत क्रान्ति के जनक मशरूम मैन नाम से सुविख्यात डॉ दयाराम ने इस दौरान प्रशिक्षुओं को बताया कि मशरूम प्रचूर मात्रा में कैल्शियम, प्रोटीन, फाईबर खनिज लवण, विटामिन बी, सी व डी आदि पोषक तत्व युक्त, गुणकारी, सहज सुपाच्य एवं, स्वादिष्ट सब्जी है। इसमें मौजूद फॉलिक एसिड शरीर में नयी रक्त कोशिकाओं के बनने में मदद करती है। इसका सेवन मनुष्य के रक्तचाप, हृदयरोग, में लाभकारी होता है। उन्होंने बताया कि बटन मशरूम को उगाने के लिए कम्पोस्ट की आवश्यकता होती है।

Rashtriaya Sahara 25-02-2025

किसानों को नई तकनीक से जोड़ने में केविके बिरौली की भूमिका उत्साहवर्धक : जयकृष्ण

पूसा (एसएनबी)। कृषि विज्ञान केन्द्र, बिरौली परिसर में भागलपुर से प्रधानमंत्री के द्वारा पी.एम. किसान सम्मान निधी योजना के 19वीं किस्त जारी करने एवं किसानों केलिए संबोधन का सीधा प्रसारण प्रदर्शित किया गया। इस अवसर पर. बिहार विधान परिषद् सदस्य डॉ. तरूण कुमार चौधरी ने कहा कि पी.एम. किसान सम्मान निधी योजना के द्वारा प्राप्त राशि से किसानो को खेती करने में काफी सहयोग मिलता है। वहीं भारत जैसे देश की अर्थव्यवस्था कृषि पर निर्भर करती है। इसलिए इस प्रकार की योजनाओं से किसानों को काफी प्रोत्साहन मिलता है। वहीं इस अवसर पर उपस्थित डॉ. रा.प्र.के...वि.वि प्रबंधन समिति सदस्य जय कृष्ण झा ने किसानों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि

किसानों को सम्मानित करते विधानपार्षद व अन्य।

आज के समय में किसानों को नई तकनिक अपनाने की आवश्यकता है। जिसमें कृषि विज्ञान केन्द्र अपनी भूमिका जिम्मेदारी पूर्वक निभा रहा है जो उत्साहवर्धक है। इस अवसर पर कृषि क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले पाँच किसानों को प्रशस्ति पत्र से सम्मानित कर प्रोत्साहित किया गया। इस दौरान सबसे पहले केवीके बिरौली के प्रधान डॉ. आर.के. तिवारी ने किसानों का स्वागत करते हुए सभी अतिथियों का पुष्पगुच्छ एवं अंगवस्त्र से स्वागत अभिनंदन किया। तदुपरांत संस्थान की ओर कृषि के क्षेत्र किए जाने वाले कार्यों से अवगत कराया। वहीं विषय वस्तु विशेषज्ञों ने अपने विषय क्षेत्र से जुडी जानकारी किसानों को दी। जिसके तहत डॉ. धीरू कुमार तिवारी ने आम बगान के प्रबंधन, ई. विनीता कश्यप ने फसल अवशेष प्रबंधन, भारती उपाध्याय ने प्राकृतिक खेती, सुमित कुमार सिंह ने मक्का एवं गेहूँ में कीट प्रबंधन, वर्षा कुमारी ने मोटे अनाजों का मूल्य संवर्धन, निशा रानी ने मृदा जाँच एवं इसके महत्व के बारे में किसानों को विस्तृत जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन ई0 विनीता कश्यप ने किया। मौके पर केविके बिरौली के सभी कर्मी एवं 200 से अधिक किसान उपस्थित थे।

मशरूम प्रसंस्करण पर एफपीओ मॉडल प्रशिक्षण की शुरुआत

कुपोषण और गरीबी मिटाने का विकल्प बना मशरूम : डॉ प्रसाद

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित एडवांस सेंटर ऑफ मशरूम रिसर्च के सभागार में मशरूम उत्पादन सह प्रसंस्करण पर एफपीओ मॉडल प्रशिक्षण की शुरुआत हुई. अध्यक्षता करते हुए मशरूम विभाग के प्रभारी वैज्ञानिक डा आरपी प्रसाद ने कहा कि बिहार राज्य से कुपोषण और गरीबी मिटाने के लिए मशरूम उत्पादन व्यवसाय विकल्प हो चुका है. इस व्यवसाय को गति देने की जरूरत है. इससे देश स्तर के उत्पादकता दर को बढ़ाया जा सके. देशभर में मशरूम खुद बिहार को प्रथम पायदान पर लाकर खड़ा कर दिया है. अब इसे संवारते हुए ग्रामीण परिवेश में बसर करने वाले लोगों के साथ एक मुहिम के रूप में व्यवसायीकरण करने की जरूरत है. मशरूम विशेषज्ञ डा दयाराम ने कहा कि मशरूम उत्पादन, उत्पादों का निर्माण एवं बीजों का निर्माण के दौर में व्यवसाय करने की आवश्यकता है. जिससे रोजगार के सृजन के साथ-साथ किसानों के आय में वृद्धि संभव हो सके. स्वास्थ्य शरीर के साथ आर्थिक स्थिति को समृद्ध बना कर ही विकसित भारत की परिकल्पना की जा सकती है. मशरूम उत्पादन को व्यवसायीकरण करने के लिए इससे बने उत्पाद अंचार, लड्डू, बिस्किट, समोसा, नमकीन, पकौड़ी आदि को राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय ऑनलाइन बाजार से जोड़ कर मार्केटिंग की दिशा एवं दशा में परिवर्तन लाया जा सकता है. प्रशिक्षण के इस सत्र में बीज निर्माण से संबंधित प्रयोगात्मक सत्र को भी बेहतर रूप से सजाया गया है. यह प्रशिक्षण भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद शिक्षा विभाग के माध्यम संचालित की जा रही है. इसमें जिले से कुल 30 किसानों ने अपना सहभागिता दे रहे है. संचालन मशरूम वैज्ञानिक डा सुधानंदनी ने किया. मौके पर विभाग से जुड़े कर्मियों में सुभाष कुमार, निशा, मुन्नी आदि मौजूद थे.

संबोधित करते वैज्ञानिक सुधानंदनी.

डायट में वाद-विवाद व पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित

पूसा. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान डायट के सभागार में वाद-विवाद एवं पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित की गयी. इसमें प्रथम स्थान पर चयनित पोस्टर को पटना में आयोजित होने वाली राज्यस्तरीय प्रदर्शनी के प्रतियोगिता में शामिल किया जाना है. मौके पर प्राचार्य डॉ आकांक्षा कुमारी, समन्वयक व्याख्याता यशवंत कुमार शर्मा, निर्णायक मंडली के रूप में प्रभारी डॉ अनिल कुमार पाठक, संयोग कुमार प्रेमी, सुरेश कुमार आदि मौजूद थे. कार्यक्रम में हुमाना के आशुतोष कुमार मिश्रा एवं अमितेश रंजन की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही. धन्यवाद ज्ञापन कुमार आदित्य ने किया.

प्रभात खबर
Wednesday, February 26, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67be0213845c7db3ce1b1b38

मछलीपालन व्यवसाय को सुरक्षित व संरक्षित करने पर जोर: मृत्युंजय

वैज्ञानिकों के साथ प्रतिभागी.

प्रतिनिधि, पूसा

डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के मात्स्यिकी महाविद्यालय सभागार में मत्स्यपालन एवं तालाब प्रबंधन पर छह दिवसीय प्रशिक्षण शुरू हुआ. मुख्य अतिथि कुलसचिव डॉ मृत्युंजय कुमार ने कहा कि मछलीपालन व्यवसाय को सुरक्षित एवं संरक्षित रखने की जरूरत है. मत्स्यपालन व्यवसाय में रोजगार की अपार संभावनाएं हैं. अध्यक्षता करते हुए अधिष्ठाता डा पीपी श्रीवास्तव ने कहा वैज्ञानिकी विधि से मछलीपालन करने पर बेहतर आय की प्राप्ति होती है. यह आवासीय प्रशिक्षण पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग बिहार सरकार के द्वारा प्रायोजित गोपालगंज जिला के लिए आयोजित किया गया है. उन्होंने बताया कि प्रशिक्षणार्थी मत्स्यपालन के लिए तकनीकी ज्ञान अर्जित कर अपने कौशल को मत्स्यपालन में अपनाकर बेहतर लाभ प्राप्त कर सकते हैं. प्रशिक्षण प्राप्त कर प्रशिक्षणार्थी अपने तकनीकी ज्ञान को अन्य मत्स्यपालकों तक भी पहुंचाने का भी संकल्प लें. प्रशिक्षुओं को कृषि के साथ-साथ मत्स्यपालन करने को प्रेरित किया. मौके पर गोपालगंज जिले के चयनित 30 प्रशिक्षणार्थियों सहित शिक्षक डॉ शिवेन्द्र कुमार, डॉ राजीव कुमार ब्रह्मचारी, डॉ सुजीत कुमार नायक, डॉ मोगलेकर एचएस, डॉ. मुकेश कुमार सिंह, डॉ अनिरुद्ध कुमार, डॉ. तनुश्री घोड़ई, रोशन कुमार राम, अधिष्ठाता के निजी सहायक डॉ. राजेश कुमार, विनोद कुमार, साजन कुमार भारती आदि मौजूद थे.

प्रभात खबर
Wednesday, February 26, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67be0213845c7db3ce1b1b38

भास्कर 26/2/25 पेज 19

तकनीकी रूप से मछली पालन कर लाभ प्राप्त कर सकते हैं : कुलसचिव

मत्स्यपालक किसानों के लिए मत्स्यपालन, तकनीक एवं प्रबंधन पर प्रशिक्षण

भास्कर न्यूज | पूसा

प्रशिक्षण में मौजूद मुख्य अतिथि व अन्य।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पुसा के अधीनस्थ मात्स्यकी महाविद्यालय ढोली के परिसर में पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग द्वारा गोपालगंज जिले से पहुंचे मत्स्यपालक किसानों के लिए आधुनिक मत्स्यपालन, तकनीक एवं प्रबंधन के विषय पर 6 दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि पुसा विवि के कुलसचिव डॉ.मृत्यंजय कुमार ने दीप प्रज्वलित कर किया। कहा की प्रशिक्षणार्थी मत्स्यपालन को तकनीकी रूप से करके बेहतर लाभ प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि मत्स्य पालन आमदनी का एक अच्छा जरिया है। उन्होंने कहा कि सभी प्रशिक्षणार्थी यहां से प्रशिक्षण प्राप्त कर अपने तकनीकी ज्ञान को अन्य मत्स्यपालकों तक भी पहुंचाने संकल्प लें। उन्होंने कहा कि आप सभी प्रशिक्षणार्थी कृषि के साथ-साथ मत्स्यपालन अवश्य करें तथा समाज में अन्य लोगों को भी मत्स्यपालन करने के लिए प्रेरित करें। मात्स्यिकी महाविद्यालय ढोली के अधिष्ठाता डॉ. प्रेम प्रकाश श्रीवास्तव ने मुख्य अतिथि समेत सभी अतिथियों का स्वागत किया। मौके पर गोपालगंज जिले के चयनित 30 प्रशिक्षणार्थियों के अलावे डॉ. शिवेन्द्र कुमार, डॉ. राजीव कुमार ब्रह्मचारी, डॉ. सुजीत कुमार नायक, डॉ.मोगलेकर एच.एस, डॉ. मुकेश कुमार सिंह, डॉ.अनिरुद्ध कुमार, डॉ. तनुश्री घोड़ई, रोशन कुमार राम, अधिष्ठाता के निजी सहायक डॉ.राजेश कुमार, विनोद कुमार, सांजन कुमार भारती आदि मौजूद थे।

लगातार बढ़ते तापमान का कहर, आम-लीची व रबी फसलों पर पड़ेगा असर

संस, जागरण • पूसा : बिहार में बदलते मौसम और असामान्य तापमान वृद्धि का सीधा प्रभाव रबी फसलों की उत्पादकता पर पड़ेगा। विशेष रूप से गेहूं, दलहन और सब्जियों की फसलें अधिक प्रभावित होंगी। किसानों को उचित सिंचाई प्रबंधन, जैविक उर्वरकों का उपयोग तथा समय पर कृषि सलाह का पालन करके इस चुनौती का सामना करना पड़ेगा। कृषि विज्ञानियों और किसानों के समन्वित प्रयास से उत्पादन हानि को कम किया जा सकता है। इससे कृषि क्षेत्र को सतत और लाभकारी बनाए रखा जा सकेगा। तापमान में

डा. एसके सिंह • जागरण

अप्रत्याशित वृद्धि आम और लीची दोनों के लिए भी चिंता का विषय है। किसानों को जल प्रबंधन, जैविक रोग कीट प्रबंधन व समुचित पोषक तत्व प्रबंधन जैसी रणनीतियों को अपनाकर इन प्रभावों को कम करने की दिशा में कार्य करना होगा। नुकसान व बचाव के संबंध में डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के प्लांट पैथोलॉजी एवं नेमेटोलाजी के वरीय विज्ञानी डा. एसके सिंह का कहना है कि बिहार की जलवायु मुख्यतः मानसूनी है। इसमें गर्मी, सर्दी व वर्षा ऋतु का स्पष्ट विभाजन देखा जाता है। हाल के वर्षों में जलवायु परिवर्तन के कारण इन ऋतुओं में अप्रत्याशित बदलाव हो रहे हैं। फरवरी 2025 में तापमान असामान्य रूप से 30 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया है। जबकि गेहूं, दलहन और सब्जियों की फसलें अभी पूर्ण रूप से तैयार नहीं हुई हैं। यदि यही स्थिति रही, तो फसलों की उत्पादकता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

फरवरी 2025 का दैनिक मौसम विश्लेषण : डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के कृषि मौसम विज्ञान प्रभाग द्वारा दर्ज किए गए मौसम डेटा के अनुसार 22 फरवरी को अधिकतम तापमान 29.8 डिग्री सेल्सियस रहा, जबकि 8 फरवरी को सबसे कम 23.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। 19 फरवरी के बाद से अधिकतम तापमान लगातार 28 डिग्री सेल्सियस के ऊपर बना रहा। अधिकतम तापमान में औसत वृद्धि पूरे महीने में अधिकतम तापमान औसतन 2-3 डिग्री सेल्सियस अधिक रहा। कुछ दिनों में यह 4-5 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ गया। न्यूनतम तापमानः 8 फरवरी को 6.5 डिग्री सेल्सियस, जबकि 21 फरवरी को 13.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। इस दौरान सामान्यतः न्यूनतम तापमान सामान्य से 1-2 डिग्री सेल्सियस कम रहा।

जलवायु परिवर्तन का रबी फसलों पर प्रभाव : रबी फसलें मुख्यतः ठंडे मौसम की होती हैं, जो अक्टूबर से मार्च तक उगाई जाती हैं। इस वर्ष असामान्य तापमान वृद्धि से इन प्रभावों को देखा जा सकते हैं।

Dainik Jagran 26-02-025

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 26 फरवरी तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार में अगले चार दिनों के अंदर आसमान में हल्के बादल छा सकते हैं। हालांकि मौसम शुष्क रहेगा। इस बीच अधिकतम व न्यूनतम तापमान में बढ़ोतरी होगी। इस अवधि में अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान में बढ़ोतरी होगी।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
26 फरवरी	28.0	11.2
27 फरवरी	28.4	11.2
दरभंगा		
26 फरवरी	28.4	11.2
27 फरवरी	28.4	12.0
पटना		
26 फरवरी	29	13.0
27 फरवरी	29	13.0

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 26-02-2025

नियुक्ति को ले राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री को भेजा पत्र

पूसा। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि में अनुकंपा पर नियुक्ति देने की मांग को लेकर हरपुर पूसा निवासी स्व.बिनोद कुमार राय की पत्नी चिंता देवी व पुत्र मिथिलेश कुमार ने कुलपति समेत विवि के कुलाध्यक्ष, राष्ट्रपति के ओएसडी, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, केन्द्रीय कृषि मंत्री समेत करीब ढ़ाई दर्जन उच्च अधिकारियों व जनप्रतिनिधियों को पत्र प्रेषित किया है। जिसमें दो-दो बार आंदोलन व उसके बाद वार्ता के बाबजूद अबतक नियुक्ति नहीं दिये जाने समेत कई आरोप विवि प्रबंधन पर लगाते हुए मांग को पूर्ण करने की अपील की गई है। मांग पूर्ण नहीं होने की स्थिति में चरणबद्ध आंदोलन की चेतावनी दी गई है। आरोप है कि विवि के ईख अनुसंधान संस्थान में कार्यरत बिनोद कुमार राय की असमायिक मौत चुनाव के दौरान 4 नवम्बर 2020 को हो गई। इसको लेकर जरूरी कागजात संस्थान में देने के बावजूद अबतक सिर्फ आश्वासन ही मिल सका है।

Hindustan 26-02-2025

प्रशिक्षण | केंद्रीय कृषि विवि में आधुनिक मत्स्यपालन तकनीक एवं प्रबंधन पर छह दिवसीय प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र को कुलसचिव ने किया संबोधित

मछली पालन और इससे जुड़े कार्य में अपार संभावनाएं

पूसा, निज संवाददाता। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विवि के कुलसचिव डॉ.मृत्युंजय कुमार ने कहा कि राज्य में मछली पालन व इससे जुड़े व्यवसाय की अपार संभावनाएं हैं। इसमें केन्द्र व राज्य सरकार हरसंभव सहयोग कर रहा है। विवि तकनीकी रूप से सबल बनाने की दिशा में लगातार पहल कर लोगों को स्वरोजगार के लिए प्रेरित कर रहा है। जरूरत है इसके तकनीकी पहलुओं का ज्ञान लेकर समूह बनाकर कार्य करने एवं अन्य को भी प्रोत्साहित करने की। वे मंगलवार को विवि के मत्स्यकी महाविद्यालय के सभागार में प्रशिक्षुओं को संबोधित कर रहे थे। मौका था राज्य सरकार के पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग से प्रायोजित आधुनिक मत्स्यपालन तकनीकियों एवं प्रबंधन पर छह दिवसीय प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र का। उन्होंने कहा कि बाजार मांग के अनुरूप मछली पालन व उसके उत्पादो का निर्माण कर बेहतर मार्केटिंग की जा सकती है। महाविद्यालय के डीन डॉ.पीपी श्रीवास्तव ने प्रशिक्षण के तकनीकी, व्यवसायिक व सरकार की भूमिका पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि महाविद्यालय मछली पालन के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। उन्होंने उत्पादन से लेकर मार्केटिंग के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की। मौके पर डॉ. शिवेन्द्र कुमार, डॉ. राजीव कुमार ब्रह्मचारी, डॉ.सुजीत कुमार नायक, डॉ मोगलेकर एचएस, डॉ.मुकेश कुमार सिंह, डॉ.अनिरुद्ध कुमार, डॉ.तनुश्री घोड़ई आदि मौजूद थे।

मंगलवार को मत्स्यकी महाविद्यालय परिसर में प्रशिक्षुओं के साथ कुलसचिव, डीन व अन्य। • हिन्दुस्तान

Hindustan 26-02-2025

मछलीपालन व्यवसाय को सुरक्षित एवं संरक्षित करने की जरूरत : कुलसचिव

समस्तीपुर/पूसा (एसएनबी)। डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय .षि विश्वविद्यालय मत्स्यिकी महाविद्यालय के सभागार में मत्स्य पालन एवं तालाबों का प्रबंधन विषय पर छह दिवसीय प्रशिक्षण का शुभारंभ हुआ। स्वागत व उद्घाटन की औपचारिकता के बाद मुख्य अतिथि विवि के कुलसचिव डॉ मृत्युंजय कुमार ने कहा कि मत्स्य पालन व्यवसाय में रोजगार की अपार संभावनाएं है इसलिए मछलीपालन व्यवसाय को सुरक्षित एवं संरक्षित करने की जरूरत है। प्रशिक्षण की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ पीपी श्रीवास्तव ने कहा वैज्ञानिक विधि से मछली पालन करने पर बेहतर आय की प्राप्ति होती है। पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग, बिहार सरकार के द्वारा प्रायोजित इस आवासीय प्रशिक्षण में गोपालगंज जिले के चयनित 30 किसान हिस्सा ले रहे है। अपने संबोधन में कुलसचिव डॉ मृत्युंजय कुमार एवं अधिष्ठाता डॉ प्रेम प्रकाश श्रीवास्तव ने संयुक्त रूप से विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. पुन्यव्रत सुविमलेन्दु पाण्डेय एवं पशु व मत्स्य संसाधन विभाग, बिहार, सरकार का मत्स्य पालकों के लिए तकनीकी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजन पर आभार व्यक्त किया। इस दौरान वक्ताओं ने प्रशिक्षणार्थियों को मत्स्य पालन के लिए प्रेरित किया। उन्होंने बताया कि प्रशिक्षणार्थी मत्स्य पालन के लिए तकनीकी ज्ञान अर्जित कर अपने कौशल को मत्स्य पालन में अपनाकर बेहतर लाभ प्राप्त कर सकते है। उन्होंने सभी प्रशिक्षणार्थी से आह्वान किया की वे .षि के साथ-साथ मत्स्य पालन भी करें व समाज में अन्य लोगों को भी मत्स्य पालन हेतु प्रेरित करें। मौके पर डॉ शिवेन्द्र कुमार, डॉ राजीव कुमार ब्रह्मचारी, डॉ सुजीत कुमार नायक, डॉ मोगलेकर एचएस, डॉ. मुकेश कुमार सिंह, डॉ अनिरुद्ध कुमार, डॉ. तनुश्री घोड़ई, रोशन कुमार राम, अधिष्ठाता के निजी सहायक डॉ.राजेश कुमार, विनोद कुमार, साजन कुमार भारती आदि मौजूद थे।

वैज्ञानिकों के साथ प्रतिभागी।

Rashtriya Sahara 26-02-2025

कुपोषण और गरीबी मिटाने का मजबूत विकल्प है मशरूम उत्पादन : डॉ आरपी प्रसाद

समस्तीपुर/पूसा (एसएनबी)। बिहार से कुपोषण और गरीबी मिटाने के लिए मशरूम उत्पादन व्यवसाय एक मजबूत एवं विश्वसनीय विकल्प के रूप में स्थापित हो चुका है। बस अब इस व्यवसाय को गति देने की जरूरत है। जिससे देश स्तर के उत्पादकता दर को बढ़ाया जा सके। डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय .षि विश्वविद्यालय स्थित एडवांस सेंटर ऑफ मशरूम रिसर्च के सभागार में मशरूम उत्पादन सह प्रसंस्करण विषय पर एफपीओ मॉडल प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए मशरूम विभाग के प्रभारी वैज्ञानिक डॉ आरपी प्रसाद ने उक्त बातें अपने संबोधन में कही। उन्होंने कहा कि देश भर में मशरूम उत्पादन के क्षेत्र में बिहार को हमने प्रथम पायदान पर लाकर खडा कर दिया है। अब इसे ग्रामीण परिवेश में बसर करने वाले लोगों के साथ मिल कर एक मुहिम के रूप में इसके व्यवसायीकरण करने की जरूरत है। वहीं मशरूम मैन नाम से विख्यात मशरूम विशेषज्ञ डॉ दयाराम ने कहा कि मशरूम उत्पादन, उत्पादों का निर्माण एवं बीजों का निर्माण के साथ-साथ इनको समय से समुचित बाजार तक पहुंचाने और इसके समुचित विपणन की आवश्यकता है। जिससे रोजगार के सृजन के साथ साथ किसानों के आय में वृद्धि संभव हो सके। डॉ दयाराम ने कहा कि स्वस्थ एवं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर स्वावलंबी समाज के निर्माण के बाद ही विकसित भारत की परिकल्पना की जा सकती है। इसमें मशरूम बडी और अहम भूमिका निभा सकता है। मशरूम मैन ने बताया कि मशरूम उत्पादन को व्यवसायीकरण करने के लिए इससे बने उत्पाद अँचार, लड्डू, बिस्किट, समोसा, नमकीन एवं पकौड़ा आदि को राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय ऑनलाइन बाजार से जोड़कर मार्केटिंग की दिशा एवं दशा में परिवर्तन लाया जा सकता है। प्रशिक्षण के इस सत्र में बीज निर्माण से संबंधित प्रयोगात्मक सत्र को भी बेहतर रूप से सजाया गया है। भारतीय .षि अनुसंधान परिषद शिक्षा विभाग के माध्यम संचालित इस प्रशिक्षण में जिले से कुल 30 चयनित किसान हिस्सा ले रहे है। कार्यक्रम का संचालन मशरूम वैज्ञानिक डा सुधानंदनी ने की। मौके पर विभाग से जुड़े कर्मियों में सुभाष कुमार, निशा, मुन्नी आदि मौजूद थे।

संबोधित करते वैज्ञानिक।

Rashtriya Sahara 26-02-2025

मशरूम की खेती में नमी व तापमान समरूपता की जरूरत : डा दयाराम

प्रतिनिधि, पूसा

डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थित एडवांस सेंटर ऑफ मशरूम रिसर्च के सभागार में चल रहे मशरूम उत्पादन सह प्रसंस्करण विषय पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण का प्रमाण-पत्र वितरण के साथ समापन हो गया. अध्यक्षता करते हुए मशरूम विशेषज्ञ डा दयाराम ने कहा कि मशरूम की खेती के लिए वानस्पतिक प्रवर्धन तकनीक का इस्तेमाल किया जाता है. इस तकनीक में पहले शुद्ध कवक जाल तैयार किया जाता है. फिर उसे उबले हुए दानों पर उगाया जाता है.

इस तरह तैयार संवर्धन को मशरूम बीज या स्पॉन कहते हैं. मशरूम की खेती के लिए कंपोस्ट की भी जरूरत होती है. इस तरह तैयार किये गये संवर्धन को मशरूम बीज या स्पॉन कहते हैं. मशरूम उत्पादन के लिए कंपोस्ट तैयार करने के लिए समुचित वैज्ञानिकी विधि का सहारा लेते हुए भूसा, गेहूं का चापड़, यूरिया, और जिप्सम को मिलाकर सड़ा देना होता है. उसके बाद मशरूम उत्पादन के लिए तैयार की गई शेड या झोपड़ी में बनी स्लैब या बेड पर पॉलीथिन शीट रख दिया जाता है. इसके बाद कंपोस्ट खाद की परत एक खूबसूरत कतार में कंपोस्ट खाद के ऊपर मशरूम के बीज या स्पॉन को मिला देंगे. स्पॉन की बीजाई करने के बाद, पॉलीथिन शीट से ढक देना जरूरी होता है. मशरूम की खेती में नमी, तापमान और हवा का आदान-प्रदान सही होना चाहिए. संचालन वैज्ञानिक डा सुधानंदनी ने किया. धन्यवाद ज्ञापन केंद्र प्रभारी डॉ आरपी प्रसाद ने किया. मौके पर विभाग से जुड़े वैज्ञानिक डा फूलचंद, डा आरपीके राय, सुभाष कुमार, मुन्नी, निशा आदि मौजूद थे.

प्रमाण-पत्र लेते प्रतिभागी.

प्रभात खबर
Thursday, February 27, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67bf656f9c497013ff90d49e

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 28 फरवरी तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार में अगले चार दिनों के अंदर आसमान में हल्के बादल छा सकते हैं। हालांकि मौसम शुष्क रहेगा। इस बीच अधिकतम व न्यूनतम तापमान में बढ़ोतरी होगी। इस अवधि में अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान में बढ़ोतरी होगी।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
27 फरवरी	28.0	12.2
28 फरवरी	28.0	13.0
दरभंगा		
27 फरवरी	28.4	13.0
28 फरवरी	29.0	13.0
पटना		
27 फरवरी	29.6	14.0
28 फरवरी	29.6	14.0

डिग्री सेल्सियस में

Dainik Jagran 27-02-2025

शिटाके मशरूम कैंसर कीटाणु से लड़ने में सक्षम

पूसा . शिटाके मशरूम स्वास्थ्यवर्धक होने के साथ कैंसर, एड्स, ट्यूमर जैसे घातक रोगों को नियंत्रित करने में उपयोगी है. जापान में प्रतिवर्ष 700 मिलियन डॉलर की दवा विभिन्न मशरूमों से तैयार की जाती है. इसमें प्रमुख शिटाके है. यह बात मशरूम वैज्ञानिक डा. दयाराम ने कही. उन्होंने बताया कि इसके बीज तैयार करने के लिए ज्वार या गेहूं को आधा घंटा उबालें. पानी निधारकर 6 किलो सूखे उबले बीज में 600 ग्राम बुरादा 300 ग्राम चोकर मिलाकर बोतल में भरकर 2 घंटे स्टैरिलाइज करें.

ठंडा करने जीवाणुरहित दशा में बिजाई करें. 25 डिग्री पर रखें. इसकी खेती के लिये उत्तम सबस्ट्रेट चौड़ी पत्ती वाले लकड़ी का बुरादा ही है. वैसे

लैब में शिटाके मशरूम का प्रत्यक्षण करते किसान .

इसकी खेती गेहूं के भूसे, धान की कट्टी, मक्का के नेढ़े व लीची के पत्ते पर व्यवसायिक स्तर पर की जा सकती है. इसकी बिक्री करने पर अच्छी आमदनी प्राप्त हो सकती है. डा राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय से सेवानिवृत मशरूम वैज्ञानिक सह कई राष्ट्रीय पुरस्कार से नवाजे जा चुके मशरूम विशेषज्ञ डा दयाराम ने बताया कि शिटाके मशरूम कैंसर, हृदय रोग के अलावा दर्जनों असाध्य रोगों में वरदान साबित हो रहा है.

प्रभात खबर
Friday, February 28, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67c0b856f200ed903a009867

विवि के 21 छात्र-छात्राओं का कैंपस प्लेसमेंट

प्रतिनिधि, पूसा

डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय ने वर्ष 2025 में उत्तीर्ण होने वाले छात्रों को देश की सुप्रसिद्ध कम्पनियों प्लेसमेंट कराने की दिशा में पहल शुरू कर दी है. देश स्तर के ब्रांडेड कंपनियों में रैलिस इंडिया लिमिटेड, पारादीप फास्फेट लिमिटेड, एस्कोर्ट कुबोटा लिमिटेड एवं प्रदान में गत माह एक साथ 21 छात्रों को कैंपस प्लेसमेंट कराने में सफलता हासिल की है. प्लेसमेंट सेल के नियंत्री पदाधिकारी डा. रमण त्रिवेदी ने बताया कि विश्वविद्यालय के विभिन्न महाविद्यालयों से 21 छात्रों का चयन हुआ है.

चयनित होने वाले छात्रों में बी-टेक (कृषि अभि) से 10 छात्र, बीएससी (कृषि) से 8 छात्र, बीएफएससी (मत्की) से 2 छात्र एवं एमबीए (एग्री-बिजनेस) के 1 छात्र शामिल हैं. बताया कि इस वर्ष प्रदान ने हमारे छात्रों को सबसे अधिक रु. 8.68 लाख प्रति वर्ष का पैकेज दिया है.

संबोधित करते डीएसडब्ल्यू डा रमण त्रिवेदी .

सभागार में मौजूद अभ्यर्थी .

निदेशक डा त्रिवेदी ने बताया कि विश्वविद्यालय के स्नातक एवं स्नातकोत्तर के छात्र जो वर्ष 2025 में पास हो रहे हैं, उनके लिए देश की विभिन्न सुप्रसिद्ध कंपनियों में कैंपस प्लेसमेंट के लिए आमंत्रण भेजा जा चुका है. इनमें से कुछ कंपनियों की वर्तमान में चयन की प्रक्रिया अलग-अलग चरणों में चल रही है. जिसका फाइनल रिजल्ट आना अभी बाकी है. विश्वविद्यालय के कुलपति डा पुण्यवत्त सुविमलेन्दु पाण्डेय ने प्रसन्नता जाहिर करते हुए चयनित छात्रों को शुभकामना दी.

प्रभात खबर
Friday, February 28, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67c0b856f200ed903a00983d

मछलीपालन महिलाओं के लिए वरदान : डॉ श्रीवास्तव

प्रतिभागियों के साथ वैज्ञानिक.

पूसा . डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ मत्स्यिकी महाविद्यालय के सभागार में राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड हैदराबाद तेलंगाना द्वारा प्रायोजित जिले के मत्स्यपालकों के लिए तीन दिवसीय मीठे पानी की सजावटी मछलियों का प्रजनन और पालन विषय पर महिलाओं के लिए मछली उत्पाद तैयार करने के लिए प्रशिक्षण शुरू हुआ. अध्यक्षता करते हुए अधिष्ठाता डॉ प्रेम प्रकाश श्रीवास्तव ने कहा कि मछली पालन व्यवसाय अनुसूचित जाति की महिलाओं के लिए बदलते परिवेश में वरदान साबित हो रहा है. राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड हैदराबाद तेलंगाना के मत्स्यपालकों का दोनों प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजन मात्स्यिकी महाविद्यालय में कराने के लिए आभार व्यक्त किया.

अधिष्ठाता डा श्रीवास्तव ने प्रशिक्षणार्थियों को मत्स्यपालन के लिए प्रेरित किया. मौके पर समस्तीपुर जिले के चयनित दोनों प्रशिक्षण कार्यक्रम के 25-25 प्रशिक्षणार्थियों के साथ मत्स्यिकी महाविद्यालय के शिक्षक डॉ शिवेन्द्र कुमार, डॉ. राजीव कुमार ब्रह्मचारी, डॉ सुजीत कुमार नायक, डॉ मुकेश कुमार सिंह, प्रशिक्षण संयोजिका डॉ तनुश्री घोड़ई, संयोजक रोशन कुमार राम, अधिष्ठाता के निजी सहायक डॉ राजेश कुमार, संजय कुमार यादव, विनोद कुमार, साजन कुमार भारती आदि मौजूद थे. प्रशिक्षण संयोजिका डॉ तनुश्री घोड़ई तथा प्रशिक्षण संयोजक रोशन कुमार राम ने मत्स्यिकी महाविद्यालय के संबंधित प्रयोगशालाओं में प्रशिक्षणार्थियों को व्यावहारिक एवं क्रियाशील प्रशिक्षण दिया.

प्रभात खबर
Friday, February 28, 2025
Samstipur
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67c0b856f200ed903a00983d

पूसा विवि के 21 छात्रों का कैंपस सलेक्शन

दैनिक जागरण - 28/01/25 P-15

छात्रों का सलेक्शन करते कंपनी के अधिकारी।

पूसा | डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के प्लेसमेंट सेल ने साल के शुरुआत में ही विवि से पास हुए छात्रों का कैंपस सलेक्शन काफी तादात में देश के विभिन्न कंपनियों में कराकर एक नया रेकॉर्ड बना दिया है।

साल 2025 के जनवरी माह के दौरान ही विवि के विभिन्न संकायों से पास हुए एक साथ 21 छात्रों का चयन देश के सुप्रसिद्ध कंपनियों जैसे रैलीस इंडिया लिमिटेड, पारादीप फास्फेट लिमिटेड, एस्कोर्ट कुबोटा लिमिटेड सहित अन्य कंपनियों में किया गया है। छात्रों के हुए इस कैंपस सलेक्शन से विवि में काफी हर्ष का माहौल बना हुआ है। प्लेसमेंट सेल के नियंत्री पदाधिकारी डॉ. रमन कुमार त्रिवेदी ने बताया कि विवि के विभिन्न महाविद्यालयों से कुल 21 छात्रों का चयन हुआ है। चयनित होने वाले छात्रों में कृषि अभियंत्रण से 10 छात्र, बीएससी कृषि से 8 छात्र, बीएफसी मत्स्यकी से 2 छात्र एवं एमबीए एग्रीबिजनेस से 1 छात्र शामिल हैं।

भास्कर 28/2/25 पेज 5

अनुसूचित जाति की महिलाओं को स्वरोजगार से जोड़ा गया

पूसा| डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विवि पूसा के अधीनस्थ मतस्यकी महाविद्यालय ढोली के परिसर में मत्स्यपालकों के लिए मीठे पानी की सजावटी मछलियों का प्रजनन और पालन के विषय पर तीन दिवसीय व्यवहारिक व क्रियाशील प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन मतस्यकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता सह मुख्य अतिथि डॉ. प्रेम प्रकाश श्रीवास्तव ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर डॉ. प्रेम प्रकाश श्रीवास्तव ने कहा कि राष्ट्रीय मतस्यकी विकास बोर्ड हैदराबाद तेलंगाना द्वारा इस प्रशिक्षण का आयोजन खासकर महिलाओं को समृद्ध बनाने के उद्देश्य से समस्तीपुर जिले से जुड़ी अनुसूचित जाति की महिलाओं के लिए किया गया हैं। महिला प्रशिक्षणार्थी इस प्रशिक्षण के माध्यम से मछली उत्पादन करने के साथ-साथ मछलियों से विभिन्न मूल्य वर्धित उत्पाद बनाकर उसका कारोबार करते हुए अपने आप को स्वावलंबी बना सकती हैं। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षणार्थियों को तीन दिनों के प्रशिक्षण के दौरान खासकर सजावटी मछलियों के पालन का प्रशिक्षण दिया गया।

रबी फसल पर तापमान का कहर, घटेगी पैदावार

आज का मौसम

डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के मौसम विभाग द्वारा 28 फरवरी तक के लिए जारी मौसम पूर्वानुमान में बताया गया है कि उत्तर बिहार में अगले चार दिनों के अंदर आसमान में हल्के बादल छा सकते हैं। हालांकि मौसम शुष्क रहेगा। इस बीच अधिकतम व न्यूनतम तापमान में बढ़ोतरी होगी। इस अवधि में अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान में बढ़ोतरी होगी।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
समस्तीपुर		
28 फरवरी	29.0	11.8
29 फरवरी	29.0	12.0
दरभंगा		
28 फरवरी	29.0	12.0
29 फरवरी	29.8	12.0
पटना		
28 फरवरी	30	13.0
29 फरवरी	30	13.0

डिग्री सेल्सियस में

- फरवरी में तापमान सामान्य से अधिक रहने के कारण किसानों को हो रही परेशानी
- मौसम में बदलाव से सब्जी के बीज भी अंकुरित नहीं हो पा रहे, गेहूं की फसल अधिक प्रभावित

संस. जागरण, पूसा : उत्तर बिहार के जिलों में फरवरी के प्रारंभ से ही तापमान में हो रही उतार-चढ़ाव एवं सामान्य से अधिक रहने के कारण रबी की मुख्य फसल गेहूं की फसल अधिक तापमान के कारण प्रभावित हो रही है। जिससे किसान भी काफी परेशान है। युवा से बुजुर्ग किसानों तक का बताना है कि मौसम में इतनी जल्दी बदलाव नहीं देखा गया था और इसका प्रभाव सीधे तौर पर कृषि पर पड़ रहा है। गेहूं सहित अन्य सभी फसल बढ़ते तापमान से कराह रहा हैं। इस मौसम में होने वाले सब्जी के बीज भी अंकुरित नहीं हो पा रहे हैं। वहीं खेतों में नमी नहीं रहने के कारण दलहन की फसल मूंग की बुआई भी प्रभावित होने लगी है। डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के डा. ए सत्तार ने बताया कि विलंब से बुआई किए गए गेहूं को यह तापमान प्रभावित करेगी। गेहूं की 1 से 15 नवंबर तक की गई बुआई अधिक प्रभावित नहीं होगी। डा. सत्तार ने बताया कि पिछले कई वर्षों से रबी फसल में तापमान में उतार चढ़ाव पाया गया है। इस वर्ष भी फरवरी में ही बिहार के कई जिलों में 29 से 32 डिग्री तापमान हो गई। जो सामान्य से तीन से पांच डिग्री अधिक है। वहीं अगले चार-पांच दिनों में दो से तीन डिग्री अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान दोनों की बढ़ाने की संभावना है। तापमान की बढ़ोतरी से आम, लीची सहित गर्म सब्जियों पर भी इसका असर पड़ेगा। मौसम वैज्ञानिक ने किसानों को सलाह दिया कि जलवायु अनुकूल एवं मौसम आधारित खेती करें।

कड़क धूप के कारण नष्ट हो रही सब्जी की फसल : किसान मोहन कुमार ने बताया कि इतनी कड़क धूप के कारण सब्जी की फसल नष्ट हो रही है। उतना ही कीड़े मकोड़े का प्रकोप बढ़ता जा रहा है। जगदीशपुर निवासी किसान नीलमणि राय ने बताया कि वैज्ञानिक समय से बुवाई करने की सलाह देते हैं। लेकिन उसे वक्त मजबूरन खेत खाली नहीं रहने के कारण विलंब हो जाती है। ऐसी स्थिति में लगातार फसले विगत दो-चार वर्षो से प्रभावित हो रही है। महम्मदपुर देवपार के किसान पंकज कुमार उर्फ गुड्डू कुमार का बताना है कि मौसम अगर साथ नहीं दे तो किसी भी फसल की उत्पादकता अच्छी नहीं होगी। सब्जी में लगातार सिंचाई के बावजूद भी फूल लगते हैं लेकिन सूख जाते हैं। इतना ही नहीं कीड़े मकोड़े का भी प्रभाव बढ़ता जा रहा है। पहले एक स्प्रे करने पर 15 दिन किसान स्थिर रहते थे। लेकिन अब हर एक दो से तीन दिन पर ही फसल पर अगर स्प्रे नहीं किया जाए तो सब्जी की खेती भी नहीं हो पाएगी।

Dainik Jagran 28-2-2025

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के विभिन्न महाविद्यालयों से इक्कीस छात्रों का हुआ प्लेसमेंट

पूसा (एसएनबी)। डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा समस्तीपुर के विभिन्न महाविद्यालयों से वर्ष 2025 में उत्तीर्ण होने वाले छात्रों का कैपस प्लेसमेंट किया गया जिसमें देश के नामचीन कंम्पनी रैलिस इंडिया लिमिटेड, पारादीप फास्फेट लिमिटेड, एस्कोर्ट कुबोटा लिमिटेड एवं प्रदान कंम्पनियों ने छात्रों का चयन किया है। जिसको लेकर विवि के कुलपति डॉ पीएस पांडेय ने प्रसन्नता जाहिर करते हुए चयनित छात्रों को शुभकामनाएं व आशीर्वाद दिया।

छात्र-छात्राओं को संबोधित करते पदाधिकारी।

इससे जुड़ी जानकारी देते हुए प्लेसमेंट सेल के नियंत्री पदाधिकारी डॉ. रमण कुमार त्रिवेदी ने कहा कि विश्वविद्यालय के विभिन्न महाविद्यालयों से कुल 21 छात्रों का चयन किया गया है। जिनमें बी-टेक कृषि अभियंत्रण महाविद्यालय से 10, बी.एस.सी (कृषि) के 8, बी.एफ.एस.सी (मत्स्यकी) के 2 एवं एम.बी.ए. एग्री-बिजनेस के 1 छात्र शामिल है।

Rashtriya Sahara 28-02-2025

मछली पालन व्यवसाय अनुसूचित जाति की महिलाओं के लिए वरदान : डॉ पीपी श्रीवास्तव

पूसा (एसएनबी)। डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अधीनस्थ मात्स्यिकी महाविधालय के सभागार में विवि के कुलपति डॉ सुविमलेन्दु पाण्डेय के विशेष प्रयास से व उनके दिशा निर्देशन में राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड, हैदराबाद, तेलंगाना द्वारा प्रायोजित समस्तीपुर जिला के महिला मत्स्य पालकों के लिए आयोजित मीठे पानी की सजावटी मछलियों के प्रजनन व पालन एवं महिलाओं के लिए मछली उत्पाद तैयार करने पर आधारित तीन दिवसीय प्रशिक्षण का शुभारंभ हुआ। जिसकी अध्यक्षता करते हुए अधिष्ठाता डॉ प्रेम प्रकाश श्रीवास्तव ने कहा कि तेजी से बदलते परिवेश में मछली पालन व्यवसाय अनुसूचित जाति की महिलाओं के लिए वरदान साबित हो रहा है। इस प्रशिक्षण के आयोजन केलिए राष्ट्रीय मात्स्यिकी विकास बोर्ड, हैदराबाद, तेलंगाना का मत्स्य पालकों का प्रशिक्षण मात्स्यिकी महाविद्यालय में कराने के लिए आभार व्यक्त किया। अपने संबोधन में अधिष्ठाता डॉ श्रीवास्तव ने प्रशिक्षणार्थियों को मत्स्य पालन के लिए प्रेरित किया। इस दौरान उन्होंने बताया कि अनुसूचित जाति की महिला प्रशिक्षणार्थी मछली से बनने वाले विभिन्न मूल्य वर्धित उत्पाद का तकनीकी ज्ञान प्राप्त कर एवं साथ ही सजावटी मछलियों के प्रजनन, पालन का तकनीकी और क्रियाशील प्रशिक्षण व कौशल एवं अपने मेहनत से स्वरोजगार अपनाकर बेहतर लाभ प्राप्त कर सकते है। मत्स्य पालन व्यवसाय का क्षेत्र बहुत ही व्यापक व आमदनी का अच्छा स्रोत है। प्रशिक्षण प्राप्त कर सभी प्रशिक्षणार्थी अपने तकनीकी ज्ञान को अन्य मत्स्य पालक बन्धुओं तक भी पहुंचाने का भी संकल्प लें तथा सभी प्रशिक्षणार्थो से आह्वान किया की मत्स्य पालन कार्य अवश्य करें व समाज में अन्य लोगों को भी मत्स्य पालन के लिए प्रेरित करें।

Rashtriya Sahara 28-02-2025